धर्मायण

मूल्य : 45 रुपये
अंक 130
वैशाख,
2080 वि. सं.

(धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना की पत्रिका)

रामलीला विशेषांक

रामनवमी के उपलक्ष्य में नवरात्र प्रतिपदा के दिन से प्रारम्भ नवाह रामचरितमानस पाठ

रामनवमी के उपलक्ष्य में जन्मकाल में प्रकटे प्रभु श्रीराम

धर्मायण

Title Code–BIHHIN00719

आलेख –सूची

1. रामलीला : लोकसंग्रह की महत्त्वपूर्ण विधा		
	—सम्पादकीय	3
2. नाट्य-परम्परा और रामलीला	— डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू	10
3. उत्कलीय परम्परा में रामलीला	— डॉ. ममता मिश्र 'दाश'	19
4. श्रीरामलीला का वैश्विक स्वरूप	— श्री महेश प्रसाद पाठक	27
5. रामलीला का विधि-विधान	— सन्त सरयू दास	33
6. प्रेमचंद कृत 'रामलीला' और 'राम-चर्चा'		
	— डॉ. नागेन्द्र कुमार शर्मा	39
7. गाँव की स्मृतिशेष रामलीला	— श्रीमती रंजू मिश्रा	45
8. रामभक्ति को जीवन्त करती रामलीलाएँ		
	— डॉ. विनोद बब्बर	51
9. 'मानस' में मानव जीवन की सार्थकता		
	— डॉ. कवीन्द्र नारायण श्रीवास्तव	57
10. रामकथा की घटनाओं की तिथियाँ		
	— आचार्य सीताराम चतुर्वेदी	64
11. 19वीं शती की विवाह-विधि	—रीतिरत्नाकर से संकलित	73
12. मन्दिर समाचार, (मार्च, 2023ई.)		76
13. व्रत-पर्व, वैशाख, 2079-2080 वि. सं.		79
14. रामावत संगत से जुड़ें		80

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखक के हैं। इनसे सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हम प्रबुद्ध रचनाकारों की अप्रकाशित, मौलिक एवं शोधपरक रचनाओं का स्वागत करते हैं। रचनाकारों से निवेदन है कि सन्दर्भ-संकेत अवश्य दें।

धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना की पत्रिका

अंक 130

वैशाख, 2080 वि. सं.

7 अप्रैल-5 मई, 2023ई.

सम्पादक

भवनाथ झा

पत्राचार :

महावीर मन्दिर,
पटना रेलवे जंक्शन के सामने
पटना—800001, बिहार
फोन: 0612—2223798
मोबाइल: 9334468400

E–mail:
dharmayanhindi@gmail.com

Website:
www.mahavirmandirpatna.org/dharmayan/

Whatsapp:
9334468400

मूल्य : 45 रुपये

पाठकीय प्रतिक्रिया

(अंक संख्या 129, चैत्र, 2080 वि.सं.

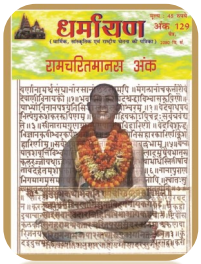

धर्मायण का चैत्रमासीय 'रामचरितमानस अंक' अद्वितीय, अद्भुत रूप से समसामयिक एवं प्रासंगिक है।

सरस्वती के वरद पुत्र गुप्तजी के अनुसार

"राम तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य है /
कोई कवि बन जाए सहज संभाव्य है"

-राम का जीवन स्वतः काव्यमय है। समस्त प्राच्य एवं पाश्चात्त्य, प्राचीन व अर्वाचीन काव्यालोचनाओं यथा

'पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति।'
(महर्षि वेद व्यास),

'मृदु ललित पदाढ्यं गूढ़ शब्दार्थहीनं
जनपद सुखबोध्यं संधि संधान युक्तम्ष
बहुरस कृत मार्गं युक्तिमन्नृत्य योज्यं
तद्भवति शुभकाव्यं नाटक प्रेक्षकाणाम्' (भरत मुनि)
से लेकर,

'Our sweetest songs are those that tell of saddest tale/thought' (Shelley) अथवा ' Poetry is at the bottom the criticism of life.' (Mathew Arnold)

हो या 'हृदय की मुक्ति साधना के लिए वाणि द्वारा किया गया शब्द विधान' (आचार्य रामचंद्र शुक्ल) हो, सर्वत्र श्री रघुनंदन राम का जीवन प्रमुखता से प्रतिबिंबित है। यही कारण है कि परवर्ती असंख्य काव्यों अथवा साहित्यिक रचनाओं का प्रधान उपजीव्य रामायण महाकाव्य ही रहा है।

भगवान राघवेंद्र के जीवनवृत्त से संबंधित सहस्रों रामायण, पौराणिक उपाख्यान, काव्य, नाटक, कथाएँ, लोक कथाएँ एवं पारम्परिक जनश्रुतियाँ विद्यमान हैं और सर्वत्र कथानकों एवं प्रसंगों में पर्याप्त विविधता दृष्टिगोचर होती है। किसी भी कथा अथवा घटनाक्रम की प्रामाणिकता ढूँढना अरण्यरोदन सदृश है। ऐसी स्थिति में दशरथ नंदन राम के पावन चरित के विशाल कलेवर— रामचरितमानस को पत्रिका के एक मासिक अंक में समेटने का भगीरथ प्रयास एवं कौशल संपादकजी की विराट् साहित्यिक तथा संपादकीय मेधा से ही संभव है।

श्री भवनाथजी ने अपने सारगर्भित एवं कसे हुए सम्पादकीय में विषय का ज्ञान-संवलित परिचय दिया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में— 'ढोल गँवार शूद्र/क्षुद्र पशु नारि... ' या 'पूजिय विप्र शील गुन हीना....' आदि प्रसंग अत्यंत विवादास्पद विषय रहे हैं, जिस पर सुधी लेखकों क्रमशः डॉ. जितेंद्र कुमार सिंह 'संजय' एवं डॉ. राधा नंदन सिंह ने बड़े मीमांसात्मक आलेख प्रस्तुत किए हैं।

मानस में विभिन्न घटकों के बीच तुलसी की समन्वय -साधना पर श्री महेश प्रसाद पाठकजी का वैदुष्यपूर्ण आलेख हृदयंगम योग्य है,साथ ही लेखक ने रामचरित की सार्वकालिकता और सार्वदेशिकता पर भी पर्याप्त मंथन किया है। डॉ. श्याम सुंदर घोष के आलेख में 'रामायण इन पार्लियामेंट' पुस्तक के हवाले से

शेष पृ. 56 पर

आपको यह अंक कैसा लगा? इसकी सूचना हमें दें। पाठकीय प्रतिक्रियाएँ आमन्त्रित हैं। इसे हमारे ईमेल dharmayanhindi@gmail.com पर अथवा ह्वाट्सएप सं.–+91 9334468400 पर भेज सकते हैं।

'धर्मायण' का अग्रिम अंक **वृक्ष-उपासना विशेषांक** के रूप में प्रस्तावित है। प्राचीन काल से हम वृक्षों की पूजा करते आये हैं। ज्योष्ठ मास में वटसावित्री व्रत भी मूलतः वृक्षोपासना है। उसे लोकप्रसिद्ध करने के लिए यमराज, सावित्री-सत्यवान् की कथा से जोड़ा गया। हमारी परम्परा में पीपल, गूलर, वट, शमी, बिल्व आदि वृक्षों को देववृक्ष माना गया है। कल्पवृक्ष की भी एक अन्य अवधारणा है, जिससे सम्बद्ध अनेक कथाएँ हैं।
(विस्तृत विवरण पृ. 75 पर)

रामलीला : लोकसंग्रह की महत्त्वपूर्ण विधा

सम्पादकीय

—भवनाथ झा

किसी भी कथा की रंगमंचीय प्रस्तुति उसे अधिक व्यापक तथा अभिव्यक्तिपूर्ण बना देती है, क्योंकि उसकी रस-निष्पत्ति में आंगिक तथा वाचिक अभिनय भी अपनी भूमिका निभा लेता है। जब हम किसी काव्य को पढते हैं, तो रसनिष्पत्ति केवल शब्दों के माध्यम से होती है, किन्तु उसी काव्य को यदि कवि के मुख से सुनते हैं, तो वहाँ रसनिष्पत्ति में कवि की ध्वनि और उनकी चेष्टा भी सहायिका बन जाती है। किन्तु उसी काव्य को जब रंगमंच पर अभिनेता आंगिक अभिनय के साथ उपयुक्त वातावरण में प्रस्तुत करता है तो विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारीभाव इन तीनों की साकार उपस्थिति में रसनिष्पत्ति शीघ्र होती है तथा साधारणीकरण व्यापार के द्वारा राम आदि अभिनेय, अभिनेता तथा सहृदय सामाजिक दर्शक — इन तीनों का तादात्म्य हो जाता है और दर्शक के अन्तकरण में स्थित जो श्रृंगारादि रस आवरण से ढँका हुआ है, वह उद्दीप्त हो जाता है। यही कारण है कि "काव्येषु नाटकं रम्यम्" कहा गया है। इसी साधारणीकरण व्यापार के द्वारा दर्शक अभिनेता को ही मूल चरित समझ लेता है। यहीं कारण है कि राम वनगमन के प्रसंग में अभिनेता जब अभिनय करता है तो दर्शक रोने लग जाते हैं— इस स्थिति को ध्वन्यालोक के लोचन व्याख्याकार अभिनवगुप्त ने साधारणीकरण कहा है। साधारणीकरण वह है जो पृथक् को भी एकाकार कर दे।

रामलीला के रूप में राम के चरित की रंगमंचीय प्रस्तुति बहुत प्राचीन है। भवभूति कृत महावीरचरित तथा उत्तररामचरित को भी इस सन्दर्भ में देखा जा सकता है। उत्तररामचरित में तो चित्रवीथी अंक के द्वारा सम्पूर्ण रामकथा को एक ही अंक में समेटकर भवभूति ने अपनी कुशलता प्रदर्शित की है। इसमें छाया-अंक की योजना एक रंगमंचीय प्रयोग है। वह शायद shadow theatre का सबसे पुराना उदाहरण है।

एक दिन की रामलीला

भवभूति ने उत्तररामचरित तथा महावीरचरित इन दोनों नाटकों की रचना कालप्रियनाथ अर्थात् भगवान् शिव की शोभायात्रा के अवसर पर प्रस्तुति के लिए की गयी थी, जैसा कि कवि स्वयं उत्तररामचरित के आरम्भ में सूत्रधार के मुख से कहलाते हैं—

अद्य खलु भवतः कालप्रियनाथस्य यात्रायामार्यमिश्रान् विज्ञापयामि, एवमत्र भवन्तो विदांकुर्वन्तु... अर्थात् आज मैं भगवान् कालप्रियनाथ की यात्रा में आप सभी सम्मानित लोगों को सूचित करता हूँ, इस प्रकार आपलोग जानें कि...

महावीरचरित में भी यही बात आयी है। इस प्रकार, दोनों नाटक शोभायात्रा की भीड़ के बीच सार्वजनिक मंच पर प्रस्तुत किया गया सुगठित नाटक है। इसे हम रामलीला मंचन की परम्परा का नाटक मान सकते हैं, क्योंकि इसमें पूरी रामकथा एक मंच से कह दी गयी है।

इसीप्रकार, मुरारि कृत अनर्घराघव का भी लेखन पुरुषोत्तम विष्णु की यात्रा में मंचन के लिए हुआ है।[1] जयदेव कृत प्रसन्नराघव में भी कहा गया है कि इस नाटक का प्रथम मंचन भगवान् शिव की यात्रा के क्रम में हुआ है।[2] सोमेश्वरदेव कृत उल्लाघराघव में हम पाते हैं कि इसका मंचन द्वारका में देवोत्थान एकादशी के दिन हुआ था।[3]

इस प्रकार, हम देखते हैं कि रामकथा विषयक संस्कृत के नाटक किसी न किसी विशेष धार्मिक अवसर पर मंचन हेतु लिखे गये हैं। आवश्यकता है कि रामकथा पर आधारित संस्कृत के नाटकों का प्रथम मंचन किस अवसर पर हुआ है, इसका विवेचन कर हम रामलीला के आध्यात्मिक तथा सामाजिक प्रभाव पर विवेचन करें।

नौ दिनों की रामलीला— मधुसूदन मिश्र का महानाटक

मधुसूदन मिश्र संकलित इस महानाटक का एक प्रकाशन कलकत्ता से महाराज कालीकृष्ण बहादुर के सम्पादन में 1840ई. में अंग्रेजी अनुवाद के साथ हुआ था। इसके संपादक स्वीकार करते हैं कि इस संस्करण के सम्पादन के लिए उन्होंने दर्जनों पाण्डुलिपियाँ तथा बंगला लिपि में प्रकाशित एक प्रति का अवलोकन किया था। इस संस्करण की विशेषता है कि इसमें मंचन की दृष्टि से निर्देशन भी दिये गये हैं। प्रत्येक अंक में स्पष्ट किया गया है कि मंच पर किस चित्र का व्यवहार करना चाहिए, जो कि प्रासंगिक हो। उदाहरणार्थ प्रथम अंक के आदि में निर्देश है— **अयोध्याराजसदनकल्पनम्।** पुनः 18वें श्लोक के बाद **मिथिलाराजसदनकल्पनम्** है। कौन श्लोक सूत्रधार के द्वारा पढ़ा जायेगा, इसका भी निर्देश मिलता है। इस प्रकार, मधुसूदन मिश्र के महानाटक की यह प्रति हमें अतिरिक्त सूचनाएँ प्रदान करती है, जो जीवानन्द विद्यासागर वाली प्रति में नहीं है।

जीवानन्द विद्यासागर कृत टीका के साथ इस महानाटक का प्रकाशन कलकत्ता से 1878ई. हुआ है। इससे पूर्व 1858 में बंगला लिपि में भी इसे प्रकाशित किया गया था। इसके प्रत्येक अंक के अन्त में कहा गया है कि इसके रचयिता हनुमान् हैं, जिसका सज्जीकरण मधुसूदन मिश्र के द्वारा किया गया है—

एष श्रील-हनूमता विरचिते श्रीमन्महानाटके
वीरश्रीयुतरामचन्द्रचरिते प्रत्युद्गते विक्रमैः।
मिश्रश्रीमधुसूदनेन कविना सन्दर्भ्य सज्जीकृते
यातोऽङ्कः प्रथमो विदेहतनयालाभाभिधानो महान्॥

अर्थात् श्रीहनुमानजी विरचित वीर रामचन्द्र के चरित तथा उनके पराक्रमों से भरे इस महानाटक, जिसे मधुसूदन कवि ने सन्दर्भ के साथ सुसज्जित किया है, इसमें सीता की प्राप्ति नामक पहला अंक समाप्त हुआ।

1 अनर्घराघव, अंक 1 सूत्रधार की उक्ति— ....भगवतः पुरुषोत्तमस्य यात्रायामुपस्थापनीयाः सभासदः,

2 प्रसन्नराघव, अंक 1, सूत्रधार की उक्ति— ....भगवतः शङ्करस्य यात्रायां परिमिलिता एव पारिषदाः। तदेतानुपगम्य निजकलावलोकनप्रसादाय तावदभ्यर्थयामि।

3 सोमेश्वरदेव : उल्लाघराघव, 1.4 के बाद सूत्रधार की उक्ति— तदद्य भगवत श्रीद्वारकालङ्कारनीलमणे श्रीकृष्णदेवस्य पुरत श्रीधरप्रबोधैकादशीपर्वणि सर्वदिग्गतानां सामाजिकजनानां जनकसुतापतिचरिताभिनयादेशसम्पादनेन कृतार्थयामि....

मधुसूदन मिश्र के महानाटक का अंक विभाजन एवं श्लोक संख्या

अंक संख्या	अंक नाम	श्लोक संख्या
प्रथम	विदेहतनयालाभ	59
द्वितीय	वैदेहीसुरत	66
तृतीय	वैदेहीहरण	94
चतुर्थ	वालिवध	80
पंचम	संदेशाहरण	111
षष्ठ	सागरबन्धन	114
सप्तम	दूताङ्गद	80
अष्टम	मायाराघव	38
नवम	स्वर्गारोहण	149

इस प्रकार मधुसूदन मिश्र ने प्रत्येक अंक का नामकरण किया है, जिसकी सूची यहाँ प्रदर्शित है। इस प्रकार नौ अंक में पूरी रामकथा समाप्त हो जाती है।

चौदह दिनों की रामलीला– दामोदर मिश्र का महानाटक

हनुमन्नाटक के नाम से एक संस्करण दामोदर मिश्र के नाम पर उपलब्ध होता है। इसमें 14 अंक हैं। इसमें भी इसे हनुमद्-विरचित कहा गया है। नाटक के अन्तःसाक्ष्य से इसका भी नाम महानाटक ही है, किन्तु उपर्युक्त मधुसूदन मिश्र वाले नाटक से पृथक् रखने के लिए सम्पादकों ने इसका नाम हनुमन्नाटक रखा है। इसके अन्त में स्पष्ट उल्लेख है–

रचितमनिलपुत्रेणाथ वाल्मीकिनाब्धौ
निहितममृतबुद्ध्या प्राङ् महानाटकं यत्।
सुमतिनृपतिभोजेनोद्धृतं तत्क्रमेण
ग्रथितमवतु विश्वं मिश्रदामोदरेण॥

अर्थात् इसे हनुमानजी ने रचा परन्तु वाल्मीकि-रामायण की रचना के बाद उसे अमृत मानकर इसे

दामोदर मिश्र के महानाटक का अंक विभाजन एवं श्लोक संख्या

अंक संख्या	अंक नाम	श्लोक संख्या
प्रथम	जानकीस्वयंवर	58
द्वितीय	रामजानकीविलास	30
तृतीय	मरीचागमन	27
चतुर्थ	सीताहरण	16
पंचम	वालिवध	64
षष्ठ	हनुमद्विजय	46
सप्तम	सेतुबन्धन	20
अष्टम	अङ्गदाधिक्षेपण	58
नवम	मन्त्रिवाक्य	48
दशम	रावणप्रपञ्च	24
एकादश	कुम्भकर्णवध	41
द्वादश	मेघनादवध	19
त्रयोदश	लक्ष्मणशक्तिभेद	38
चतुर्दश	रामविजय	96

समुद्र में फेंक दिया। इसे राजा भोज ने निकलवाया और मिश्र दामोदर ने क्रमबद्ध किया।

इसमें 14 अंकों में सम्पूर्ण रामकथा संवाद के रूप में कही गयी है।

इस प्रकार संस्कृत साहित्य में हमें तीन प्रकार की रामलीला का उल्लेख मिलता है।

रामलीला के शिलालेखीय प्रमाण

बंगाल के हुगली जिला के त्रिवेणी नामक स्थान में वर्तमान में अवस्थित जफर खान गाजी मस्जिद में पश्चिम दिशा में स्थित एक कमरा में चार शिलालेख लगे हुए हैं। ये उलटे-पुलटे लगाये गये हैं, इसका स्पष्ट अर्थ है कि ये पत्थर किसी दूसरे महल के हैं। ये रामायण की घटनाओं के शीर्षक हैं। ऐसा कहना

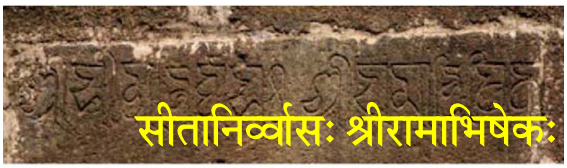

रामकथा के दृश्यों का नामकरण (प्रस्तरखण्डों पर अंकित)

स्रोत– साभार : https://twtext.com/article/1280416883284426753

अनुचित नहीं होगा कि मूल रूप से जिस स्थान पर ये फलक लगाये गये थे, उन स्थानों पर उस प्रसंग का अभिनय होता था। इन शिलाखण्डों पर पूर्वोत्तर भारतीय कोणीय लिपि है, जो आधुनिक मिथिलाक्षर, बंगला तथा असमिया का आरम्भिक स्वरूप है। इसे बहुत सुसज्जित रूप में किसी कलाकार के द्वारा लिखा गया है। इसमें 'भ' अक्षर अपने आरम्भिक स्वरूप में है, अतः इसका काल 12वीं शती से पूर्व माना जा सकता है। रामलीला के मंचन का यह शिलालेखीय प्रमाण है।

तुलसीदास के बाद की रामलीला

तुलसीकृत रामचरितमानस की रचना के बाद निश्चित रूप से रामलीला का आधार ग्रन्थ परिवर्तित हो गया। यह भी कहा जाता है कि चित्रकूट की रामलीला लगभग 500 वर्षों से हो रही है तो बनारस की रामलीला 430 वर्षों से हो रही है। इस सन्दर्भ में मेघा भगत का भी नाम आता है, किन्तु इस इतिहास पर हमें आगे शोध करने की आवश्यकता है।

काशी की प्रसिद्ध रामलीला को आरम्भ कराने का श्रेय काशिराज उदित नारायण सिंह (1770-1835ई.) को दिया जाता है। 1828ई. में प्रकाशित एक रिपोर्ट में काशी की रामलीला का विस्तार से वर्णन हुआ है (धर्मायण, अंक सं. 129) इसमें बंगाल में होनेवाली 15 दिनों की रामलीला का भी वर्णन आया है कि दशहरे के अवसर पर वहाँ रामलीला होती रही है। यह भी ध्यातव्य है कि बंगाल में 15 दिनों की दुर्गापूजा होती है, जो आश्विन कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि से प्रारम्भ होकर शुक्लपक्ष की दशमी तिथि को समाप्त होती थी। अतः यहाँ पर 15 दिनों की रामलीला का प्रचलन था।

रामनगर (काशी) की रामलीला के प्रवर्तक काशिराज उदित नारायण सिंह

किन्तु पश्चिम के प्रान्तों में जहाँ आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से दुर्गापूजा आरम्भ होती थी उन क्षेत्रों में 10 दिनों की रामलीला होती है।

अतः यह कहना अनुचित नहीं नही होगा कि महानाटक का नौ अंकों का पाठ चौदह अंकों का पाठ प्राचीन काल में इसी अवधि को देखते हुए तैयार किये गये होंगे। यद्यपि इस विषय पर दृढ़तापूर्वक कुछ कहने के लिए हमें और साक्ष्य जुटाने की आवश्यकता है।

फिर भी इतना तो प्रामाणिक है कि रामलीला के उद्देश्य से बहुत-सारे ग्रन्थों की रचना हुई। रामलीला की परम्परा में तुलसी के मानस का पारायण तो होता था किन्तु संवाद के लिए पृथक् लेखन की आवश्यकता रही होगी। इसकी पूर्ति के लिए हमें अनेक ग्रंथ मिलते हैं—

1. **'तुलसीदास रामलीलापद्धति'** के नाम से एक पुस्तक का प्रकाशन बरेली से संवत् 1936 यानी 1880ई. में हुआ था। इसका सम्पादक शिवाधार ने किया था।[4]
2. Otto Böhtlingk ने भी 1884 में प्रकाशित पुस्तक Sanskrit-Wörterbuch in kürzerer Fassung में **रामलीलासूची** नामक एक पुस्तक का उल्लेख किया है।
3. भारतेन्दु हरिश्चन्द ने भी **रामलीला** नामक एक चम्पू का निर्माण किया था। यह हेमन्त शर्मा संपादित भारतेन्दु समग्र में पृ. 551-54 पर प्रकाशित है।
4. विद्यार्थी पत्रिका के सम्पादक पं. दामोदर शास्त्री ने सात काण्डों में **रामलीला** नामक पुस्तक लिखी थी।
5. दूसरी पुस्तक **रामलीला प्रकाशिका** के नाम से केवल बालकाण्ड की कथा लेकर 45 पृष्ठों की पुस्तिका रामलीला के उद्देश्य से छोटीलाल लक्ष्मीचन्द, मौढ़ा, काकोरी, लखनउ स्थान से जैन प्रेस लखनउ से 1904ई. में प्रकाशित हुई थी।[5]
6. अयोध्या के महात्मा सरयूदास की पुस्तक **वेदार्थ प्रकाश रामायण** में रामलीला का सिद्धान्त तथा इसके आरम्भ होने की कथा दी गयी है। इस कथा के अनुसार एक समय अगस्त्य मुनि अपने शिष्यों के साथ गन्धमादन पर्वत पर गये। वहाँ हनुमानजी से उनकी भेंट हुई। सन्ध्या होने पर हनुमानजी ने ऋषिकुमारों का शृंगार कर रामलीला करायी। महात्मा सरयूदासजी ने अपने ग्रन्थ में इस स्थल पर रामलीला का सम्पूर्ण विधान प्रस्तुत किया है, जिसे ईसी अंक में पृथक् आलेख के रूप में पढ़ा जा सकता है।
7. रामलीला के सन्दर्भ में कथावाचक राधेश्यामजी का रामायण अति प्रसिद्ध हुआ। सुदूर पश्चिम से पूर्वतक समस्त हिन्दी भाषाभाषी क्षेत्र में ओजपूर्ण संवाद तथा छन्द की गेयता के कारण इनका राधेश्याम रामायण अति चर्चित हुआ।
8. रामलीला प्रदर्शित करनेवाले दलों में अपने समूह द्वारा प्रदर्शित रामलीला के लिए पद्यमय संवाद लिखे गये। हरियाणा के फतेहाबाद जिला के अन्तर्गत तोहाना तहसील के इंदा छोई की रामलीला की पाण्डुलिपि डिजिटल कापी RAMAYAN INDACHHOI के नाम से https://archive.org/ पर उपलब्ध है। इसे पढ़ने से प्रतीत होता है कि स्थानीय दर्शकों की रुचि के अनुरूप उर्दूमिश्रित हिन्दी में गद्य तथा पद्य में संवाद लिखे गये हैं। संवाद में चालू भाषा तो है पर रामकथा की पवित्रता भंग नहीं हुई है। गंगा पार करने से पूर्व केवट गुह की एक उक्ति यहाँ प्रस्तुत है—

4 Catalogues of the Hindi, Panjabi, Sindhi, and Pushtu Printed Books in the Library of the British Museum, Volumes 1-4, By British Museum. Department of Oriental Printed Books and Manuscripts, James Fuller Blumhardt· 1893, p. 161, 186

5 Government Gazette, The United Provinces of Agra and Oudh, Parts 3-4, 1907, पृ. 403.

अच्छा भगवन् पूछते हो तो कहता हूँ संशय अपना।
भयभंजन मेरे सन्मुख हैं, फिर क्यों रहने दूँ भय मेरा।।
जानता हूँ जादू है, राजाजी के पदपंकज में।
पत्थर में जान डालने की शक्ति महान चरण-रज में॥
बन गई शिला सुन्दरी नारी चरणों की धुल लगते ही।
जड़ में चेतनता आती है उस जीवन पूरी के लगते ही॥
चरणों की यह रज का प्रभाव जन पत्थर और शिला पर है।
तो मेरी लकड़ी की नैया, छूते ही छूमंतर है॥

दिल्ली की रामलीला, 1892ई.

लन्दन में 5 से 12 सितम्बर 1892ई. में मैक्समूलर की अध्यक्षता में प्राच्यविदों का नौवाँ अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन चल रहा था। भारत से भगवतीलाल आर. बादशाह, के.बी. पाठक, लाला बैजनाथ, के.टी.तैलंग, एच. एच. ध्रुव, बालगंगाधर तिलक, आर.जी. भण्डारकर आदि गये थे। साथ ही, कनिंघम, सिल्वाँ लेवी, बूलर आदि यूरोपीय विद्वान् भी जमे हुए थे। इस सेमिनार में भाग लेनेवाले आर. बैजनाथ उन दिनों इंदौर के अवकाशप्राप्त मुख्य न्यायाधीश थे।

लाला बैजनाथ ने Modern Hindu Religion and Philosophy यानी "आधुनिक भारतीय धर्म एवं दर्शन" पर व्याख्यान दिया था। इस व्याख्यान के अन्तर्गत उन्होंने तुलसीदास के रामचरितमानस के विषय में जो कुछ लिखा है, वह इस विषय में कहा गया सबसे महत्त्वपूर्ण व्याख्यान प्रतीत होता है। वे लिखते हैं— 'आधुनिक राम वाल्मीकि के राम नहीं है, जो कि उनके समकालीन थे, वे आज तुलसीदास के राम हैं, जो 1600ई. के आसपास हुए थे और उनका प्रभाव उनके जीवनकाल से अधिक आज के समाज पर है।"

आगे वे लिखते हैं— "हिंदुओं के किसी भी अन्य ग्रंथ में ऐसी उत्कट भक्ति और प्रेम मिले जिसके साथ, उन्होंने राम को इस तरह से चित्रित किया है कि भारत के विद्वान् और अनपढ़ दोनों के चित्त को आकर्षित करता है। उत्तर भारतीय प्रांतों में उनकी रामायण हिंदुओं के किसी भी अन्य पवित्र ग्रंथ की तुलना में अधिक पढ़ी जाती है। संभवतः यूरोप के लोगों में बाइबिल के इतने पाठक नहीं हैं जितने कि तुलसीदास की रामायण के पाठक उत्तर भारत के लोगों में हैं। उत्तर-पश्चिमी प्रांतों के कई जिलों में ऐसा कोई घर या झोपड़ी नहीं है, जहाँ यह ग्रंथ न पढ़ा जाता हो। ग्रामीणों के लिए दिन भर खेत में काम करने के बाद, मजदूर के लिए उसकी कार्यावधि समाप्त होने के बाद, यहाँ तक कि पुलिसकर्मी और सिपाही के लिए भी, रामायण उनका वेद है, उनका धर्म, कविता, नैतिकता, दर्शन, आदि की पुस्तक है।"

इतना ही नहीं, वे शैक्सपीयर को भी ललकारने से नहीं चूकते— "इसकी नैतिकता शुद्धतम हिंदू धर्म की है, इसकी पवित्रता भागवत से भी गहरी है। कृष्ण उपासना पर किसी भी आधुनिक काव्य की तुलना में इसका स्वर निश्चित रूप से अधिक ऊँचा और शुद्ध है। इंग्लैंड में शेक्सपियर की तुलना में इसके दोहे और चौपाई अधिक बड़े पैमाने पर उद्धृत किए गए हैं।"

वे आगे रामलीला की चर्चा करते हैं— "हर साल उत्तर भारत के कई स्थानों में आयोजित होने वाले रामलीला

उत्सव में राम के चरित का स्मरण किया जाता है और यह दृश्य वाल्मीकि के श्लोकों के बाद नहीं, बल्कि तुलसीदास के दोहे और चौपाई के बाद दोहराया और प्रदर्शित किया जाता है। बनारस में महाराजा इसे बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। इस साल दिल्ली में, पच्चीस हजार से अधिक लोग शोभायात्रा में सम्मिलित हुए हैं जो रात में मुख्य बाजारों से गुजरती है।"

रामलीला का जनमानस पर प्रभाव

रीवा के महाराजा रघुराज सिंह (1824-1880ई.) ने रामरसिकावली नामक एक विशाल ग्रंथ दोहा-चौपाई में लिखी इसमें उन्होंने केवल रामभक्तिपरम्परा के सन्तों का जीवनचरित लिखा है। यहाँ प्रियादास के चरित में उन्होंने उल्लेख किया है कि प्रियादास अयोध्या में रामलीला करते थे। उनकी रामलीला का ऐसा प्रभाव था कि राम के वनवास के दिन से राज्याभिषेक पर्यन्त दर्शक भोजन का त्याग कर देते थे। एक बार वे फतेहपुर देवी मन्दिर में दर्शन करने के लिए गयेष वहाँ देवी के आदेश से उन्हें रामलीला आरम्भ करनी पड़ी। वहँ ऐसी चामत्कारिक घटना घटी कि रामवनगमन के दिन सभी दर्शक रोने लगे और उन्होंने अन्न-जल का परित्याग कर दिया। महाराज दशरथ की भूमिका करनेवाले कलाकार की मृत्यु भी हो गयी। फिर जब राम का राज्याभिषेक हुआ तब सभी स्वस्थ हुए। अंगरेज भी इस रामलीला को देखकर विवेकशील हो गये थे। वे मानने लगे कि राम के प्रभाव से ही हमें भी राज्य मिला है। रघुराज सिंह लिखते हैं—

एक समय प्रभु विचरन हेतू। गये फतेपुर कृपानिकेतू॥
तँह देवी मन्दिर किय डेरा। देवीरैन प्रत्यक्षहि टेरा॥

दोहा— रह्यो अयोध्या नगर इत, अति पुनीत केहुँकाल।
करहु रामलीला इते, लखि जन होयें निहाल॥ 11॥

देवी वचन सुनत अघहारी। तहाँ रामलीला विस्तारी॥
राम गमन वन की भइ लीला। पुर नर नारि कुमति शुभशीला॥
सत्य सत्य सब रोदन कीन्हे। भोजन पान त्यागि सब दीन्हे॥
जो दशरथको रूपहि भयऊ। सो सति त्यागि देह निज दयऊ॥
जब पुनि भयो राम अभिषेका। तब अँगरेजहु कियो विवेका॥
साहेब सब निज ठाकुर जाने। रामनिसाफ करे सोह माने॥
राम जौन जेहिं दियो रजाई। सो सब शिर धरि करे सदाई॥
अचरज फैलि रह्यो पुर माहीं। सकल प्रशंसै जन प्रभुकाहीं॥[6]

इस प्रकार हम भारतीय परम्परा में रामलीला के प्रति अपार श्रद्धा पाते हैं। यह सामान्य जनता तक श्रीराम के संदेशों को पहुँचाने का एक विशिष्ट विधान है अतः इसे लोकसंग्रह की विधा कहना अत्युक्ति नहीं होगा।

***

6 रघुदेव सिंह :भक्तमाला रामरसिकावली, खेमराज श्रीकृष्णदास, मुंबई, सं. 1952 (1896ई.) पृ. 971-72

नाट्य-परम्परा और रामलीला

डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू

लगभग 175 ग्रन्थों के अनुवादक एवं सम्पादक, विश्वाधारम्, 40 राजश्रीकॉलोनी, विनायकनगर, उदयपुर 313001 (राजस्थान), राजस्थान,

रामलीला रामकथा की रंगमंचीय प्रस्तुति है। यद्यपि वर्तमान काल में इलैक्ट्रॉनिक क्रान्ति के कारण इस परम्परा को बहुत आघात लगा है, पर इसकी जड़ें बहुत प्राचीन हैं। अपने इष्टदेव के चरित का अनुकरण करना भी उनकी उपासना का एक माध्यम है और उस अनुकरण का दर्शन भी उपासना है। यह सिद्धान्त रामलीला को आध्यात्मिक बना देता है। इसी दृष्टि से भारत के सन्तों तथा काव्यशास्त्रियों ने 'लीला' शब्द को परिभाषित किया है। इस प्रकार, रामलीला नवधा भक्ति में 'कीर्तन' एवं 'श्रवण' के अन्तर्गत रखी जायेगी। अभिनेता तथा दर्शक दोनों पुण्य के भागी होते हैं— यह रामलीला का आध्यात्मिक पक्ष है। इस आलेख में विद्वान् लेखक ने 'लीला' शब्द की व्याख्या करते हुए रामलीला की प्राचीन परम्परा वर्तमान में राजस्थान की कुछ प्रसिद्ध रामलीला पर प्रकाश डाला है।

आदर्श चरित्रों के आख्यानों का मंचन बहुत प्राचीनकाल से होता आया है। मंचन अनुरंजनमूलक हो, इसके लिए विविध रसों, अवसरानुकूल संगीत, पात्रोचित वेशभूषा और यथोचित संवादों को प्राथमिकता दी जाती रही है। हमारे यहाँ एकपात्रीय भाण सहित दस रूपकों की मान्यता रही है। नाट्यशास्त्र पूरा ही रंगमंच की आवश्यकताओं और विशेषताओं को लेकर रचा गया है और फिर अनेक नाटकों की रचना की गई। नाट्यशास्त्र में बहुत सुविचारित रूप से कहा गया है कि तीनों लोकों में मुख पर नाटक के भावों का अनुकीर्तन होता है क्योंकि वह नाना भावों से सम्पन्न होता है, नाना अवस्थाओं का आत्मिक प्रतिरूपण होता है, लोकवृत्तों का अनुकरण होता है—

त्रैलोक्यस्यास्य सर्वस्य नाट्यं भावानुकीर्तनम्।
नानाभावोपसम्पन्नं नानावस्थान्तरात्मकम्॥
लोकवृत्तानुकरणं नाट्यमेतन्मया कृतम्।[1]

कालिदास ने नाटकों की प्रशंसा में लिखा है कि उसमें अनेकानेक रसों का परिपाक होता है, तीनों लोकों का चरित दृष्टिगोचर होता है। यह एक होकर भी भिन्न-भिन्न रुचि सम्पन्न मनुष्यों को आनन्दित करता है —

देवानामिदमामनन्ति मुनयः कान्तं क्रतुं चाक्षुषं
रुद्रेणेदमुमाकृतिव्यतिकरे स्वाङ्गे विभक्तं द्विधा।
त्रैगुण्योद्भवमत्र लोकचरितं नानारसं दृश्यते

1 नाट्यशास्त्र 1, 108-109
2 कालिदास : मालविकाग्निमित्रम्, 1.4.

नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्॥[2]

दृश्य काव्य के प्रस्तुतिपरक नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार, डिम, वीथी, अंक, ईहामृग और प्रहसन जैसे भेद होते हैं। एकांकी, झलकी से लेकर नुक्कड़ नाटक तक के रूप वर्तमान काल तक प्रचलन में रहे हैं लेकिन लीला एक विशिष्ट अर्थ में ज्ञेय है। नृसिंहलीला, शिवलीला, श्रीकृष्णलीला, श्रीगणेशलीला और रामलीला की लोकप्रियता इतनी रही है कि भक्ति के नवधारूपों में एक रूप 'लीला' को कहा गया है। विष्णुधर्मोत्तरपुराण में 'लीला' के साथ 'विलास' शब्द का प्रयोग हुआ है जो महत्त्वपूर्ण हैं और इसके पर्याय के रूप में भी सामने आया है— **लीलाविलासविभ्रान्तम्।**[3]

लीला : अभिप्राय और पर्याय —

लीला वह है जिसमें लयन हो जाए। शब्दकोशों में कहा गया है—

लयनमिति। ली+ सम्पदादित्वात् क्विप्। लियं लातीति। ला+क:। केलि:। विलास:। शृंगारभाचेष्टा। इति मेदिनी। ले, 47। खेला। इति विश्व:।[4]

भागवतकार ने कहा है कि श्रीहरि की सुन्दर अवतार कथाओं को लीलारूप में रचने से ईश्वर की सम्प्राप्ति होती है—

अथाख्याहि हरेर्धीमन्नवतारकथा: शुभा:।
लीलाविदधत: स्वैरमीश्वरस्यात्ममायया॥[5]

सामान्य रूप से यह भी सुझाया गया है कि प्रियजन के असम्भव समागम की स्थिति में अपने मनोविनोद के लिए प्रिय के वेश, गति, दृष्टि, मुस्कान आदि का अनुकरण करते हुए जो गतिविधि की जाए, वह लीला होती है। यह प्राय: नायिका की सखियाँ मिलकर रचाती रही और इसमें प्राणेश्वर के आलाप, वेश, गति, हास्य सहित दृष्टिपात आदि को यथारूप अनुकरण से दिखाया जाता है।

रूपगोस्वामी कृत 'उज्ज्वलनीलमणि' के आधार पर शब्दकल्पद्रुमकार राधाकान्तदेव 'लीला' शब्द की व्याख्या में लिखते हैं—

अलब्धप्रियसमागमया स्वचित्तविनोदार्थं प्रियस्य या।
वेशगतिदृष्टिहसितभणितैरनुकृति: क्रिया सा लीला॥

तथा च—

अप्राप्तवल्लभसमागमनायिकाया:
सख्या: पुरोऽत्र निजचित्तविनोदबुद्ध्या।
आलापवेशगतिहास्यविलोकनाद्यै:
प्राणेश्वरानुकृतिमाकथयन्ति लीलाम्॥

प्रिय का अनुकरण लीला है

द्रवकेलिपरीहासा: क्रीडा खेला च नर्म च।

अमरकोश के इन पर्यायों के क्रम में भरतकृत टीका में कहा गया है कि प्रिय का अनुकरण लीला है—

प्रियानुकरणं लीला। यथा तेनोदितं वदति याति तथा तथासावित्यादीत्यन्योऽपि। ली ङ य ओ श्लिषि नाम्नीति लक् लीला। इत्यमरटीकायां भरत:।[6]

पद्मपुराण में इसके दो रूप बताए गए हैं— प्रकट और अप्रकट—

प्रकटाप्रकटा चेति लीला सेयं द्विधोच्यते।

संगीतराज के नृत्यरत्नकोश में शिवलीला के प्रसंग में कामदेव को दग्ध करने, दानवराज मय को जीतने और अर्द्धांग में पर्वतराजात्मजा को धारण करने जैसे कथाओं को गिनाया गया है—

हेला-विदलित-काम-शरीरं
लीलानिर्ज्जित दानवराजम्।
देधार्धीकृत-भूधर-सूनुं
वन्दे शम्भुं त्रिभुवननाथम्॥[7]

3 विष्णुधर्मोत्तरीय चित्रसूत्रम् : सम्पादक-अनुवादक : डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू, चौखम्बा संस्कृत सीरिज ऑफीस, वाराणसी, 3, 39, 50)
4 शब्दकल्पद्रुम भाग 4, पृष्ठ 224
5 श्रीमद्भागवत, 1.1.18.
6 अमरकोश : प्रथम. नाट्यवर्ग. 32
7 नृत्यरत्नकोश : महाराणा कुम्भाकृत 1, 1, 256

बारहवीं सदी में हुए रामचन्द्र गुणचन्द्र प्रणीत नाट्यदर्पण में कहा है—

लीला दयितवागादे:, स्वे न्यासो बहुमानत:।

इसकी टीका में कहा है—

आदिशब्दाद् वेषव्यापारादिग्रह:। प्रियतम-प्रीत्यतिशयेन दयितवागादे: सशृङ्गारं स्वस्मिन् न्यास: सम्यक् करणं लीलेति।[8]

इसका आशय है कि प्रियजन के वागादि वेश व्यापार का अतिशय प्रीति के कारण अपने में अनुकरण करने को लीला कहा जाता है।

यह भी कहा गया है कि लीला की दिव्यता सदैव अनन्त प्रकाशमय होती है। जगत् के अन्तर में भी जहाँ अनेकविध उजास होता है। इसमें श्रीहरि के जन्मादि सहित कुल-परिवार को साक्षात् किया जाता है। श्रीकृष्ण के भावानुसार लीला नाम से उनकी शक्ति होती है। उसके परिकर या पाश्र्वगत दृश्यों में उन सभी के भावों को रचा जाता है।

सदानन्तै: प्रकाशै: स्वैर्लीलाभिश्च स दीव्यति।
तत्रैकेन प्रकाशेन कदाचिज्जगदन्तरे॥
सहैव स्वपरीवारैर्जन्मादि कुरुते हरि:।
कृष्णभावानुसारेण लीलाख्या शक्तिरेव सा॥
तेषां परिकराणाञ्च तं तं भावं विभावयेत्।

यही नहीं, श्रीहरि के समस्त अगोचरीय प्रपंचों-प्रसंगों को दृश्यरूप में दिखाया जाता है। जैसी उनकी प्रकटरूप में लीलाएँ रही हैं, वैसे ही अगोचर अनुग्रह को भी रचा जाता है। प्रकटलीला में ही विष्णु के द्वारकालोकादि को रचकर उनके लोक में प्राकट्य चरित करने के प्रसंग को साक्षात् दिखाया जाता है—

प्रपञ्चगोचरत्वेन सा लीला प्रकटा स्मृता॥
अन्यास्त्वप्रकटा भान्ति ता दृश्यस्तदगोचरा:।
तत्र प्रकटलीलायामेव द्वारकायाञ्च शार्ङ्गिण:॥
यास्तत्र तत्राप्रकटास्तत्र तत्रैव सन्ति ता:॥[9]

यहाँ श्रीहरि के कृष्णरूप में प्रकट होकर चरित करने की लीला का वर्णन है। ऐसा दृश्य प्राय: मूर्तिकला के फलकों में देखने को मिलता है। ऐसा अंकन सद्योजात रूप में शिव के अवतरण और कृष्णरूप में विष्णु के अवतरण आदि रूपों में शिल्पकारों ने दिखाया है। रामनाट्य अथवा रामचरित को रचने की पुष्टि हमें महाराष्ट्र स्थित अजन्ता की गुफा से लेकर कम्बोडिया के अंगकोरवाट के विष्णुमन्दिर और अन्य देवालयों के अलंकरण तक देखने को मिलता है।

पुराणगत चरितों का अनुकरण

'विष्णुधर्मोत्तर' यह निर्देश करता है कि पुराणों में कहे गए चरितों पर बार-बार ध्यान देना चाहिए—

चरितानि पुराणानां श्रोतव्यानि पुन: पुन:।[10]

तो इससे बोध होता है कि अनुकरणीय चरितों को देखने-दिखाने की परम्परा भी समाज में रही है; क्योंकि पुराणकार ने आगे यह भी कहा है कि देवताओं को नमस्कार करने से पापों का विनाश होता है, उनसे भी अधिक पापों का नाश उनके आगे आगे प्रणिपात होने से होता है, उससे अधिक पापनाशन प्रदक्षिणा करने से होता है, उनकी स्तुति की जाए तो समस्त कामनाएँ पूरी होती हैं, उनसे सम्बन्धित गीतों के बाजों के साथ गायन से देवगण सन्तुष्ट होते हैं और जो उनसे सम्बन्धित नृत्य, गायन, नृत्त आदि का वादन करते हुए अनुकरण करते हैं, वे उस देवता के लोक को प्राप्त करते हैं—

देवतानां नमस्कारात् किञ्चित्पापं प्रणश्यति।
तथैवाभ्यधिकं पापं प्रणिपातेन नश्यति॥

8 नाट्यदर्पण : व्याख्या : थानेशचन्द्र उप्रेती, परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली, 1994 ई., 4, 32
9 भागवतामृतम् लीलावर्णनम्
10 विष्णुधर्मोत्तर : तृतीयखण्ड, 233, 59

ततोऽप्यभ्यधिकं किञ्चित्कृत्वा देवे प्रदक्षिणाम्।
स्तुतिक्रिया देवतानां सर्वकामफलप्रदा॥
गीतेन देवतास्तोषमुपयान्ति द्विजोत्तमाः।
तथा वाद्येन नृत्येन पुरुषस्य विशेषतः॥
नृत्तं गीतं तथा वाद्यं स्वयमाचरते द्विजाः।
देवसालोक्यमाप्नोति पुरुषस्य विपश्चितः॥[11]

यहाँ 'नृत्त' शब्द विशेषरूप से ज्ञेय है जिसमें नृत्य, गीत और वादन– अभिनय सहित संगीत के तीनों रूप आ जाते हैं जैसा कि भरत का मत है। फिर, पुराणकार ने यह भी माना है कि नृत्त जैसी प्रस्तुतियाँ करने या करवाने से शिवलोक की प्राप्ति होती है–

नृत्तेन लोकमाप्नोति शङ्करस्य महात्मनः।[12]

रामनाट्य की परम्परा

रामनाट्य की परम्परा का प्रसंग हमें शिवधर्मपुराण में प्राप्त होता है जिसकी सामग्री शिवपुराणकार ने उद्धृत की है और जो 8वीं शताब्दी के बाद का नहीं हो सकता है–

छत्राभिरामनाट्याद्यं शिवस्यायतनाग्रतः।
सम्यक् प्रेक्षणकं दत्वा रुद्रलोके महीयते॥
स्वरूपः सुभगः श्रीमान् परिहृष्टोऽत्र जायते।
सप्तद्वीपसमुद्रायाः क्षितेरधिपतिर्भवेत्॥[13]

इसमें कहा गया है कि शिवमन्दिर के सम्मुख छत्रादि प्रदाता और रामनाट्य अर्थात् रामलीलाओं की सधी हुई प्रस्तुति देनेवाला रुद्रलोक को प्राप्त करता है। वह अच्छा रूप पाता है, सौभाग्यसिद्ध होता है और परम हर्ष को प्राप्त करता है। पुण्यस्वरूप वह सातों ही द्वीपों और समुद्रों वाली पृथ्वी का एकराट् अधिपति होता है।

इससे हमें पूर्व रामायण और महाभारत में अभिनय के संकेत प्राप्त होते हैं। महाभारत के विराटपर्व में 'रंगशाला' का उल्लेख है और महाभारत के खिल हरिवंश में दो नाटकों के अभिनय का संकेत मिलता है। ये हैं– 'रामायण' पर आधारित नाटक और 'कौबेररम्भाभिसार'। मत्स्यपुराण में भरत निर्देशित नाटक का संकेत मिलता है। पतंजलि ने 'कंसवध' तथा 'बलिबन्धन' नाटकों के अभिनय का उल्लेख किया है। वहीं वात्स्यायन और बौद्ध तथा जैन ग्रन्थों में नाटकों के मंचन-अभिनय के संकेत मिलते हैं। ईसापूर्व 2-3 शताब्दी में हुए भास ने जिस रूप और संख्या में नाटकों का प्रयणन किया, वह प्रस्तुतिपरक नाट्यों का विकासकाल कहा जाता है। भास कृत 'प्रतिमा' और 'अभिषेक' नाटक रामकथा से प्रेरित हैं। उसमें आए 'संगीतशाला', 'नाटकीयेभ्यो विज्ञापय', 'नाटकेन सज्जा' –जैसे शब्दों से यह ज्ञात होता है कि उस काल तक नाटकों की परम्परा बहुत सुदृढ़ हो चुकी थी।

भवभूति ने 'महावीरचरित' और 'उत्तरामचरित' जैसे नाटकों से रामकथा को लोकप्रियता तो दी ही, उसके अंशों को कालजयी अमृत से सींचकर भारतीय नाट्य मंचन की परम्परा को नवोन्मेष भी दिया है लेकिन मुरारी के 'अनघराघव' से संस्कृत नाटकों की ह्रासोन्मुखता का परिचय मिलता है। यह सात अंकों वाला श्रव्यकाव्य है और 540 श्लोकों की विपुल संख्या के कारण पदे-पदे नाटकीय गति का अवरोध करता है। दसवीं सदी में राजशेखर ने 'बाल रामायण' और 'बालमहाभारत' जैसे नाटक लिखे लेकिन वे आलोचकों को सन्तुष्ट नहीं कर सके। जयदेव ने भास से प्रभावित होकर 'प्रसन्नराघव' नामक नाटक लिखा। हरिदास सिद्धान्तवागीश (जन्म 1887 ई.) ने 'जानकीविक्रम' नामक नाटक की रचना की। हालांकि हनुमन्नाटक के रचनाकाल के बारे में विद्वान् एकमत नहीं है लेकिन हनुमन्नाटक के रूप में रामकथा

11 विष्णुधर्मोत्तर. 3, 288, 3-34 12 उपर्युक्त 3, 288, 36
13 शिवधर्मपुराण : सम्पादक अनुवादक श्रीकृष्ण जुगनू, चौखम्बा संस्कृत सीरिज ऑफिस, वाराणसी, 2017 ई., 8, 21-22)

सांगोपांग रूप में मिल जाती है। इसको रामलीला का पूर्वरूप कहा जा सकता है।

राजस्थान में रामलीला की परम्परा

राजस्थान की धरती पर नाटक और लीलाएँ रचने की परम्परा पुरानी है। अजमेर के किले में विग्रहराज की बनवाई 12वीं सदी की पाठशाला सरस्वतीकण्ठाभरण की भित्तियों पर नाटकों को उत्कीर्ण किया गया। पारिजातहरण आदि नाटक उस समय राजपुत्रों में पढ़े-पढ़ाए जाते थे। यह भी स्पष्ट होता है कि वे मंचित होते थे। अरथूना के परमारकालीन जैन अभिलेख में रामायण का उल्लेख है। यह शिलालेख विक्रम संवत् 1166 की वैशाख शुक्ला 13 तिथि, सोमवार (तदनुसार मई, 1109 ई.) का है। इसमें कहा गया है—

यावद्रावणरामयोः सुचरितं भूमौ जनैर्गीयते
यावद्विष्णुपदी जलं प्रवहति व्योम्न्यस्ति यावच्छशी।
अर्हच्चक्रविनिर्गतं श्रवणकैर्यावच्छ्रुतं पठ्यते
तावत्कीर्तिरियं चिराय जयतात्संस्तूयमाना जनैः॥[14]

इसका सामान्य आशय है कि जब तक इस पृथ्वीतल पर लोग रावण और श्रीराम का सुन्दर चरित्र गाते रहेंगे, जब तक विष्णुपदी गंगा में जल का प्रवाह होता रहे, आकाश में जब तक चन्द्रमा की विद्यमानता रहे और जब तक अर्हत् शासनचक्र का पठन-पाठन होता रहे, तब तक इस प्रशस्ति की स्तुति जनगण द्वारा की जाती रहे, यह चिरायु हो।

इस पश्चिमी प्रदेश में वर्तमान में रामायण पर आधारित जो लीलाएँ होती हैं, उनमें मुख्य हैं—

1. हाड़ौती क्षेत्र में होनेवाली ढाई कड़ी की रामलीला

राजस्थान के कोटा, बूंदी और बारां जिलों की भूमि

सत्रहवीं सदी में मंच की सज्जा, यवनिका, वाद्यवृंद और सहयोगी। मेवाड़ कलम, उदयपुर।

हाड़ौती के नाम से जानी जाती है। भक्तमालों और परिचयी सहित्य में रामानन्द सम्प्रदाय के दीक्षित आश्रयी सन्त पीपाजी इसी क्षेत्र के गागरोनगढ़ के नरेश थे। इस क्षेत्र के पीपल्दा, पाटोन्दा, मांगरोल आदि अनेक गाँवों में अश्विन नवरात्र में जो रामलीला खेली जाती है, वह ढाई कड़ी के नाम से ख्याति प्राप्त है। अन्ता क्षेत्र के पाटौन्दा की रामलीला 160 वर्ष पुरानी है और उसका स्वरूप आज तक संसाधनों को छोड़कर बदला नहीं है। इस रामलीला में ढाई कड़ी के दोहे बोले जाते हैं। संगत वाद्यों में चिंकारा, सारंगी, तबला, मंजीरा, हारमोनियम आदि होते हैं। वादन के बीच दो बार पूरी पंक्ति और तीसरी बार आधी पंक्ति दोहराई जाती है। इस रामलीला में गाँव के हर समुदाय की भागीदारी रहती है। पात्रों की वेशभूषा पारंपरिक होती है। कोटा में 1950 में हुए अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन के आयोजन में इस रामलीला का मंचन हुआ तब कोटा के दरबार ने कलाकारों का सम्मान किया। इसका मंचन चित्रकूट में 1986-87 और इससे पूर्व अयोध्या में 1983 एवं 1988 में हुआ।

14 वीर विनोद : कविराजा श्यामलदास, सज्जन यन्त्रालय, उदयपुर 1890 ई., श्लोक 30

इस क्षेत्र की एक रामलीला की ढाई कड़ी के छन्दों को एक डायरी में पीपल्दा के स्व. गोविंदराम भट्ट ने लिखा है। यह 2000 ई. में तैयार की गई। इसमें एक पृष्ठ पर अंकित है—

तान— (राजा जनकजी की रावण से)

तान— मने कोई नहीं दीखे बलवान, वृथा प्रण लीनो श्री भगवान,

दोहा— नहीं उठ्यो यो धनुष, पटक भाथो भर जारे देख, पुथा तूं क्यों करता है॥ टेक॥

तोड़— देवन की ताकत नहीं सरे, असुर गए सब हार, मने कोई नहीं दीखे बलवान...।

दोहा— रावण कुम्भकरण, बाणासुर, सब ही लिया बजाव, जहाँ तक धनुष उठ्यो यो नाही...॥

अटरू की धनुषलीला

इसी प्रकार अटरू में धनुषलीला होती है जो रामलीला का संक्षिप्त रूप है। चैत्र में यह लोकोत्सव के रूप में तीन दिन तक होता है। इसमें गणगौर (चैत्र शुक्ला तृतीया) के दिन ताराराव के मन्दिर पर राम

अटरू राजस्थान में धनुष लीला के लिए तैयार शिव धनुष।

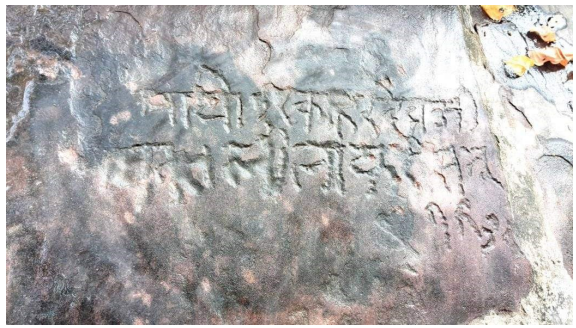

अटरू में गणेश मन्दिर पर लगा शिलालेख : "माधोपुर का हरदेव जी धनष लीला करे स (व) त् 1932"

चित्र : राकेश शर्मा

विवाह के लिए विनायक स्थापना (वन्याक थरपना) होती है। लाल बिहारी मन्दिर पर लगभग 30 फीट लम्बा शिवधनुष बनाया जाता है। इसमें पहले दिन राम -लक्ष्मण के साथ गुरु विश्वामित्र का प्रसंग दिखाया जाता है। दूसरे दिन ताड़कावध का प्रदर्शन होता है। तीसरे और समापन दिवस शोभायात्रा निकाली जाती है। सीता स्वयंवर में धनुषभंग, परशुराम आगमन, लक्ष्मण-परशुराम संवाद और फिर राम-जानकी विवाह के साथ राजतिलक दिखाया जाता है। इस क्षेत्र के श्रीराकेश शर्मा ने गणेशमन्दिर पर लगे एक शिलालेख का चित्र हमें भेजा है। इसमें लिखा है— **"माधोपुर का हरदेवजी लीला करी, संवत् 1932."** इससे लगता है कि यह लीला 148 वर्ष पहले प्रारम्भ हुई।

2. शेखावाटी में मंचित होनेवाली मूक रामलीला

मारवाड़ी व्यापारियों, सेठियों के लिए प्रसिद्ध शेखावाटी क्षेत्र के झुंझनू जिले के बिसाऊ कस्बे की रामलीला के प्रारंभ का इतिहास 166 पुराना ज्ञात होता है। प्रथम स्वाधीनता संग्राम के दौरान वाराणसी से साध्वी जमुना यहाँ आईं और कुछ बच्चों को साथ लेकर रामलीला आरम्भ की। बच्चों से संवाद

अलवर राजस्थान की ऐतिहासिक रामलीला। हर घर से भागीदारी।

अलवर के कोटकासिम, तिजारा में दिन में होती है रामलीला

अदायगी को कठिन जानकर बिना बोले ही रामायण के प्रसंगों को दिखाने की पहल हुई जो आज तक यथावत है। इस रामलीला में पूरा कस्बा भाग लेता है। भागीदारी उन लोगों की भी होती है जो व्यापार आदि कारणों से बाहर जा चुके हैं। वे निश्चित समय पर यहाँ आकर व्यवस्था संभालते हैं। जे. के. ग्रुप के संस्थापक सिंघानिया परिवार ने अपनी हवेली देकर इस रामलीला को प्राणदान दिया है। उसी में रामलीला के साजो-सामान रहते हैं। वर्तमान में 90 प्रतिशत कलाकार और सहयोगी प्रवासी होते हैं।

3. अलवर दिन में होने वाली रामलीला

राजस्थान के अलवर जिला दिन में होने वाली रामलीला के लिए प्रसिद्ध है। यह रात्रि में नहीं होती। इसकी प्रसिद्धि इसलिए भी है कि इसमें किरदार डॉक्टर, प्रोफेसर, सैनिक, वकील आदि भी अदा करते हैं। शिवाजी पार्क में सजे मंच के पर्दे बहुत सजीले होते हैं। यह 75 वर्षों से हो रही है। पुराना तांगा स्टैण्ड इसकी स्मृतियां संजोये हुए हैं। रामलीला आयोजन समिति गठित है। यहाँ पूरा मैदान मंच होता है और खुले में जब रावण तथा श्रीराम की सेनाओं का संघर्ष होता है तो पूरा नगर उमड़ पड़ता है। यहाँ परम्परानुसार मुस्लिम परिवार रावण का पुतला और लंकापुरी की रचना करते हैं। इस जिले के कोटकासिम में करीब डेढ़ सौ सालों से रामलीला हो रही है।

मेवाड़ की पुतली रामलीला

राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में कावड़ और कठपुतली में रामलीला की परम्परा भी देखने को मिलती है। कावड़ चलता-फिरता काष्ठ मन्दिर होता है और उसमें रामलीला को चित्रित किया जाता है। इसका पाठक जिसको भोपा कहा जाता है, गुग्गुल आदि की धूप देकर अपने यजमान के यहाँ रामजन्म से लेकर राज्याभिषेक तक के प्रसंगों का क्रमिक रूप से वाचन करता है। इसको रामायण या रामलीला कहा कहा जाता है। इसमें वाचक यथावसर संवादों को छन्दबद्ध रूप में प्रस्तुत करता है और सुनने वाले हुंकारा देते रहते हैं।

कठपुतली की रामलीला पर आधारित विस्तृत अंकानुसार प्रस्तुतियाँ उदयपुर के भारतीय लोककला मण्डल ने तैयार की और देश में अनेक स्थानों पर उनका मंचन किया है। पद्मश्री देवीलाल सामर ने इसके अलग-अलग अंशों को शब्द दिए जिनको पुंपाड़ी (पर्णवाद्य), ढोलक, हारमोनियम, सारंगी आदि वाद्यों के वादन के साथ मंचित किया जाता रहा है। उन्होंने स्वयं गंगा पार जैसी प्रस्तुति पुरुषपात्रों को लेकर भी की। यह केवट प्रसंग पर आधारित थी। कठपुतलियों की प्रस्तुति मंच बनाकर की जाती है। संस्कृत में पुतली के दारूयोषा, पुत्तलिका, क्रीडनक आदि पर्याय मिलते हैं। विदुरनीति, देवीभागवत, चरकसंहिता आदि में इसके एकाधिक सन्दर्भ मिलते हैं।

बिसाउ के गढ़ की रामलीला

बिसाऊ के गढ़ के आगे 300 फीट के रास्ते में ही इस लीला का मंचन किया जाता है। आश्विन मास में यह पूरे एक पखवाड़े तक चलती है। लगभग 500 कलाकारों का योगदान होता है और रोजाना तीन घंटे तक मंचन होता है। वाद्य वादन के साथ प्रसंग के विवरण को गाया जाता है और कलाकार अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं। इस आयोजन की समाचार पत्रों में अच्छी कवरेज होती है। इसको अयोध्या के

बिसाऊ की बिन संवाद वाली रामलीला

बिसाऊ राजस्थान में दिन में होने वाली मूक रामलीला के दो पात्रों की वेष-भूषा

रामायण संग्रहालय में महत्त्व मिला है।

सन्त हनुमानदास ने स्थापित रामलीला

इसके अतिरिक्त, मेवाड़ क्षेत्र में रामलीला आयोजन वैष्णवों द्वारा किया जाता रहा है लेकिन आकोला, सांसेरा आदि गाँवों में छीपा, वैरागी और अन्य कलाकारों ने भी पहल की है। इनमें रामचरित मानस, रामरसायन और राधेश्याम रामायण को आधार बनाया जाता है और गद्य तथा पद्यबद्ध संवाद के साथ वाद्य संगति दर्शकों में कौतुक का संचार करती है। मेवाड़ में रामलीला के आयोजन की पहल नृसिंहद्वारों की स्थापना के साथ हुई। तब खम्भफाड़ लीला के साथ रामलीला भी की जाती थी। इनको अयोध्या से निकले सन्त हनुमानदास ने स्थापित किया। हनुमानदास के शिष्य देवादास नाम जारी मुझे एक ताम्रपत्र मिला है। यह महाराणा भीमसिंह के शासनकाल, वैशाख शुक्ला तृतीया, संवत् 1880 का है। इसमें ओरवाडिया की सराय (वर्तमान में देबारी स्टेशन के समीपस्थ गाँव) में 20 बीघा भूमिदान का उल्लेख है—

श्रीरामो जयति। श्रीगणेश प्रसादातु। श्रीएकलिंगजी प्रसादातु। सही। महाराजाधिराज महाराणा श्रीभीमसींघजी आदेशात् महंत देवादास चेला (शिष्य) हणुमानदास कस्य, गाम ओरवाड्या की सराय म्हे ध्रती बीगा 20 पीवल (सिंचित) तथा राषड़ (असिंचित) रेहट सुतार टोघाये लेन ऊमेदा ठाकुरजी श्री रुगनाथजी ठाकुरजी श्रीगिरधारीजी हे बालभोग सामगरी सारू अमावस री परबी महे ऊदक आघाट श्रीरामा अरपण करे चड़ाई, लागत-विलगत रूष, व्रष, सरब सुदी सो आदी तो ठाकुरजी श्रीरुगनाथजी रे, आदी ठाकुरश्री गिरधारीजी रे चडाई, सो कणी वात री चोलण वेगा न्हीं, स्वदत्ता प्रदत्ता वाये हरन्ति वसुन्धरा, षष्टी व्रष सहस्राणी विसटायां जायेते क्रमी। प्रतदुवे पंचोली वीसननाथ लीषता पंचोली सुरतसींघ नाथुरामोत, संवत् 1880 रा वेसाष सुदी 3.

(उदयपुर के नृसिंहद्वारा में उपलब्ध ताम्रपत्र)

इससे यह ज्ञात होता है कि उक्त सन्तों ने गाँवों में रामलीला की पहल की राज्याश्रय में की होगी।

मेवाड़ के भूपालसागर के मुरलीधरदास और गुड़ली गाँव के गंगारामदास वैष्णव आदि बड़े नामी रामलीलाधर्मी रहे हैं। चौमहला (झालावाड़) के विनोद शर्मा का रामलीला दल गाँव-गाँव रामलीला का मंचन करता रहा है। मेवाड़ में रामचरित मानस के पाठ के साथ रामलीला का मंचन होता है। इनमें हनुमान उड़ान को सजीव रूप से दिखाया जाता और उसको देखने के लिए घर के घर उमड़ पड़ते। आरम्भ में मोहन मोहिनी के रचयिता गोस्वामी बिन्दु महाराज का यह भजन प्रस्तुत करने की परम्परा भी अनेक दलों में रही है—

हमें निज धर्म पर चलना बताती रोज रामायण।
सदा शुभ आचरण करना सिखाती रोज रामायण॥
जिन्हें संसार सागर से उतर कर पार जाना है,
उन्हें सुख से किनारे लगाती रोज रामायण॥
कहीं छबि विष्णु की बाँकी, कहीं शंकर की है झांकी,
हृदय आनन्द झूले पर झुलाती रोज रामायण॥
सरल कविता के कुंजों में, बना मन्दिर है हिंदी का।
जहाँ प्रभु प्रेम का दर्शन कराती रोज रामायण॥
कभी वेदों के सागर में, कभी गीता की गंगा में।
सभी रस बिन्दु में मन को डुबोती रोज रामायण॥

हारमोनियम, नक्कारों और ढोलक जैसे पारंपरिक वाद्यों की संगत पूरे समय दर्शकों को बाँधे रखती।

कहना न होगा कि रामनाट्यों की पीठिका पर युगानुसार रामलीला का पल्लवन हुआ जैसा कि हमें हनुमन्नाटक से विदित होता है कि रामनाटकों की परम्परा बहुत पुरानी है। रामलीला लोक में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित की सुन्दर प्रस्तुति होती है। नवाह्न पारायण की तरह रामलीला में प्रस्तुति दिवस के लिए विश्राम होते हैं। यह गाँवों में मर्यादाओं और मानवीय मूल्यों की स्थापना का सुन्दर उपाय है। गाँव वाले रामलीला के कलाकारों को अपने घर न्यौतकर भोजन करवाते हैं। इनके आयोजन में गाँव की पूरी भागीदारी रही है। नवरात्रि-जैसे उत्सवों में रामलीला का आयोजन शक्ति के समानान्तर श्रीराम के चरित का गुणगान करना लोक को बहुत रुचिकर लगता है। यह अनुरंजन के साथ ही मूल्यों के विकास में चेतना के बीज से कम नहीं। रामलीला से राग-रागिनियों का संरक्षण होता है। इससे अभिनय, गायन, वादन आदि की प्रेरणा भी मिलती है। इस प्रकार यह लोकशिक्षण का सुन्दर पक्ष लिए है।

***

डॉ. ममता मिश्र 'दाश'
संस्थापक सचिव,
प्रो. के.वी. शर्मा रिसर्च इंस्ट्च्यूट, अड्यार, चेन्नई

भारत के पूर्वोत्तर भाग का तटीय उत्कल प्रान्त अपनी संस्कृति के संरक्षण के लिए महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। यहाँ परम्परा की दृष्टि से दक्षिण और उत्तर भारत की संस्कृतियों का संगम हुआ है। उत्तर भारत में सनातनी विचारधारा के जो क्षयकारी आन्दोलन 19वीं शती में हुए उससे यह क्षेत्र बहुत हद तक बचा रहा, जिसके लिए यहाँ की पृथक् भाषा तथा लिपि अपना बहुत योगदान निभाती रही। अतः आज भी भारतवर्ष का यह भू-भाग अपनी प्राचीन संस्कृति को मूल रूप में सुरक्षित रखने में समर्थ है। इस विशिष्ट भू-भाग में भी रामकथा तथा रामकथा की नाटकीय प्रस्तुति की अपनी परम्परा रही है। वाल्मीकि-रामायण के चार क्षेत्रीय संस्करणों की दृष्टि से यहाँ पूर्वोत्तर भारतीय पाठ का प्रचार रहा है, जो अपनी प्राचीनता के लिए प्रख्यात है। अतः यहाँ की लोकपरम्परा का स्वयं में विशिष्ट है। लेखिका ने उत्कल की संस्कृति में उड़िया भाषा की रामलीला-परम्परा पर प्रकाश डाला है। सूचनानुसार, जगन्नाथ-क्षेत्र की रामलीला तो इतनी विशेषता के साथ प्रदर्शित की जाती है कि इस पर अलग से विस्तृत विवरण की अपेक्षा है, फिर भी लेखिका ने इसका दिग्दर्शन तो करा ही दिया है!

मनुष्य हमेशा मनोरंजन प्रिय है। चार वेदों के साथ भरतमुनि प्रणीत नाट्यशास्त्र पंचम वेद के रूप में परिचित कराने से मानवसमाज के नृत्य, नाट्य, संगीत, अभिनय के प्रति रुचि को दर्शाता है। रामायण, महाभारत और भागवत पर आधारित सहस्र सहस्र नाटक, एकांकिका, लीलाएँ रचित हैं। उद्देश्य मनोरंजन तो है ही, पर भगवान् की लीला के अनुसरण पूर्वक भगवत् शरण जैसा उद्देश्य भी है।

लोकप्रवाह में रामायण कथा की धारा वाल्मीकि रामायण के समय से प्रचलित है या रामायण के परवर्त्ती कालीन रचनाओं से चली आ रही है, यह कहना थोडा मुश्किल है। पर मन्दिरों के शिलागात्रों पर श्रीरामजी का स्वर्णमृग का शिकार, रावण का कैलास पर्वत उखाडना, बाली-सुग्रीव युद्ध आदि उत्कीर्ण हैं।

रामायण कथा के प्रति श्रद्धा हमारी संस्कृति में हमेशा रही है। मनोरंजन के लिये तरह तरह की नाट्य परम्पराएँ भारतमें प्रचलित हैं। यह सब पुरुषानुक्रमेण हजारों सालों से चली आ रही है और अभी तक लोकप्रिय भी है। आधुनिक चलचित्र, दूरदर्शन आदि इस लोककला की लोकप्रियता को थोडी सी भी हानि नहीं पहुँचा पायी है।

जरूरी नहीं कि ये सब वाल्मीकि रामायण पर आधारित हों। श्रीराम-सम्बन्धी पुराण, काव्य, कविता, नाटक, लीला आदि का उत्स वाल्मीकि रामायण है ही, पर बाद में प्रान्तीय भाषा में रचित पुराण या इतिहास साधारण लोगों के लिये आकर्षक रहा है। साधारण लोग तो वाल्मीकि रामायण तक पहुँच नहीं पाते हैं पर

श्रीराम तक पहुँचना उनका श्रेय रहा है। इसीलिये प्रान्तीय भाषा में विरचित काव्य कविता ज्यादा प्रभावशाली रहा है। वाल्मीकि रामायण के आधार पर विरचित 'जगमोहन रामायण' (बलराम दास द्वारा षोडश शताब्दी में विरचित), जो कि भावानुवाद है उत्कल प्रान्त के लोगों का प्रिय रहा है। उसके बाद सप्तदश, अष्टादश शताब्दी में विरचित राम कथा मूलक बहुत सारी रचनाएँ लोक नाट्य परम्परा का उत्स रहा है।

वाल्मीकि रामायण पर आधारित जितनी कृतियाँ ओड़िआ भाषा में विरचित हैं वे सब पाँच छः सौ साल पुराना ही हैं। उस श्रेणी में पुराण, काव्य, कविता, महाकाव्य आदि सब हैं। साधारण जनता के लिए प्रान्तीय भाषा ही भगवत्-शरण और स्मरण का माध्यम हैं।

उत्कल के आदिकवि सारलादास ने महाभारत की रचना की। इसके वन पर्व में रामायण की कुछ घटनाएँ सन्निविष्ट हैं। अष्टादश शताब्दी के कवि उपेन्द्र भंज का **'वैदेहीश विलास'** जो 'व' आद्यानुप्रासक है बहुत लोकप्रिय है, पर बाद में रामभक्ति को सामने रखकर कुछ रामलीलाएँ विरचित होने लगी। 1730-1790ई. के कवि वैश्य सदाशिव के द्वारा विरचित 'रामलीला' बहुत जगहों पर नाट्य रूप लेती है।

बाद में अनंग राजेन्द्र की 'रामलीला' जो कि कांडों के आधार पर सात कांडों में विरचित होकर बहुत लोकप्रिय रही है। नाट्य रूपांतर करने में यह रामलीला बहुत सहायक भी है। बाद में बहुत विद्वानों के द्वारा श्रीराम सम्बन्धीय रचना हुई है। जैसे– 'रामवनवास', 'सीताविवाह', 'श्रीराम का शिवधनुभंग', 'परशुराम विजय', 'सेतुबंध'-जैसी बहुत सारी रचनाएँ तो बहुत हैं, पर केवल रामलीला नाम पर भी बहुत रचनाएँ भी मिलती हैं।

उत्कल प्रान्त के हर क्षेत्र में समुद्री तटवर्ती हो या पहाड़ी अंचल हो या वनांचल हर जगह में रामलीला भिन्न भिन्न रूपसे मनायी जाती है। पर रामलीला मुख्यरूप में समुद्री तट अंचल में ज्यादा धूमधाम से मनाई जाती है।

रामलीला के साथ साथ कुछ लोकनाट्य जैसे यात्रा, पाला, दासकाठिआ, धनुयात्रा, छउ नृत्य, चढ़ेइ-चढ़उणी, सापुआ-सापुआणी, केला-केलुणी, हर-पार्वती, दण्डनाट, पाटुआनाट आदि प्रमुख रूप में श्रीराम विषयक हैं।

रामलीला ज्यादा तरह रामनवमी के समय मनायी जाती है और रात में ही होती है। स्थान विशेष के साथ नौ दिन, दस दिन, चौदह दिन तक चलती है।

वाद्य और वादक, संगीत और गायक, कलाकारों को लेकर हर जगह चलती है। कलाकारों में राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान, रावण, कुम्भकर्ण, सिंहिका, शूर्पणखा जैसे पात्र हर क्षेत्र में रहते हैं।

जब राम, लक्ष्मण, सीता जैसे पात्रों के चेहरे पर उचित हिसाब से रंग लगाया जाता है। परन्तु हनुमान, जाम्बवान्, सिंहिका, शूर्पणखा, रावण आदि पात्रों के लिए मुखौटा बनाया जाता है। सबसे महत्वपूर्ण चरित्र रहा है हनुमान का। इस चरित्र को चयन करने में ज्यादा सावधानी रखनी पड़ती है।

गाँव के चौराहें, उन्मुक्त क्षेत्र, शहर के चौराहें रामलीला प्रदर्शन करने का स्थल रहा है। प्रायतः रामलीला के लिए स्वतन्त्र मंडप नहीं रहता है। चौराहे पर निर्मित मंडप के चारों तरफ दर्शक बैठते हैं। प्रायतः तीन तरफ पुरुष दर्शकों के लिए हैं तो एक दिशा नारी दर्शकों के लिए सुरक्षित रहता है।

राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान, रावण जैसे मुख्य कलाकारों को पालकी पर बिठा कर लाया जाता है। सारे संगीतकार, वादक गोष्ठी, अभिनेता अभिज्ञ होते हैं और बहुत ही उत्साहपूर्वक इसमें भाग लेते हैं।

कटक शहर की रामलीला –

कटक जो ओड़िशा की राजधानी भुवनेश्वर के पास मतलब 20-25 कि.मि. दूरी पर है, वहाँ बहुत प्राचीन काल से रामलीला मनायी जाती है। कटक नगर में एक रामलीला समिति है जो रामलीला प्रदर्शित करने का पूरा दायित्व लेती है। ज्यादा तरह अभिनेता कटक शहर से या पासवाले गाँव से होते हैं। यहां लीला एक महीना तक चलती है। शहर में स्थित मारुति मंडप पर चलती है।

दशपल्ला की रामलीला

दशपल्ला एक गडजात अंचल है जो ओड़िशा की राजधानी भुवनेश्वर से 130 कि. मि. दूरी पर है। आधुनिक प्रदेश जिल्ला स्थिर होने से पहले यह एक गडजात ही था। अभी यह अंचल नयागड़ जिल्ला अन्तर्भुक्त है। तब भंज वंश के राजा इसका शासन अधिकारी थे। राजा पद्मनाभ भंज (1701-1753) के समय से यहाँ रामलीला नाट्य परम्परा का प्रारम्भ हुआ। उन्होंने अपने दुर्ग को पुराने किले से नये किले तक लिया और उसका नाम रखा – 'कुंजवनगढ़'। उसी गढ़ में उनका बेटा त्रिलोचन भंज तीन देवताओं की स्थापना की थी। राधाकांत स्वामी, जगन्नाथ स्वामी और रघुनाथ स्वामी।

वहाँ रामलीला चलाने के पीछे एक बहुत बड़ा कारण है। त्रिलोचन भंज ने रघुनाथ मूर्ति सिर्फ सीता माँ के साथ स्थापना की थी। वहाँ न लक्ष्मण है न हनुमान। एक दिन राजा के सपने में हनुमान आये और बोले कि कुछ दूरी पर वार्दामणि (स्थानीय पंडित इस शब्द को वरदमणि का अपभ्रंश हैं) पहाड़ की एक गुफा में वे निवास करते हैं और उनकी प्रतिमूर्ति नीचे राम सीता के पास प्रतिष्ठा करें। इसके बाद राजा के कहने पर उनके मन्त्री पारिषद वर्ग वार्दामणि गुफा में हनुमान को पाया और उनकी प्रतिमूर्ति को श्रीराम और सीता माँ के मन्दिर के सामने एक मन्दिर बनाकर स्थापना की। इसके बाद दशपल्ला का नाम महावीर क्षेत्र पड़ा। और तबसे रामलीला का पाठ नियमित रूप से होने लगा।

लेकिन इसके 50-60 वर्ष के बाद उनके वंशधर गौरचंन्द्र भंज रामलीला यात्रा का प्रारम्भ किया। पर उसका नाम रखा गया लंकापोड़ि– लंकादहन। पर यह नहीं कि, यहाँ सिर्फ लंकादहन का कार्यक्रम है। यहाँ रामलीला का पूर्ण रूपसे परिवेषण होता है। रामलीला की यह यात्रा 14 दिन तक चलती है। बहुत सारे अभिनेता राजकीय वेशभूषा में इस रामलीला में भाग लेते हैं। यह सब वेशभूषा राज परिवार से आती है।

इस 'लंकापोड़ि' रामलीला का रचयिता राघव दास है। मतलब अभी तक दशपल्ला में जो रामलीला चली आ रही वह राघव दास के द्वारा लिखी गयी रामलीला के आधार पर।

रामनवमी के दिन इस लीला का पहला अंक रामजन्मोत्सव से शुरू होती है। छन्दोबद्ध इस रामलीला की पहली कथा है राम जन्मोत्सव। लीला प्रारंभ के पूर्व दिन के पहले दिन से सब अभिनेता व्रत धारण करते हैं और जन्मोत्सव के दिन पर सब इकट्ठे होकर प्रसाद सेवन करते हैं।

2. विश्वामित्र के अनुरोध पर श्रीराम और लक्ष्मण का सिद्धवन जाना, ताड़का वध।
3. शिवधनुभंग और सीता विवाह
4 गुहक के साथ बन्धुता
5. सीता हरण
6 सुग्रीव के साथ बन्धुता
7. हनुमान के द्वारा लंकादहन
8. सेतुबंध
9. कुंभकर्ण वध
10. मेघनाद और स्थूलजंघा का वध
11. रावण वध
12. श्रीराम, लक्ष्मण और सीता का अयोध्या प्रत्यावर्तन
13 श्रीराम का राज्याभिषेक

यहाँ चौदह दिवसीय लीला में 13 दिन की लीलाएँ वर्णित हैं। मतलब एक लीला कम है; क्योंकि सीताविवाह के बाद एक दिन लीला बन्द रहती है।

दशपल्ला की यह लंकापोड़ि यात्रा विगत लगभग 250 सालों से प्रचलित होती आ रही है। इस लीला से प्रभावित होकर पार्श्ववर्त्ती अंचलों में लंकापोड़ि मनायी जाती है। जैसे राउतपड़ा लंकापोड़ि, नूआगां लंकापोड़ि, रासंग लंकापोड़ि जैसी बहुत हैं पर यह सब दशपल्ला लंकापोड़ि के बाद ही मनायी जाती है।

बोंडा आदिवासियों के द्वारा पालित रामलीला –

बोंडा सम्प्रदाय के विश्वास के अनुसार श्री राम वनवास के समय बोंडा में पहुँचे थे। वहाँ के झरना का पानी पिया। बोंडा सम्प्रदाय की स्त्रियाँ अपने शरीर के ऊपरी हिस्से को वस्त्रों से नहीं गहनों से ढकती हैं। इसके लिए उनकी परम्परा में एक लोककथा प्रचलित है कि, सीता माँ वहाँ झरना में विना कपड़ा नहा रही थी और जब उन्हें देखकर स्त्रियाँ हँसने लगी तो सीता माँ का श्राप था कि वे ठीक कपड़े नहीं पहन पायेंगी।

बोंडा सम्प्रदाय के कुछ लोकगीतों में श्रीराम लक्ष्मण सीता वर्णित होते हैं। राम लखन दो भाई हैं। राम हर चलाते हैं। लखन जमीन में समानता लाते हैं और सीता वीज वपन करती है। इनके द्वारा मनायी गयी रामलीला में राम लखन की मानवीय लीला ही देखने को मिलता है। सीता हरण के बाद राम लखन का जोर जोर से रोना, रावण के ऊपर क्रोध करके उसको गाली देना, सीता माँ को योगमाया के रूप में परिकल्पना करना आदि बहुत सारी प्रथाएँ हैं।

बौध की रामलीला –

ओड़िशा की राजधानी भुवनेश्वर से लगभग 230 कि.मि. दूरी पर बौध है। यह एक स्वतन्त्र जिला भी है। बौध अंचल में परिपालित रामलीला का एक स्वतन्त्र महत्त्व है। इनके लिए बौध ही अयोध्या है। वहां पर बहती हुई नदी महानदी उनके लिए गंगा है। महानदी के तट पर स्थित मर्यकुंड उनकी मिथिला है। वहाँ का जो सम्भ्रांत परिवार वही सूर्यवंशी राजा होता है।

दशहरा में देवी के सम्मुख रामायण पुस्तक रखकर पूजा करते हैं। दशहरा समाप्ति के बाद पुस्तक खोल कर पढ़ते हैं और तबसे रामलीला की तैयारी शुरू हो जाती है।

रामनवमी के अवसर पर सारे अभिनेता संन्यास व्रत धारण करते हैं। मत्स्य, मांस, मद्य, तेल आदि से सब अभिनेता दूर रहते हैं। यह यात्रा 16 दिन तक चलती है पर अभिनेता सब 18 दिनों का व्रत पालन करते हैं। मतलब एक दिन पहले से शुरू कर समाप्ति के बाद और एक दिन व्रत के साथ रहते हैं। सात कांड रामायण को 16 दिनों में नाट्य रूप देते हैं।

1. श्रीराम जन्म
2. बाल्यलीला और शिवधनुभंग
3. राम वनवास
4. खर, दूषण, त्रिशिरा वध,
5. सीता चोरी
6. बाली वध
7. लंकापोड़ि (लंकादहन)
8. सेतुबंध
9. नागफास बंधन
10. कुम्भकर्ण वध
11. तारिणी सेन वध
12. इन्द्रजित वध
13. लक्ष्मण शक्ति भेद
14. महीरावण वध
15. नरान्तक वध
16. रावण वध

यहाँ दशशिर रावण के बदले दश गाँवों से दश रावण निकलते हैं। इस यात्रा में दश रावण की परिकल्पना की गयी है। इसमें दूसरे धर्म के लोग भी

बड़ी उत्सुकता के साथ भाग लेते हैं। यहां समग्र अंचल में रामलीला के अवसर पर कोई जीवहत्या न हो उसका ख्याल रखा जाता है। सिर्फ जाम्बवान् के चेहरे पर मुखौटा रहता है, बाकी सबके चेहरे पर रंग लगाया जाता है। रावण की कुशपुत्तलिका बना कर उसका दाह किया जाता है।

अपने बौध को अयोध्या, मर्यकुंड को मिथिला, महानदी को गंगा नदी मानना इस विश्वास में इन लोगों का रामचरित में घुल-मिल जाने को दर्शाता है।

साहियात[1] –

श्रीजगन्नाथ क्षेत्र पुरी में कई सौ सालों से प्रचलित 'साहियात' मुख्यतः रामायण पर आधारित है। पुरी शहर में लगभग तीस से ज्यादा साहि होती हैं। जैसे दोलमण्डप साहि, बालिसाहि, मार्कण्डेश्वर साहि, हरचण्डी साहि आदि। और यहाँ पर प्रचलित यात्राएँ साहियात के नाम पर प्रसिद्ध हैं। इन तीस साहियोंमें से मुख्य सात साहि रामलीला के सात काण्डों का दायित्व लेते हैं। वे सात घटनाएँ–

1. प्रथम दिवस– श्रीरामजन्म– (इसमें आयोजक के रूप में एक ही अनुष्ठान है– गण्डमाल यागा[2]),
2. सीताविवाह प्रस्ताव और सीताविवाह– (आयोजक – भोग यागा और अलार कोट्)
3. ऋष्यश्रृंग यात्रा (यज्ञरक्षा पर्व), खरदूषण वध (इन्हें सुबाहु और मारिच भी बोलते हैं), नाक कान नृत्य (शूर्पणखा का प्रतीक स्वरूप) (आयोजक– बारबाटि यागा और ग्यारह यागा)
4. रामवनवास लीला (पहले इसे परशुराम लीला कहा जाता था) (आयोजक– राहास महान्ति यागा और सात यागाएँ)
5. शूर्पणखा लीला (आयोजक– हरचण्डी साहि)
6. छद्मवेशी रावण-लीला, माया मृगलीला, सीताचोरि-लीला (आयोजक– सुन्दरा यागा, विशिनियागा जैसे 25 आयोजक मिलते हैं)
7. लंकादहन लीला-(आयोजक– यदुतिआडि यागा और छह यागाएँ)
8. सेतुबन्ध लीला, रावणवध लीला, अंगद वध लीला – (आयोजक– खुण्टिआ यागा और सात यागाएँ)
9. रामाभिषेक (आयोजक– अडङ्गतिआडि यागा और तीन यागाएँ)

इन सब कार्यों में अलग अखाडा, अलग अलग साहि नियुक्त होते हैं। बहुत सारे मेढ[3] सामिल होते हैं। सबका निर्दिष्ट दायित्व रहता है।

रामायण में नन्दिग्राम का विशेषत्व बहुत अधिक है। पुरी की रामलीला में पुरी स्थित जगन्नाथ वल्लभ[4] को नन्दिग्राम मानते हैं। श्रीमन्दिर से श्रीराम, लक्ष्मण, सीता और हनुमान की उत्सव मूर्त्तियां जगन्नाथवल्लभ में पधारने के बाद गौडबाड साहि से भरत और शत्रुघ्न के रूपमें दो कलाकार पहुँचते हैं। साहियात की सारी लीलाएँ जगन्नाथवल्लभ से प्रारम्भ होती हैं। परन्तु एक लीला जगन्नाथवल्लभ से सम्बन्धित नही है। वह है सेतुबन्ध प्रतिष्ठा लीला। कुछ विश्वास के आधार पर यह माना जाता है कि, सेतुबन्ध की प्रतिष्ठा रावण के द्वारा की गयी थी। अतः यह लीला यमेश्वर मन्दिर में पालित होती है। मन्दिर के प्रांगण में स्थित वट वृक्ष के नीचे यह यज्ञ किया जाता है। रामायण के अनुसार इस वट वृक्ष का नाम निकुम्भिला वृक्ष पडा है।

अभिनेताओं के रूपमें पुरी के हर साहि से इस रामलीला में भाग लेते हैं। हर दिन की लीला के लिये साहि, कलाकार, सहयोगी कलाकार, वेशभूषा सबकुछ निर्दिष्ट रहता है। लीला प्रारम्भ से पहले अभिनेताएँ

1 'साहि' शब्द जो शाखा शब्द से निष्पन्न है। प्रान्तीय भाषा में साहि का मतलब गाँव या शहर के भिन्न भिन्न भाग या शाखा को साहि नाम से जाना जाता है। इन साहियों में यात्रा होने के कारण इसे साहियात बोलते हैं।

2 'यागा'– एक सांस्कृतिक क्षेत्र है। पुरी शहर में बहुत सारी "यागाएँ" हैं।

साहि स्थित देवी मन्दिर में दर्शन कर के दक्षिणकाली मन्दिर जाकर वहाँ प्रार्थना करने के बाद श्रीमन्दिर जाते हैं। यात्रा की तैयारी करने लगते हैं।

प्रथम दिवस–

श्रीरामजन्म। रामनवमी तिथि से प्रारम्भ। इस लीला में अभिनेता के रूपमें श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, विस्वामित्र और दशरथ योग देते हैं। नागा, मेढ, तलवार चालक, बनाटि[5] चालक, फूल मेढ, मकरध्वज, हिरण्यकशिपु और प्रह्लाद सहचारी के रूप में चलते हैं।

अभिनेतागण कालिकादेवी साहि में दक्षिणकाली का दर्शन करने के बाद श्रीजगन्नाथ मन्दिर जाकर देवदर्शन कर राजप्रासाद जाते हैं। जगन्नाथ वल्लभ से फिर यह यात्रा शुरू हो कर माटिमण्डप साहि तक जाती है। प्रत्येक दिवस की लीला को नियन्त्रण करने के लिये एक अखाडे की नियुक्ति होती है। और यह स्थिर है यानि हर साल इनका दायित्व समान रहता है।

मुख्य पात्र– राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, दशरथ और विश्वामित्र।

इस प्रथम दिवस की शोभायात्रा में नागा; मेढ जैसे फूल मेढ, दुर्गा मेढ, काली मेढ, शिवताण्डव मेढ; तलवार चालक; लाठि चालक, बनाटि चालक; मकरध्वज, हिरण्यकशिपु और प्रह्लाद सामिल होते हैं।

दक्षिणकाली अखाडा इस पहले दिवस के दायित्व में रहता है।

द्वितीय दिवस–

सीता विवाह प्रस्ताव और विवाहोत्सव। विवाह प्रस्ताव कार्यक्रम जगन्नाथ वल्लभ में होता है। पर विवाहोत्सव के लिये सब कालिकादेवी साहि को शोभयात्रा के साथ जाते हैं।

मुख्य पात्र– जनक, वसिष्ठ, विश्वामित्र, सीता और परशुराम।

जगन्नाथवल्लभ में विवाह अनुष्ठित होता है। जगन्नाथ के सेवक यहां जनक, वशिष्ठ और विश्वामित्र का दायित्व वहन करते हैं। पर बाहर शोभायात्रा में सब पात्र मिलकर नागा, दुर्गामेढ, चान्दीमेढ और शिवताण्डव मेढ के साथ निकलते हैं।

इसी दश दिवस की यात्रा में बहुत सारे खेलों का प्रदर्शन किया जाता है। एक दस दिवसीय इस यात्रा में कलाकारों के साथ, मेढ तैयार करनेवाले, पात्रों को सजाने वाले, वादक गोष्ठी, नाटक का निर्देशक आदि बहुत सारे लोगों को अपना हुनर दिखाने का अवसा मिलता है। इन सब लीलाओं में सबसे छोटी लीला है सीताविवाह। परन्तु शिवधनु भग्न, और उसके कारण परशुराम का क्रोध, दशरथ की उपस्थिति आदि बहुत सारी कौतूहलोत्पादक घटनाएँ हैं।

धनुभंग को देखकर परशुराम के क्रोध को शान्त करने के लिये कुछ वचनिकाएँ है।

परशुराम के क्रोध को शान्त करने के लिये श्रीराम बोलते हैं– हे परशुराम! मुझे न आपके बाहुबल के बारे में पता था, न कि शिवधनु के वारे में। यह मेरा अपराध है। चपलमति बालकों की धृष्टता को गुरुजन माफ कर देते हैं। शिवधनु तोडकर मैंने जो अपना बल दिखाया, उसे क्षमा कर दीजिए। वास्तविक रूपसे देखा जाय तो मेरे छूने से ही यह धनुष टूट गया। मैंने उसको तोडा ही नहीं, वह अपने आप टूट कर गिर गया। मैं क्या कर सकता हूँ। मुझे क्षमा कर दीजिए।

3 मेढ – एक अधिक रूप से सजावट, जिसे कुछ अभिज्ञ लोग ही बना पाते हैं।

4 जगन्नाथ वल्लभ– यह एक बगीचा जैसा है। मुख्यमन्दिर से लगभग आधा किमि दूरी पर स्थित इस क्षेत्र में श्रीजगन्नाथ, बलभद्र, सुभद्रा और सुदर्शन पूजित हैं। यहां पर स्थित बगीचा श्रीजगन्नाथ का प्रिय है। यहां पर श्रीचैतन्य की प्रतिमूर्त्ति भी है।

यह सब उक्ति प्रत्युक्तियाँ प्रायतः देखा जाय तो ओडिआ भाषा में भिन्न-भिन्न अभिनेताओं के बीच जो कथोपकथन होती है, वह प्रायतः नवम शताब्दी में विरचित महानाटक (हनुमत् कृत) पर आधारित है।[6]

इसी तरह देख जाय तो रामलीला परक यह साहियात श्रीजगन्नाथ मान्दिर से सम्बन्धित है। श्रीमन्दिर से श्रीराम, लक्ष्मण, सीता और हनुमान् की उत्सवमूर्त्ति जाने के बाद सारी लीलाएँ शुरू होती है।

कुछ विशेष बातें पुरी की रामलीला की कुछ विशेषताएँ :

1. त्रयोदशी के दिन पर रामलीला नीति बन्द रहती है।
2. यह श्रीजगन्नाथ जिस पालकी पर बैठते हैं, उस पालकी को विमानवटु सेवक ले जाते है
3. भिन्न भिन्न वाद्य यन्त्रों के साथ सब लीलाएँ चलती है पर श्रीराम की अभिषेक लीला पर कोई वाद्य बजता नहीं।
4. जगन्नाथवल्लभ को नन्दीग्राम का रूप दिया जाता है।
5. इसके आधार पर देखा जाय तो रावण भी बालिसाहि से निकलकर श्रीजगन्नाथ मन्दिर जाता है।
6. कालिकादेवी साहि के लोग रामनवमी के अवसर पर श्रीमन्दिर से चरु पाते हैं
7. दोलमण्डप स्थित 'नूआ तोटा यागा' में वानर सुग्रीव निवास करते हैं।
8. रावण श्रीमन्दिर जाकर आज्ञा माला के साथ चरु पाते हैं बाद में यमेश्वर मन्दिर मे याकर अभिषेक करके सेतुबन्ध प्रतिष्ठा के लिये यज्ञ करते हैं।
9. रामाभिषेक के दिन लक्ष्मण और भरत पादुका लेकर जगन्नाथ वल्लभ पर पहूँचने बाद ही अभिषेक कार्य सम्पन्न करते हैं।
10. पुरी की संस्कृति में रावणपोडि नहीं मनाया जाता है। श्रीराम को जितना सम्मान मिलता है उतना रावण को भी।
11. रावण भी उपदेश देता हें— जनकल्याण जैसा सत्कर्म कल के लिये बाकी मत रखना, असत्कर्म आज मत करना।

केन्द्रापडा के निकटस्थ असुरेश्वर ग्राम पर रामलीला बहुत धूमधाम से मनायी जाती है। रामनवमी से शुरू होकर पौर्णमी तक यह चलती है।

पश्चिम ओडिशा के बरगड में रामलीला दश दिवस तक मनायी जाती है। दक्षिण ओडिशा के कुछ स्थान है, जहां रामलीला बहुत ही धुमधाम से मनायी जाती है।

उपसंहार —

इन सब लीलाओं के पीछे मनोरंजन एक मुख्य कारण तो है ही, पर एक अन्तर्निहित उद्देश्य है कि मनोरंजन के समय भी ईश्वर स्मरण करना। वैसे पूजा करते समय, आपदा आने पर ईश्वर स्मरण होता तो है पर मनोरंजन के समय पर भी ईश्वर स्मरण के साथ साथ उनकी जीवनधारा जैसे बालविनोद, पिता के वचन की रक्षा, वनवास, वनवास के समय भी मुनि ऋषियों की सुरक्षा के लिए दुर्वृत्तों का नाश, सेतुबंध आदि घटनाओं को नाट्य रूप देकर उनकी जीवनधारा के साथ जैसे अभिनेता और दर्शक मिल जाते हैं।

रामलीला का प्रभाव उत्कल प्रान्त के हर क्षेत्र में पड़ा है। किसी किसी जगहों पर विशाल रूप से तो कहीं कहीं कुछ कुछ अभिनेताओं को लेकर उनके चेहरे पर रंग लगा कर ईश्वर की लीला का स्मरण करते हैं।

रामलीला से प्रभावित होकर इसके आधार पर रासलीला, राधाप्रेमलीला, भरतलीला, द्वारकालीला आदि बहुत लीलाएँ प्रचलित होने लगी और अब तक चली आ रही हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात है कि हर क्षेत्र में रामलीला के सारे अभिनेता लीला के पूर्व दिन से लीला की

5 बनाटि— एक लोहे दण्ड के दोनों तरफ आग की गोला रहता है जिसे बनाटि बोलते हैं और अभिज्ञ आदमी ही इसे जोर से घुमा सकता

परिसमाप्ति तक व्रत धारण करते हैं। कुछ स्थानों में श्रीराम के नाम पर यज्ञोपवीत भी पहनते हैं। जैसे वह यज्ञोपवीत उनके लिए प्रतिज्ञा सूत्र ही है। रामायण में वर्णित पहाड, पर्वत, वन, वानर, नदी, झरणा, पक्षी, पशु आदि विषय एक साधारण व्यक्ति के हृदय को छू लेता है।

वेद, वेदांग, पुराण, नाटक, आदि परम्पराओं के साथ भक्ति धारा हमारी संस्कृति में चली आ रही है। पुराण पाठ और वाचन परम्परासे भगवान् का गुणगान तो होता है परन्तु नाट्याभिनय के माध्यम से साधारण जनता पर प्रभाव डालना सहज है। दुःख, सुख, शोक, क्रोध आदि भावों को अभिनेता के चेहरे पर देखकर, उनकी उक्ति प्रत्युक्तियों को सुनकर एक साधारण जनता अनुभूति में ला सकता है। और सात कांड रामायण सुनते सुनते जब युद्धकांड पर कोई साधारण आदमी पहुँचता है तो शायद बाल्यलीला का प्रसंग भूल सकता है पर अभिनय को प्रत्यक्ष रूप में देखता है तो उसका छाप मन में रह जाता है। लोगों के हृदय को छूने के लिए अभिनय ही सर्वोत्कृष्ट माध्यम है। इसीलिए कहा गया है — काव्येषु नाटकं रम्यम्।

सहायक पुस्तक :

1. पुरीर साहियात (in odia), Surendra ku. Mishra, Cuttack, Odisha, 2007
2. Saga of Centuries, The Raamleela of Daspalla, Daspalla, 2015.
3. Influence of Ramayana Tradition on the Folklore of Odisha (online article)

***

बनारस की रामलीला, 1834ई. का दृश्य। *चित्र : जेम्स प्रिंसेप द्वारा बनारस इल्यूस्ट्रेटेड में प्रकाशित*

श्रीरामलीला का वैश्विक स्वरूप

श्री महेश प्रसाद पाठक
"गार्ग्यपुरम्" श्रीसाईं मन्दिर के पास, बरगण्डा,
पो– जिला–गिरिडीह, (815301), झारखण्ड,
Email: pathakmahesh098@gmail.com

परब्रह्म परमेश्वर का विश्वरचनादि कर्म में प्रवृत्त होना तो लोक में आप्तकाम पुरुषों की भाँति केवल लीलामात्र है। इसीके मंचन को लीला-नाटक कहा गया है। रामलीला मर्यादापुरुषोत्तम की उस लीला का अनुकरण है, जिसके माध्यम से उनके आदर्शों को लोक में प्रचारित किया जाता है। अतः 'लोकशिक्षण' इस रामलीला का एक प्रयोजन है। लेखक ने यहाँ तुलसीदास के बाद की रामलीला-परम्परा के इतिहास पर प्रकाश डाला है। कहा जाता है कि तुलसीदास स्वयं रामलीला करते थे जिसमें उनमें रामचरितमानस का गायन होता था औऱ इसी से 'मानस' को लोकस्वीकार्यता और अतिशय प्रसिद्धि मिली थी। लीला-नाट्य के माध्यम से लोकसंग्रह का प्रयोग आसाम में शंकरदेव और उनके शिष्य माधवदेव भी कर चुके थे। अतः मानस के सम्बन्ध में उपर्युक्त सम्भावना आधारहीन नहीं है। इलैक्ट्रॉनिक क्रान्ति से पूर्व, लगभग 25 वर्ष पूर्व तक रामलीला मंचन में किस प्रकार की पवित्रता निभायी जाती थी उसके विवरण के साथ यहाँ लेखक ने वर्तमान में दक्षिण एशियाई देशों में प्रचलित रामलीला के स्वरूप पर भी प्रकाश दिया है।

लोकवत्तु लीलाकैवल्यम्॥

(–ब्रह्मसूत्र : 2.1.32)

उस परब्रह्म परमेश्वर का विश्वरचनादि रूप कर्म में प्रवृत्त होना तो लोक में आप्तकाम पुरुषों की भाँति केवल लीलामात्र है। लीलारमण श्रीराम की लीला का बखान करना किसी के बस में नहीं। वैशाख शुक्ल तृतीया चन्द्रवार, रोहिणी नक्षत्र, द्वितीयप्रहर के शोभनयोग में 'त्रेता' की उत्पति हुई थी। इसीयुग में कौशल्यानन्दन भगवान् श्रीराम का आगमन चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि, दिवस मंगलवार को हुआ था, जब कर्क राशि क्षितिज पर उदित था अर्थात् मध्याह्न काल था, लग्नाधिप चन्द्र के साथ गुरु उच्चस्थ थे, मेष में सूर्यनारायण, तुला में शनिदेव, मीन में आचार्य शुक्र, मकर में राहु तथा वृश्चिक में केतु भी उच्चस्थ थे।

श्रीराम के जन्म के उपरान्त कैकयीनन्दन भरतजी का जन्म चैत्रशुक्ल की दशमीतिथि की बुधवार को प्रातःकाल में आगमन हुआ था और सुमित्रानन्दन लक्ष्मणजी तथा शत्रुघ्नजी का आगमन चैत्र शुक्ल की दशमी तिथि की मध्याह्न वेला के बुधवार को हुआ था। इस प्रकार महाराज दशरथ के चारों पुत्र चतुःपुरुषार्थ के साकार श्रीविग्रहरूप में देखे गये। श्रीराम के सम्पूर्ण जीवन-चरित में भगवत्ता, अलौकिकता, दिव्यता एवं मानवोचित मर्यादाओं के दर्शन होते ही रहते हैं।

प्रस्तुत 'रामलीला अंक' का प्रकाशन समसामयिक होते हुए भी असामान्य ही कहा जा सकता है। इस अंक की विषयवस्तु में रामलीला के दो

'लीला' शब्द की निष्पत्ति 'लीङ्' धातु के साथ 'क्विप्' प्रत्यय करने पर और आदान-अर्थ में पठित 'ला' धातु से 'क' प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है। लीला से खेल, विनोद, मनोरंजन, चरित, केलिक्रीडा, प्रीतिविषयक आनन्द आदि का बोध होता है। तात्पर्य है कि जिससमय पात्र जिसस्वरुप में लीला का सम्पादन करता है, समाज द्वारा वह व्यक्ति उसी चरित वाला पात्र देखा-समझा जाता है।

अर्थ निकाले जा सकते हैं— पहला श्रीराम के लीलाविलास का वर्णन तथा दूसरा रामलीला का मंचन। चूँकि यह अंक नवश्रीसंवत्सर 2080 'नल' नामाब्द का पहला अंक (कुल 129 वें अंक के बाद का यह 130 वाँ) है और रामनवमी का त्योहार भी इसी पक्ष में है, अतः इस सन्दर्भ में कहीं-कहीं रामलीला का मंचन भी किया जाता है।

भगवल्लीला अमोघ होती है, वे अपनी लीला से ही संसार का सर्जन, पालन और संहार करते तो हैं, लेकिन इसमें आसक्त नहीं होते। समस्त प्राणियों के अन्तःकरण के बैठे रहने के बाद भी प्राणियों के ज्ञानेन्द्रिय एवं मन के नियन्ता के रूप में विषयों को ग्रहण तो करते हैं, लेकिन उनसे अलग ही रहते हैं— यही इनका लीलाविलास है। भगवान् की त्रिविध लीलाओं में मुख्यतः नित्यलीला, सृष्टिलीला तथा संसारलीला का नाम आता है। भगवान् की लीला ही वास्तविक लीला है, इन्हीं की दिव्यलीलाओं का प्रदर्शन समस्त संसार में व्याप्त है—

जन्म कर्म च मे दिव्यम्। *(—गीता :4.9.)*

भगवान् के लीला-विस्तार की कोई सीमा नहीं। सांख्यवादियों के लिये प्रकृतिलीला, योगियों के लिये योगलीला, वेदान्तियों के लिये मायालीला, नैयायिकों के लिये परमाणुलीला, वैशेषिकों के लिये द्रव्यलीला, मीमांसकों के लिये यज्ञलीला, सांसारिक लोगों के संसारलीला, कर्मयोगियों के लिये कर्मलीला, प्राणियों के कल्याण के लिये अवतारलीला कही जाती है —

'यस्मात् परं नापरमस्ति किञ्चित्।'

'लीला' शब्द की निष्पत्ति 'लीङ्' धातु के साथ 'क्विप्' प्रत्यय करने पर और आदान-अर्थ में पठित 'ला' धातु से 'क' प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है। लीला से खेल, विनोद, मनोरंजन, चरित, केलिक्रीडा, प्रीतिविषयक आनन्द आदि का बोध होता है। तात्पर्य है कि जिससमय पात्र जिसस्वरुप में लीला का सम्पादन करता है, समाज द्वारा वह व्यक्ति उसी चरित वाला पात्र देखा-समझा जाता है।

कहउँ सुनहु अब रघुपति लीला—

लीला का उद्देश्य विश्वात्मा भगवान् के लीलापूर्ण अवतारों के चरित को नाट्यरूप में स्वीकार करने वाले जीव को विशुद्ध सत्त्व-तत्त्व की प्राप्ति होती है। रामलीलाओं के बारे में किंवदन्ती है कि त्रेता में जब श्रीराम को वनवास मिला था, तब अयोध्यावासी श्रीराम के विरह में उनकी बाल-लीलाओं का स्मरण करते हुए अभिनय किया करते थे।

काशी में सन् 1621 में अस्सीघाट पर तत्कालीन काशीनरेश के समक्ष रामलीला का विमोचन किया गया था। यह रामलीला बाईस दिनों तक चलने के बाद आश्विन की दशहरा के दिन रावण-वध के साथ ही सम्पन्न हुई थी। सन् 1626 में तुलसीदासजी के ब्रह्मलीन होने के बाद काशी स्थित रामनगर की रामलीला को विश्वभर में प्रसिद्धि मिली। इसमें विभिन्न

स्थानों के अतिरिक्त विदेशों के पर्यटक भी इस लीला को देखने आये थे। रामलीला अक्सर दशहरे, रामनवमी -जैसे पर्वों पर अधिकतम आयोजित किये जाते थे।

एक अन्य जनश्रुति के अनुसार रामलीला के प्रणेता के रूप में मेघा भगत का नाम आता है। कहा जाता है कि एकबार श्रीराम इनके स्वप्न में आकर रामलीला करने का आदेश देते हैं, तब से इन्होंने रामलीला का मंचन करना शुरू किया था।

इसीप्रकार, एक अन्य श्रुति के अनुसार स्वयं गोस्वामीजी ने ही अयोध्या एवं काशी के तुलसीघाट में रामलीला का श्रीगणेश किया था। कहा गया है—

"भगवल्लीलामृतं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।"

लीला-नाटक का मंचन एक धार्मिक अनुष्ठान है— जिसमें मनोरंजन-भाव के साथ-साथ चरित-गुणगान, कौतुक-क्रीडा, पूजा, अर्चना, स्तुति, श्रद्धा, समर्पण, एकाग्रता आदि का भाव रहता है।

रामलीला में अधिकांशतः श्रीराम-जन्म, श्रीराम की बाल क्रीड़ायें, भरत-मिलाप, सीता स्वयंवर, रामवनगमन, सीताहरण, लंकादहन, रामराज्य की स्थापना आदि जैसे लीलाओं का मंचन किया जाता है। रामलीलाओं के मंचन में दृश्य एवं लीलापरिदृश्य के अनुसार रंगशाला की सज्जा होती है, जिनमें बड़े-बड़े पर्दे पर तत्सम्बन्धित चित्रकारी की जाती है— जैसे राजमहल में मंचन करना होता है, तब पर्दे पर राजमहल की चित्रकारी की जाती है।

लीला-नाटक के मंचन में नृत्य, संगीत और गायन की प्रधानता होती है, जिनका आधार मुख्यतया गोस्वामीकृत श्रीरामचरितमानस को ही बनाया जाता है। इसका कारण यही है कि श्रीरामचरितमानस की भाषा अवधी, व्रज और देशज है, जिसके शब्दों में सरलता और उसके अर्थों को समझने में सुगमता भी होती है।जहाँ यह लीला का आयोजन होता है, वहाँ प्रचार भी पहले से शुरु करना पड़ता है कि अमुक स्थान पर अमुक समय में रामलीला का आयोजन है, जिससे जनसामान्य को तत्सम्बन्धित सूचना समय पर मिल जाय। लीला-नाटक के मंचन के स्थान पर घेराबन्दी कर लोगों की सुरक्षा का भार भी स्थानीय लोगों के या प्रसाशन के जिम्मे ही होता है। लीला-नाटक के मंचन के मुख्य स्थान पर प्रकाश एवं ध्वनि की समुचित व्यवस्था, लोगों के बैठने के उचित स्थान का प्रबन्धन भी सर्वोपरि माना जाता है।

रामलीला में नाटक-मंचन का यह कार्य आसान नहीं, इसके लिये पेशेवर लोग ही इसका भार वहन करते हैं, जो विषय-वस्तु के अनुसार रंगमंचीय व्यवस्था, संवाद, साज-सज्जा, विषयानुरूप पात्रों की सज्जा एवं संगीत का भी चयन करना होता है। पात्रों में विशेषकर राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान, रावण, कुम्भकर्ण, मेघनाद, शूर्पनखा, वानरीसेना, जाम्बवन्त आदि होते हैं। लीला के पात्रों का चयन बड़ी सावधानी से किया जाया है। शारीरिक सौष्ठव, वय, प्रौढ़ता के साथ कायिक विशिष्ठता का भी समावेश रहता है। अभिनय चातुर्य, योग्यता, वाणी में मृदुता अथवा चपलता, आकर्षक एवं वास्तविकता का वोध कराने वाले परिधान, अभिनय एवं व्यवहारों के साथ-साथ मानस की चौपाइयों, छंदों को कंठस्थ कर यथासमय पर बोलने की कुशलता भी होनी चाहिये। कुछ उदाहरणस्वरूप जैसे राक्षस या राक्षसी-पात्रों के अभिनय के लिये शारीरिक-सौष्ठव के साथ-साथ बृहत्काय का होना आवश्यक होता है, जिससे पुस्तकीय परिज्ञान के अनुरूप पात्रों का वर्णन मेल खाये। लीला-मंचन में निर्देशक पात्रों को आवश्यक निर्देश भी देता है कि उसे अगले क्षण क्या बोलना है, हाव-भाव कैसे होने चाहिये! इसका अभ्यास भी कलाकार करते रहते हैं। मंच के पास ही एक रामायणी बैठकर समयानुसार परिदृश्य के अनुसार ऊँची आवाज में संगीतमय पाठ भी करते हैं— आदि-आदि।

इस प्रकार, एक कुशल समूह ही इस लीला का निष्पादन करती है।

माला उठाना

यहाँ यह ध्यातव्य है कि दिनविशेष के मंचन की परिसमाप्ति पर अगले दिन होनेवाले रामलीला के मंचन का अर्थभार वहाँ बैठे लोगों में से धनी, शुभचिन्तक, समाजसेवी अथवा शहर, कस्बे, गाँव के लोग सामूहिकरूप से या एकल उठाने के रिवाज की प्रधानता भी है— जिसे **'माला उठाना'** कहा जाता है।

लगभग रामलीला समूह के लोग या खासकर पेशेवर रामलीला करनेवाले जो होते हैं, वे यत्र-तत्र इसका आयोजन करते हैं, वे अपने भरण-पोषण का साधन रामलीला को ही अपनाते हैं। माला उठानेवाले व्यक्ति को ससम्मान मंच पर बुलाकर, उन्हें माला पहनाकर उनके द्वारा यह घोषणा भी करवाई जाती है कि अगले दिन होनेवाले रामलीला मंचन से सम्बन्धित लोगों के खाने-पीने का प्रबन्ध या अर्थभार वह व्यक्ति स्वयं वहन करेगा। यह क्रिया (माला उठाना) रोज कार्यक्रम के अन्त में तबतक दुहरायी जाती है जबतक मंचन का कार्यक्रम उस स्थान पर चलता है। इसमें लोग स्वयं को सहयोग देकर धन्यभागी भी समझते हैं।

आरती

दिनविशेष के कार्यक्रम के अन्त में रामजी, हनुमानजी की आरती करने का विधान भी है, तभी कार्यक्रम की समाप्ति को घोषणा की जाती है और कहीं -कहीं प्रसाद वितरण की भी व्यवस्था होती है। इसके साथ ही अगले दिन के मंचन के विषय की उद्घोषणा भी की जाती है, जिससे लोगों के मन में उत्सुकता बनी रहे कि कल का दृश्य और उत्तम होगा। कोई-कोई रामलीला तो महीनों भर दृश्यवार चलती रहती है। यह अनुष्ठान एक मेले का रूप ले लेता है। इस प्रकार, हम यह कह सकते हैं कि रामलीला मात्र खेली ही नहीं जाती

इस प्रकार, हम यह कह सकते हैं कि रामलीला मात्र खेली ही नहीं जाती बल्कि यह जीवन्तता का भी अनुभव कराती है; क्योंकि इसे हमसभी भगवान् को साक्षी मानकर पूरी गम्भीरता से एक संकल्पित धार्मिक कार्य का आरम्भ जो करते हैं!

बल्कि यह जीवन्तता का भी अनुभव कराती है; क्योंकि इसे हमसभी भगवान् को साक्षी मानकर पूरी गम्भीरता से एक संकल्पित धार्मिक कार्य का आरम्भ जो करते हैं! रामलीला के मंचन के समय कई कमिटियाँ, अखाड़े सक्रिय हो जाते हैं।

महाकवि श्रीहनूमत्प्रणीत 'हनुमन्नाटकम्' इस सम्बन्ध में पठनीय है। जिसमें नाटकरूप में संवाद दिये गये हैं।

भगवान् की लीला का चिन्तन किसी भी भाव से करें, कुभाव से करें, आलस से या क्रोध से करें, अन्त में भगवान् की कृपा तो मिलनी ही है—

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ।
नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ॥

(रामचरितमानस : 1.28.1.)

विदेशों में रामलीला

भारतवर्ष के अलावे विदेशों में भी भगवान् श्रीराम की कथा एवं उनसे जुड़े हुए प्रकरण विभिन्न लीलाओं के माध्यम से प्रचलित एवं प्रसारित है। अखिल-ब्रह्माण्ड-नायक श्रीराम की शाश्वतलीला दक्षिणपूर्व एशिया के अतिरिक्त अन्य देशों में भी कहीं बड़े ही भक्तिभाव से या मनोरंजनरूप में मनाई जाती है। जिसके कतिपय उदाहरण हैं—

मलेशिया—

मलयद्वीप (मलेशिया) जो एक इस्लामी देश है, जिसकी राजधानी क्वालालम्पुर है, यहाँ रामलीला की विशिष्ठ पहचान है। रामायण का अभिनय अधिकतर छायानाट्यलीला द्वारा कथानक का प्रदर्शन किया जाता है जिसे 'वयाङ्' कहा जाता है, इसमें एकाकी पात्र या कलाकार अपनी चर्मपुत्तलिका की छाया को नचाकर और इसे यवनिका पर दिखाने की परम्परा है। इस प्रकार परदे पर मात्र पुतलियों की छाया ही दिखती है, जिसके माध्यम से रामकथा के विभिन्न कथानक प्रस्तुत किये जाते हैं। मलेशिया का रामायण-ग्रन्थ 'हेकायत सिरीराम' कहलाता है। 'वयाङ्' का अर्थ जापानी भाषा में छाया-नाटक ही ग्राह्य है।

इंडोनेशिया—

यहाँ की राजधानी जकार्ता है। हिन्दएशिया (इंडोनेशिया) में रामायण के उदात्त अभिनय का प्रचलन है। यहाँ भी छायानाट्यलीला के साथ-साथ पुत्तलिका नाट्य, नृत्य एवं संगीत आदि के सामञ्जस्य से इस लीला का मंचन होता है।

जावा—

यह इंडोनेशिया में बाली और सुमात्रा के बीच का प्रमुख द्वीप है। यह मुस्लिम प्रधान देश होते हुए भी रामलीला का प्रचलन है। यवद्वीप (जावा) का उल्लेख हमारे ग्रंथों में मिलता है। शैवधर्म एवं बौद्धधर्म के आधारशिला पर खड़े अन्य धर्म भी एक ही पात्र के परोसे जाने सदृश जावा की संस्कृति है। जावा की प्राचीन कृति रामायण, जो कावी भाषा में हैं— का नाम 'रामायण काकाविन' है। यह 26 अध्यायों में लिखी गयी है। यहाँ रामलीला के सन्दर्भ में 'वयाङ्' ही लोकप्रिय है, जिसमें चर्मपुत्तलियों के माध्यम से रामायण की कथा कही जाती है।

बाली—

यह एक द्वीप है, यहाँ की राजधानी देनपसार है,इसे हिन्दू बहुसंख्यक प्रान्त होने का गौरव भी प्राप्त है। कहा जाता है यह द्वीप पुराणप्रसिद्ध दैत्यराजा बलि के नाम पर रखा गया है। रामायण और महाभारत का प्रचलन एवं प्रसार आज भी यहाँ देखा जा सकता हैं। यहाँ काकाविन रामायण का पठन एवं तदनुरूप मंचन भी होता है। यहाँ का सबसे पुराना प्रदर्शन है 'रामायण बैले। यह एक प्रकार का नाट्य-नृत्यलीला है।

थाईलैण्ड—

यहाँ की राजधानी बैंकाक है। बौद्धधर्म की बहुलता होने के बाद भी यहाँ का राष्ट्रिय ग्रन्थ रामायण ही है, जिसका नाम 'रामकियेन' है। यहाँ के राजा को राम कहा जाता है, यहाँ का राष्ट्रिय प्रतीक गरुड़ है। इसमें राम को राम, लक्ष्मण को लक, बाली को पाली, सुग्रीव को सुक्रीप, विभीषण को विपेक आदि जैसे नामों से सम्बोधित किया जाता है। यहाँ का राष्ट्रिय नृत्य राम-नाट्य है, जिसमें थाईलैण्ड (स्याम) की रामायण रामकियेन की प्रस्तुति की जाती है। थाईलैण्ड में मुखौटा अभिनय ही मुख्य है, जिसमें गीत और संवाद पर्दे के पीछे से होता है।

कम्बोडिया—

इसकी राजधानी नोमपेन्ह है। पुरातन विशाल साम्राज्य वाली अंकोर जिसे राजा यशोवर्धन ने बसायी थी। जहाँ आज अंकोरवाट का मदिर है, जो आज भी अपनी भव्यता और दिव्यता के लिये प्रसिद्ध है। कभी (6ठी शताब्दी से लेकर 12वीं शताब्दी तक) यहाँ की

राजभाषा संस्कृत थी, 1250 ई० के एक शिलालेख के अनुसार उसमें संस्कृत लिपि ही व्यवहृत हुई थी। पुरातन कम्बोज का ही नाम कम्बोडिया है, जिसे आजकल 'कम्पूचिया' कहा जाता है। यहाँ 'नङ्ग' नामक नाट्य-नृत्य का विशेष स्थान है, जिसे छाया-नृत्य भी कहा जाता है। इसमें पुतलियों के माध्यम से रामायण की कथा कही जाती है।

म्यांमार—

दक्षिणी एशिया का एक देश, जिसका भूतपूर्व नाम बर्मा (ब्रह्मदेश) था। इसकी राजधानी रंगून है। बर्मा के राजा ने 1767 ई० में थाईलैण्ड (स्याम) पर आक्रमण कर इसे पराजित किया था, कहा जाता है पराजित करने के बाद राजा ने अन्य वस्तुओं के साथ रामलीला के कलाकारों को भी अपने साथ ले आया था। इसलिये यहाँ की रामलीला की नाट्यकला में थाईलैण्ड की झलक दिखाई पड़ती है। यहाँ की रामलीला में कलाकारों की वेशभूषा के अनुरूप मुखौटे धारण करते हैं, जिसे 'याम प्वे' कहा जाता है। 'याम प्वे' में विदूषक की भी प्रधानता होती है। 'प्वे' का अर्थ प्रदर्शनी के रूप में लिया जाता है। मुखौटा नाट्य के अतिरिक्त रामायण के सन्दर्भ में पुत्तलिका-नाट्य की भी प्रस्तुति की जाती है—जिसे 'योकथे प्वे' कहा जाता है।

लाओस—

दक्षिणपूर्व एशिया का एक देश है, जिसकी रामकथा में फ्रलक को राम, सिडा को सीता, दात्तरथ को दशरथ, राफनासुअन को रावण, इन्दहजित को इन्द्रजीत जैसे नाम दिये गये हैं। यहाँ की नृत्य-नाटिका में सीता-राम के साथ वन-विहार, रावण द्वारा सीता का हरण, राम का रावण पर विजय जैसे प्रकरणों का समावेश होता है।

श्रीलंका—

इस सन्दर्भ में यानि रामलीला में रामकथा का एक प्रमुख अंग श्रीलंका भी है, जो पहले सिंहलद्वीप के नाम से जाना जाता था। यहाँ आज भी सीता, रावण, विभीषण आदि के जीवंत स्थल-चिह्न मौजूद हैं। यहाँ यह कथा प्रचलित है कि विष्णु (राम) को शनि की दशा लग गयी थी, इसी कारण से उन्हें वनवास जाना पड़ा था। यहाँ भारतीय तमिल और सिंहली में श्रीराम की लोककथा में **मुखौटा-नृत्य** का प्रचलन है।

इसके अतिरिक्त मारीशस, सूरीनाम, रूस, चीन, बर्लिन, जापान, फिलिपिन्स, नेपाल आदि जैसे स्थानों में तत्सम्बन्धित देश की रीति-रिवाजों के अनुसार रामकथा एवं रामलीलाओं का मंचन किया जाता है। इस प्रकार निसंकोच रूप से विश्वाकाश में प्रचलित श्रीराम के साहित्य और संस्कृति छाप, इनकी लीलाओं के भव्यमंचन के साथ नृत्य, संवाद आदि का समावेश होने से श्रीराम के उदात्त अनुकरणीय पवित्र चारित्रिक विशेषता एवं भव्यता सबों के लिये मनमोहक, प्रेरक, शिक्षाप्रद बनाती है।

इस प्रकार श्रीराम की शाश्वतलीला एवं इसकी वैश्विक व्यापकता का उदाहरण उपर्निर्दिष्ट है। श्रीमद्भागवतजी का कथन है—

संसार-सिन्धुमतिदुस्तरमुत्तितीर्षो-
र्नान्यः प्लवो भगवतः पुरुषोत्तमस्य।
लीलाकथारसनिषेवणमन्तरेण
पुंसोर्भवेद् विविधदुःखदवार्दितस्य॥

श्रीमद्भा०12.4.40

जो लोग अत्यन्त दुस्तर संसार-सागर से पार जाना चाहते हैं अथवा जो लोग अनेकों प्रकार से दुःखरूपी दावानल से दग्ध हो रहे हैं, उनके लिये पुरुषोत्तम भगवान् की लीला-कथा का रसरूप सेवन के अतिरिक्त और कोई साधन, कोई नौका नहीं। ये मेरे लीला-रसायन के सेवन करने से ही अपना मनोरथ सिद्ध कर सकते हैं।

***

सन्त सरयू दास

कनक भवन, अयोध्या के सन्त सरयू दास का उपदेश

रामलीला का विधि-विधान

अयोध्यावासी, कनकभवन अयोध्या के पण्डित सरयूदासजी महाराज विरचित श्रीवेदार्थप्रकाश रामायण से संकलित। सेठ छोटेला लक्ष्मीचन्द बुक्सेलर, अयोध्या द्वारा काशी में मुद्रित, सन् 1926 ई.

अयोध्या के प्रसिद्ध कनकभवन के महात्मा परमहंस सीतारामशरणजी महाराज के शिष्य महात्मा सरयूदास कृत दो ग्रन्थों की सूचना मिलती है— 'उपासनात्रयसिद्धान्त' तथा 'वेदार्थ प्रकाश रामायण।' प्रथम ग्रन्थ में उन्होंने नारायण उपासना, कृष्णोपासना तथा रामोपासना के सिद्धान्तों का विवेचन किया है। रामोपासनासिद्धान्त के विवेचन-क्रम में आर्षग्रन्थों से वचनों को उद्धृत कर उनकी हिन्दी व्याख्या लिखकर सिद्धान्त प्रदर्शित किया है। इनका काल 20वीं शती का पूर्वार्ध प्रतीत होता है। इन्ही की दूसरी कृति श्रीवेदार्थप्रकाश रामायण है, जिसमें उन्होंने वाल्मीकि रामायण की रामकथा तथा विशेष रूप से तुलसीदास के रामचरितमानस को वेदोक्त सिद्धान्त के साथ अन्वित किया है। इसमें भी आर्ष ग्रन्थों से उद्धरण संकलित कर उसे व्यवस्थित कर प्रश्नोत्तर की शैली में व्याख्यायित किया गया है। इसी ग्रन्थ के आरम्भ में रामलीला के प्रसंग की व्याख्या हुई है, जिसके प्रवर्तन का श्रेय इन्होंने हनुमानजी को दिया है। यहाँ हिन्दी की वर्तमान चिह्नप्रणाली के अनुरूप वह अंश उद्धृत किया गया है।

(प्रश्न—) हे स्वामी जी, रामावतार में जो जो लीला की है सो सब लीला बालकों को राम जानकी बना करके करना चाहिये कि नहीं, सो कृपा करके कहिये।

(उत्तर—) हे शिष्य, एक समय में अगस्त्यजी महाराज शिष्यों के सहित गन्धमादन पर्वत पर गये। तहाँ पर रामकुण्ड तीर्थ में स्नान करके हनुमानजी के परम दिव्य अनन्यमय आश्रम पर गये। हनुमानजी आकर के मिले और आसन दिया। शिष्यों के सहित ऋषिराज का पूजन किया। पीछे भोजन करके बैठे, इतने ही में सन्ध्या भई। सध्यावंदनादि करके बैठे, तब तक हनुमानजी ने ऋषि-बालकों को शृङ्गार करके रामलीला रहस्य प्रारम्भ किया। सो साक्षात्कार लीला देख करके अगस्त्यजी बड़े आनन्द को प्राप्त होगये; यहाँतक कि शरीर की सुध भूलि गये। पीछे हनुमानजी की प्रशंसा की कि आप धन्य हैं जो इस प्रकार की साक्षात् रामलीला रहस्य करते हैं और हमने भी आज देखा सो हम भी धन्य हैं। इसीप्रकार के परस्पर बहुत विनय बड़ाई करके अगस्त्यजी बोले कि इस प्रकार की विधिपूर्वक यह रामलीला रहस्य बालकों को शृङ्गार करके करने के निमित्त किसने कहा है और किनसे अपने पाया है सो कहिये।

हनुमानजी बोले– विधि यह है कि प्रथम एक दिव्य लीलामण्डप बनाना चाहिये। उसको वंदनवार तोरण कलश केरा के खम्भ तथा पुष्पों से खूब सजाना चाहिये, जिसमें नास्तिक अवैष्णव न जाने पावे और स्त्री, बालक को सावधान से बैठावे, जिसमें शब्द न हो सो करना चाहिये और लीला करनेवाले वैष्णव हों। लीला के आचार्य नेम-धर्म से रहे, कथा कहवावे, यज्ञ करे, साधु ब्राह्मण को भोजन करवावे, जितने दिन लीला करनी हो, उतने ही दिन का विधिपूर्वक संकल्प करे। क्रीट-मुकुट की विधि से प्रतिष्ठा करे और नित्यप्रति पूजन किया करे।

तब हनुमानजी बोले कि जब रामजी परमधाम साकेत लोक को जाने लगे, तब साथ में जाने के लिये मैंने विनती की। सुनके प्रभु बोले कि तुम अभी यहीं पर रहो और विप्र बालकों को मैनसिल से शृङ्गार करके हमारी लीला किया करो। हम इहाँ पर साक्षात्कार दर्शन दिया करेंगे। तबसे हम यह लीला करते हैं और साक्षात्कार दर्शन होता रहता है। यह उपदेश रामजी का है।

पुनः अगस्त्यजी बोले कि केवल आपही के लिये उपदेश है कि सबके लिये। हनुमानजी बोले कि सबके लिए आज्ञा है, परन्तु विधि से करना चाहिये।

अगस्त्यजी बोले– विधि क्या है?

हनुमानजी बोले– विधि यह है कि प्रथम एक दिव्य लीलामण्डप बनाना चाहिये। उसको वंदनवार तोरण कलश केरा के खम्भ तथा पुष्पों से खूब सजाना चाहिये, जिसमें नास्तिक अवैष्णव न जाने पावे और स्त्री, बालक को सावधान से बैठावे, जिसमें शब्द न हो सो करना चाहिये और लीला करनेवाले वैष्णव हों। लीला के आचार्य नेम-धर्म से रहे कथा कहवावे, यज्ञ करे, साधु ब्राह्मणको भोजन करवावे, जितने दिन लीला करनी हो, उतने ही दिन का विधिपूर्वक संकल्प करे। क्रीट मुकुट की विधि से प्रतिष्ठा करे और नित्यप्रति पूजन किया करे। हे शिष्य, और भी (हनुमत्-संहिता) में लिखा है कि विजयदशमी (दशहरा) के दिन राजा लोग सब अपने फौजों को तैयार कर और लीला मूर्तिके आगे रथ पर सवार कराकर दक्षिण यात्रा करे। खूब धूमधाम से और रामजीकी सहायता के लिये भक्तिभाव से कि मैं श्रीरामजीका सेवक हूँ, तहाँ दक्षिण जाकर रावण के नामसे अस्त्र शस्त्र चलावे रावण के स्वरूप बना के। यह प्राचीन धर्म है। फिर लौटकर नीलकंठ का दर्शन और शमी (छोंक) वृक्षकी पूजा करके नगर में आवे। इस प्रकार से सब राजाओं को करना चाहिये। सो कुछ-कुछ अब भी राजपूताने में करते हैं लीला स्वरूप नहीं बनाते है परन्तु सेनाओं को सजा के दक्षिणा-यात्रा करते हैं यह बात सर्वत्र प्रसिद्ध है परन्तु यह नहीं जानते हैं कि विजयदशमी के दिन दक्षिणयात्रा करना क्या है और दशहरा में रामलीला होना यह तो सर्वत्र प्रसिद्धही है। इससे लीला करना शास्त्र प्रमाण है परन्तु विधि और भावसे करना चाहिये जैसा कि शास्त्र में प्रमाण है नही तो भारी दोष कहा है।

प्रश्न– हे स्वामी जी, आज काल के जो लीलाधारी और रहस्यधारी लोग घर-घर गाँव-गाँव लीला करते हैं, सो करना चाहिये कि, नहीं।

[उत्तर] हे शिष्य, भगवत् लीला करनेका कोई नियम नहीं है कि अमुक ही स्थान में करे चाहे, जहाँ जिस देश गाँव में करे, परन्तु भाव से करे। परलोक से विमुख होकर न करे लोगों के उपदेश के लिये करे, काहे से कि लीला से उपदेश विशेष है अर्थात् जहां लीला होती है, तहाँ हजारों मनुष्यों के भी होने से

राममय हो जाता है। इससे लीला करना भारी उपदेश और सबको मालूम पड़ता है कि रामजी ऐसे रहे ताते लीला करना उचित है परन्तु अन्याय होकर न करे। और इस प्रकार के मनुष्य लीला में न जाने देवे।

यथा शिवसंहितायां पंचमपटले 15 अध्याय अगस्त्यजी से श्रीहनुमानजी का वचन

वर्जयेन्म्लेच्छचाण्डालान् भक्तिशून्यान्दुराशयान्।
हासकान्दूषकांश्चौरान् हिंस्राञ्छूद्रान्मलीनसान्॥1॥
शैवाञ्छोक्तान् खलान् पापान्पापण्डानशुचिर्नरान्।
मूर्खान् कौतुकिनो धूर्तानन्यदेवरतानपि॥2॥
दुर्भक्ष्यान् निन्दकान् बाह्यान् मद्यमांसरतानपि।
नास्तिकान् हेतुकान् क्रू रानन्यानपि संत्यजेत्॥3॥

अर्थ— म्लेच्छ चाण्डाल जो रामभक्त नहीं हैं, दुराशय अर्थात् दुष्टभावना वाले, हंसी मसखरी वाले, दूषण देनेवाले, चोर, जीव-हत्यावाले शूद्र, मलिन-वृत्तिवाले शैव, शाक्त, दुष्ट, पापी, पाखण्ड, अपवित्र, मनुष्य, मूर्ख, खेल-तमाशे वाले, धूर्त, अन्य देवताओंकी भक्ति करनेवाले अभक्ष्य अर्थात् लशुन, पियाज, गाजर, शलगम, गोभी, सोया, पलाकी, गांजा, भांग, तमाखू, अफीम इत्यादि के खाने-पीने वाले, निंदा करनेवाले सर्व धर्मों से जो बाह्य है। तथा मद्य पीने वाले, मांस खानेवाले, नास्तिक तर्कवाले, क्रूर इन सबको श्रीरामलीला के अन्दर न जाने देवे केवल भक्तिवान् पुरुषों को जाने देवे॥

नैते योग्याः संप्रवेष्टुं रामैकान्तिककेलिषु।
अन्यथाकारको भ्रंश्येद्रामकोपेन भक्तितः॥4॥
परमैकान्तिनो यत्र पापदोषविवर्जितः।
गानं भगवतः कुर्युः संनिधत्ते तु यद्धरिः॥5॥

अर्थ— पूर्वोक्त सबको लीला रहस्यके भीतर न जाने देबे। यदि इन सबको लीला स्थानमें जाने देवे तो लीला के करनेवाले व्यास बाबा श्रीरामजी के महा-क्रोध करके भक्तिमार्ग से पतित होकर 21 अथवा 64 पीढ़ी को साथ लेकर मजे में घोर नरक में जन्म-जन्म गोता लगायेंगे। दुष्टों का उद्धार कभी भी नहीं होता है।

यथा—

लोकहु वेदविदित कवि कहहीं।
रामविमुख थल नरक न लइही॥

इससे लीलाधारी को चाहिये कि विचार से काम करे। जहाँ परम एकांत स्थान हो पाप दोष से वर्जित हो, उस स्थान पर भगवल्लीला गाना बजाना करे। काहे से कि लीला करना भारी यज्ञ है। शुद्ध भूमि में होना चाहिये। उस स्थान पर स्वयं प्रभु आकर प्राप्त होते हैं और लीलामूर्ति में प्रवेश करते हैं और लीला स्वरूप विचार से। ऐसा बनावे यथा—

द्विजराजकुलोद्भूतं सुरूपं सुमुखादिकम्।
सुवर्णं शुभगं चारु चेष्टं मधुरभाषिणम्॥6॥
दृष्टिचित्तहरं पुंसां शिक्षादक्षं सुलक्षणम्।
कुमारं वा किशोरं वा रोगदोषविवर्जितम्॥7॥
पूजयेद्रामबुद्ध्यैव विहीनं त्वपलक्षणैः।
यदस्मिन् राघवः स्थित्वा क्रीडिष्यति प्रियायुतः॥8॥

अर्थ— द्विजराज अर्थात् उत्तम ब्राह्मण सारस्वत 1, कान्यकुब्ज 2, गौड़ 3, मैथिल 4, उत्कल 5, तैलंगी 6, द्राविडी 7, करणाटकी 8, महाराष्ट्र 9, गुरु राती नागर ब्राह्मण 10, इन दशों ब्राह्मणों में श्रेष्ठ चाहे, जिसके कुलमें उत्पन्न हो, सुन्दर मुखादि और सुन्दर वर्ण हो। भाव यह है कि रामजी के भरतजी के स्वरूप श्याम हो और लक्ष्मणजी, शत्रुघ्नजी गौर हो, तैसेही श्रीजानकी भी गौरांगी हो और सब स्वरूप शुभ नाम सुघर हो, बेडौल नहीं, पवित्र चेष्टा हो, मधुर बोलने वाले हो कठोर क्रूर बोलनेवाले नहीं॥

दृष्टि जिनकी ऐसी बाँकी हो कि जिधर देखें उधर भाविकों का चित्ताकर्षण हो जावे और शिक्षा में प्रवीण ही सुन्दर लक्षण करके युक्त हो अवस्था जिनकी 8 वर्ष से 16 वर्ष पर्यंत हो, अधिक न हो, कोई प्रकार का रोग दोष भाव काणे खोठे कूबडे लंगड़े लूटे गंगा बहिरा गजा कुक्कुरदंता विशेष अङ्ग वाले नहीं मात्र कोई

प्रकार के ऐव नहीं यदि ऐसी स्वरूप बनावे तो लीलाधारी नरक में जावे और देखने वाला भी दोषभागी हो इससे दिव्य स्वरूप बनावे ॥2॥

जो स्वरूप बनावे वह सब कुलक्षणों से रहित हो उनस्वरूपों कों साक्षात् सीताराम ही जानके पूजन करे। यदि न पूजे दूसरा भाव राखे भाव मनुष्य जाने तो नरक के अधिकारी हो इससे अवश्य भाव राखे जिसमें श्रीसीतारामजी स्वरूपों में स्थित होकर क्रीडादि भाव करें इससे निरादर न करे।

तैलेनाभज्य चूर्णेन समुद्वर्त्य च वारिभिः।
पवित्रैः स्नापयेद् विद्वान् मन्त्रोच्चारणपूर्वकम्॥ 9॥
गव्यैः पञ्चभिः स्नाप्य तुलसीदर्भमिश्रितैः।
ऊष्णेन वारिणा भूयः शीतलेन च मन्त्रतः॥ 10॥
पीताम्बरयुगं दद्याद् ब्रह्मसूत्रं च सुन्दरम्।
रोचनाकुङ्कुमाप्तेन कस्तूरीतिलकेन च॥ 11॥

अर्थ– सर्वसुगन्ध औषधियों को चूर्णकर उबटन याने (वेसन) के साथ मिलाकर तेलयुक्त हल्दी के साथ जलमें मिलाकर सर्वांग में उबटन लगाकर स्वरूपों को पवित्र जबसे मूलमंत्र को पढ़कर विद्वान् पण्डित लोग स्नान करावें। पीछे तुलसीदलको मिलाकर पंचगव्य से स्नान कराकर फिरमी उष्ण (गर्म) जनसे अथवा शीतल जल से मन्त्र पढ़कर अच्छे प्रकार से स्नान कराकर दो पीतांबर और सुंदर पीतरंगका यज्ञोपवीत देना चाहिये और श्रीयुक्त कस्तुरी केशर मिलाकर–

तिलकेनाप्यलं कुर्य्याद् विन्दुं च केशवेश्मना।
आचामयेज्जलं शुद्धं रामनामानुकीर्त्तयन्॥ 12॥
श्रीरामं तत्र सन्ध्यायेदात्मानं स्वतएव तम्।
रामस्य मन्त्रमुन्यादीन्न्ययेत्तस्य यथोचितम्॥ 13॥
अङ्गेषु चाङ्गदेवांश्च रामोऽस्मीति च भावयन्।
रामात्मा एव एवैति वेदान्तविदितं मतम्॥ 14॥
धूपयेद् दीपयेत् पश्चाद् भोजयेदमृतं च तम्।
नीराजनमुखामोदं ताम्बूलादि प्रदाय च॥ 15॥
रामोयमिति तं भूयो लालयेन्नतु कोपयेत्।
तद्द्वारा भगवान् रामः साक्षादेवः समीहते॥ 16॥

अर्थ– सुन्दर ऊर्ध्व पुण्ड्रतिलक करना विदुके सहित और मैनशील (मुर्दाशंख) से कपोलादि शृङ्गार करना चाहिये काकपक्ष (जुलुफ) की रचना कर सर्वाङ्ग में भूषण धारण करावे और कीट मुकुटादि को धारण कराकर शुद्ध जल से आचमन करावे श्रीरामनाम का कीर्तन करे करावे जिसमें कल्याणहो॥16॥

श्रीराममंत्र षडक्षर से यथोचित विद्वान् लोग सर्वांग का संस्कार करे और वहाँ लीलास्थान में श्रीरामजीका ध्यान करे स्वरूपों को चाहिये कि अपने आत्माको स्वयं श्रीरामजी करके मानें और यही भाव लीला के आचार्य महंत सन्त पंडित व्यास लीलाकर्ता उपदेश करे स्वरूपों को कि आप स्वयं सीतारामजी हैं शान्ति क्षमा दयादिगुण उपदेश करे परस्पर स्वरूपों को भावोपदेश करे। अंग में अंग देवताओं को भिन्न-भिन्न माने सबके भावना करे अपने को रामही जाने कि राम मैं ही हूँ। इस तरह का भाव सदैव राखे जिसमे सब भाविकों को श्रीरामजी के ही भाव होजाये और देखने वालेको व करने वालेको सच्चा भाव रखना चाहिये क्योंकि भाव ही प्रधान है। देखो, सती जीने सीताजी का रूप धारण किया, उसी समय में परमभक्त शिरोमणि श्रीशंकरजीने सतीको त्याग कर दिया कि

जो अब करउ सतीसन प्रीती।
मिटे भगति पथ होइ अनीती॥

भाव स्वामिनी भाव माना नहीं तो सती कुछ सीता नहीं होगई केवल योगीराज श्रीशंकरजीने सूक्ष्म से सूक्ष्म भक्ति भावको दिखाया है। हे शिष्य, यह प्रसंग रामायण में ही सूक्ष्म है इससे लीलानुकरण भी सिद्ध होता ताते लीला स्वरूपों को अवश्य मानना चाहिये। यदि भक्तिभाव हो नहीं तो दुष्टों के लिये कुछ नहीं है, स्वरूप में भाव करना यह मत वेदांतशास्त्र का प्रधान मत है भावलीला करना शास्त्र प्रमाण है कल्पित न जाने यदि

कल्पित माने तो नरक वास हो। धूप दीपादि से विधिपूर्वक पूजन करें सुन्दर स्वरूपों को भोजन करावे पंचनीराजन करके मुखशुद्धिके लिये तांबूलादि देवे और रामही हैं ऐसा जाने लालन पालन करे क्रोध नहीं करे। यदि स्वरूपों पर क्रोध करके मारे पीटे तो कोटि पुरुषा नरक जाय, इसमें संदेह नहीं। काहे से कि लीलास्वरूपों के द्वारा साक्षात् श्रीरामदेव प्राप्त होते हैं इससे सत्यभाव से करना चाहिये।

(प्रश्न—) हे स्वामीजी, नीराजन किसको कहते हैं और कैसे किया जाता है सो कहिये।

(उत्तर) हे शिष्य, पंचनीराजन शास्त्र में ऐसा कहा है। यथा—

पञ्चनीराजनं कुर्य्यात् प्रथमं दीपमालया।
द्वितीयं सोदकाब्जेन तृतीयं धौतवाससा॥
चूताश्वत्थादिपत्रैश्च चतुर्थं परिकीर्तितम्।
पञ्चमं प्रणिपातेन साष्टाङ्गेन यथाविधिः॥

अर्थ— पञ्चप्रकार के नीराजन करना प्रथम दीपमाला से दूसरा शंख में जलभर स्वरूपों पर घुमाकर बाहर फेंक देना इस शंख का जल शरीर पर गिरे तो ब्रह्महत्यादिपाप नष्ट होता है। तीसरा धोती अथवा पीतांबर से चौथा आम के पोपल के पत्रोंसे करे। पांचवां नीराजन नम्रतापूर्वक साष्टांग प्रणाम करना। भाव लीलास्वरूपों को साटांग भी करे प्रसाद भी ले। केवल भाव है।

(प्रश्न) हे स्वामीजी, शंख से नीराजन करना और शंखोदक का माहात्म्य कहां लिखा है।

उत्तर—

ततश्च सजलं शङ्खं भगवन्मस्तकोपरि।
त्रिभ्रामयित्वा कुर्वीत पुनर्नीराजनं प्रभोः॥
शङ्खोदकं हरेर्भुक्तं निर्माल्यं पादयोर्जलम्।
चन्दनं धूपशेषं च ब्रह्महत्याऽपहारकम्॥
योऽश्नाति तुलसीपत्रं सर्वपापहरं शुभम्।
तच्छरीरान्तरस्थापि पापा नश्यन्ति तत्क्षणात्॥

अर्थ— तिसके पीछे जसके सहित शंखको भगवत् के शिरपर तीनवार घुमाकर फेंक देबे यह भी नीराजन है। शंख के जल भगवत् प्रसाद चरणोदक भगवत् पूजन का शेष (बचा) हुआ चंदन धूप सब ब्रह्महत्या हरनेवाला है। जो तुलसी-दल खाते हैं उनके भीतर के भी पाप सब नाश हो जाते हैं इससे तुलसीदल खावे।

अब श्रीजानकीजी के स्वरूप बनाने को कहते हैं। यथा शिवसंहितायाम्—

सर्वलक्षणसम्पन्नमपलक्षणविवर्जितम् ।
कुमारं जानकीत्येव संस्कुर्य्याद्धि विधानतः॥
जानकीमन्त्रमुन्यादीन्यस्येत्तस्य कलेवरे।
भोजयेल्लालयेत् तत् तद् रामदेवीति तां बुधः॥
कुमारारूपसम्पन्ना नृत्यगानविचक्षणाः।
अपलक्षणशून्या ये द्विजानां शुचयोनघाः॥
संभाव्यास्ते सखीत्येन जानक्यानुभाविताः।
भोजिता धूपिताः सम्यक् शिक्षितास्तोषिता धनैः।

सर्वलक्षण करके युक्त हो और कुलक्षण करके विवर्जित हो ऐसा कुमार 8 वर्ष के स्वरूप जानकी जीके ही निश्चयपूर्वक उनको विधानसे संस्कार करना और जानकीजी के मन्त्र से जानकीजी के स्वरूपों को और रामजी के रामजी के स्वरूप को मुनिलोग विद्वान् लोग संस्कार नाम प्रतिष्ठा करें और तिनके शरीर में उनर मन्त्रों को स्थापित करें। विधिपूर्वक जिसमे भगवत् का भावहो उनको पण्डित लोग भोजन करावे पालन करें अर्थात् रामप्यारी जान करके सब प्रकार से आदर सहित भाव करे॥ 4॥

और रूपगुण करके युक्त नृत्यगानमें चतुर अपलक्षण करके शून्य ब्राह्मण में पवित्र पापों से रहित ऐसा कुमार बालक 8 वर्ष के स्वरूप जानकीजी के आज्ञानुकूल सखी बनावे सबको सब प्रकार से भोजन से धूप दीपादि से पूजन करे और शिक्षा देवे कि आप अपने को रामजी जानो, जानकीजी जानो, सब पर दया

करो। काम, क्रोध, लोभ, मोह छोड़ दो। शान्ति, क्षमा, दया, वात्सल्यादि गुणको धारण करो इसी प्रकार के दिव्यगुण शिक्षा करे और धन द्रव्यादि देकर संतुष्ट करे जिसमें कोई को दुःख न हो सो करे।

हे शिष्य इसी प्रकार से आगे और भी बहुत कहा है कि स्वरूपों पर क्रोध न करे, दंड न देवे, दुःख न देवे। यदि कोई प्रकार का दुःख देवे तो जन्म —जन्म अखण्ड नरक में रोवै, कभी उद्धार नहो, भगवद्द्रोही नास्तिक है, महा-चाण्डाल है जो स्वरूपों को क्लेश देता है और खोटी दृष्टि से देखता है उसको वार-बार धिक्कार है जो द्रव्य के वास्ते स्वरूपों को दुःख देते हैं और ब्राह्मण छोड़कर जो अन्य जाति को स्वरूप बनाते हैं सो महादुष्ट नरकगामी है गुरुद्रोही है, भगवद्द्रोही है।

हे शिष्य, पाँच ब्राह्मण जो हैं याने मागधी (झूठी प्रशंसा गानेवाले चारण)1, मथुरा के चौबे लोग (व्यापार करनेवाले), 2 शाकद्वीपी 3 (शुल्क लेकर चिकित्सा करनेवाले), सनाढ्य 4, जोषिक 5, तथा गंगापुत्र महापात्र (तिलोदक दान लेनेवाले) भाट, कथिक इन सबको स्वरूप बनाना दोष है। बनानेवाले नरक जावे और शत्रु नीच लोग जो लीला करते हैं सो नरकगामी हैं। हे शिष्य, यह कथालीला प्रकरण (शिवसंहिता) के पंचमपटल में 15 से अष्टादशाध्याय 18 पर्यन्त वर्णन है।

गंधमादन पर्वत पर हनुमानजी ने अगस्त्य ऋषिसे कहा है तबसे रामलीला भूमंडल में प्रचार है और प्रेमी लोग करते हैं। यही लीला कृष्णावतार में प्रद्युम्नादि यादवने वज्र नाम दैत्य के यहांपर रामनाटक किया है सो यह कथा हरिवंश पुराण के विष्णुपर्व 95 अध्यायमें प्रसिद्ध है तिससे थोरा लिखते हैं विशेष देखलेना। यथा प्रमाण—

रामायणं महाकाव्यमुद्दिश्यं नाटकीकृतम्।
जन्मविष्णोरमेयस्य राक्षसेन्द्रवधेप्सया॥ 51॥
लोमपादो दशरथ ऋष्यशृङ्गं महामुनिम्।
शान्तामप्यानयामास गणिकाभिः सहानघ॥ 52॥
राम-लक्ष्मण-शत्रुघ्नो भरतश्चैव भारत।
ऋष्यशृङ्गञ्च शान्ता हि तथा रूपैर्नटैःकृताः॥53॥
तत्कालजीविनो वृद्धा दानवा विस्मयं गताः।
आचचक्षुश्च तेषां वै रूपतुल्यत्वमच्युतः॥ 54॥
संस्काराभिनयौ तेषां प्रस्तावानां च धारणम्।
दृष्ट्वा सर्वे प्रवेषं च दानवा विस्मयं गताः॥55॥ इति

अर्थ — रामायण महाकाव्य जो वाल्मीकीय रामायण है उसको यथार्थ रीति नाटक की गीति करके दिखाने लगे जिसमें अप्रेमय विष्णु भगवान ने राक्षस के वध करने की इच्छा करके देवताओं को कहा। प्रथम रोमपाद राजा दशरथजी ऋषिशृङ्ग महामुनि को दिखाया रोमपाद के पुत्री शांता के निमित्त वेश्या जैसे महा घोरवन में जा करके शृङ्गी ऋषिजी को आनती भई सो सब नाटक किया और राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न शृङ्गी ऋषि शांता इन सबका जैसा रूप है तैसा रूप नट लोग नाटक करनेवाले सो सब किया उस समय में बस गुणी लोग वृद्ध लोग दानव लोग आश्चर्य को प्राप्त होगये और परस्पर तिन सबके रामलीला देख करके चक्षु ले याने इशारे से बात करने लगे कि ऐसा कभी नहीं देखा॥

तिन सबके स्वरूप बनाना और बोलचाल हाव भाव छविछटा शीघ्रता सब देख करके दानव लोग विस्मय को प्राप्त हो गये और बहुत से धन द्रव्यादि दिये सो विस्तार से आगे वर्णन है। उसीको गोस्वामी ओने एक चोपाई में प्रमाण दिया है। यथा—

खेलउँ तहाँ बालकन्ह मीला।
करउँ सकल रघुनायकलीला॥

इत्यादि उत्तरकाण्ड में कहा है।

इससे हे शिष्य, रामलीला करना शास्त्रप्रमाण है। अवश्यमेव करना चाहिये परन्तु भावसे करना कल्याणकारक है नहीं तो घोर नरक तो हई है।

***

प्रेमचंद कृत

'रामलीला' और 'राम-चर्चा'

डॉ. नागेन्द्र कुमार शर्मा
सह-आचार्य, हिन्दी विभाग,
राम जयपाल महाविद्यालय (जय प्रकाश विश्वविद्यालय), छपरा

20वीं शती के साहित्यकारों में सबसे अधिक पढा जानेवाला साहित्य प्रेमचन्द ने दिया। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों पर तीखा प्रहार किया, किन्तु उनकी कहानियों और उपन्यासों की एक विशेषता रही है कि वे यथार्थ का भी वर्णन आदर्श की स्थापना करने के लिए करते हैं। प्रेमचन्द की रचनाओं का आदर्श स्पष्ट रहता है। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में हमेशा आदर्श और यथार्थ का द्वन्द्व एकसाथ चलता है। रामलीला पर उनकी दो स्वतन्त्र रचनाएँ उपलब्ध हैं– पहली है रामलीला कहानी और दूसरी रचना है रामचर्चा, जिसमें उन्होंने रामचरित को बहुत आस्था के साथ समाज में आदर्श की स्थापना के लिए लिखा है। रामचर्चा बाल-उपन्यास के रूप में लिखी गयी थी अतः इसके माध्यम से उन्होंने बच्चों के चरित्र निर्माण केलिए सामग्री प्रस्तुत की है। यहाँ लेखक ने इस दोनों कृतियों का परिचयात्मक विवेचन प्रस्तुत किया है।

प्रेमचंद हिन्दी के एक श्रेष्ठ साहित्यकार थे। उन्होंने अनेक कहानियों, उपन्यासों, नाटकों और निबंधों की रचना कर हिन्दी साहित्येतिहास में अपना स्पृहणीय स्थान बनाया है। हिन्दी के कथाकारों में तो वे सर्वथा शीर्षस्थ ही हैं। चूँकि श्री रामचंद्र के जीवन-चरित्र का भारतीय मानस में एक तरह से सर्वोपरि महत्त्व और स्थान है, इसलिए प्रायः सभी नये-पुराने कवियों/लेखकों ने उसका वर्णन कर अपने को धन्य किया है। अस्तु! अभी यहाँ प्रेमचंद कृत 'रामलीला' कहानी और बाल-साहित्य के अन्तर्गत परिगणनीय उनकी रचना 'राम-चर्चा' का संक्षिप्त विवेचन ही मेरा अभीष्ट है।

प्रेमचंद की 'रामलीला' शीर्षक कहानी उनके कहानी-संग्रह 'मानसरोवर' के 'खंड– 5' में संकलित-प्रकाशित है। यह इस संग्रह की तीसरी कहानी है। यद्यपि इसका आरम्भ लेखक के अनमनेपन भाव से होता है–

"इधर एक मुद्दत से रामलीला देखने नहीं गया। बंदरों के भद्दे चेहरे लगाये, आधी टाँगों का पाजामा और काले रंग का ऊँचा कुरता पहने आदमियों को दौड़ते, हू-हू करते देखकर अब हँसी आती है, मजा नहीं आता,"[1]

1. प्रेमचंद, मानसरोवर – 5, पृष्ठ – 34

तथापि तुरत आगे उससे लगाव-जुड़ाव को प्रदर्शित करते हुए कहा गया है कि *"लेकिन एक जमाना था, जब मुझे भी रामलीला में आनंद आता था। आनंद तो बहुत हलका-सा शब्द है, वह आनंद उन्माद से कम न था। ××× जिस उत्साह से दौड़-दौड़ कर छोटे-मोटे काम करता, उस उत्साह से तो आज अपनी पेंशन लेने भी नहीं जाता।"*[2]

फिर रामलीला के अन्तर्गत 'निषाद-नौका-लीला' के वर्णन-क्रम में लेखक ने रामचंद्र जी किंवा उनका अभिनय करनेवाले कलाकार के प्रति अपनी स्वाभाविक श्रद्धा-भक्ति की बात बताई है।

कहानी के दूसरे भाग में रामलीला के समापन के पश्चात् भी लेखक के मन में उसके कलाकारों के प्रति वही पूज्य भाव है, जबकि यह देखकर वह हतप्रभ है कि समाज के तथाकथित उच्च जन (अभिजन) के साथ वैसी स्थिति नहीं है। इस क्रम में लेखक ने न केवल जमींदार चौधरी साहब और वेश्या आबादीजान की करतूतों को उघाड़कर बेपर्द किया है, बल्कि अपने पिता तक को भी तनिक नहीं बख्शा है। चौधरी साहब की मिलीभगत से आबादीजान भरी महफिल में सबको लूटती है। समाज की कैसी विचित्र विडंबना है कि जो लोग— स्वयं लेखक के पिता— आरती की थाली में फूटी कौड़ी देना भी अपनी हेठी समझते हैं, वे ही महफिल में वेश्याओं की शोखी अदाओं पर मोहित हो लाज-शरम को ताक पर रख अशर्फी लुटाते हैं। लेखक को जब मालूम होता है कि आज रामलीला के रामजी समेत सभी कलाकार जानेवाले हैं, किंतु उनके पास राहखर्च भी नहीं, क्योंकि चौधरी साहब ने उन्हें कुछ भी देने से इनकार करते हुए जाने को कह दिया है, उससे रहा नहीं जाता। वह अत्यंत व्यथित एवं विचलित हो उनकी मदद हेतु अपने पिता से फरियाद करता है, किंतु मदद तो दूर, उलटे डाँट खाकर अपनी कुल जमापूँजी दो आने पैसे उन्हें दे देता है। कितना कारुणिक दृश्य है कि विदाई के समय लेखक के सिवा वहाँ और कोई नहीं होता। अलबत्ता लेखक ऐसा कर अवश्य अत्यधिक आनंदित हैं।

इस प्रकार 'रामलीला' कहानी से यद्यपि रामकथा संबंधी बहुत कम जानकारी उपलब्ध होती है, किंतु उससे तत्कालीन सामाजिक विकृतियों एवं विसंगतियों का स्पष्ट चित्र अवश्य उभर आता है। फिर उसके प्रति लेखक के आरंभिक चाव-लगाव का भी पता चलता है।

उल्लेखनीय है कि प्रेमचंद के सर्वोत्कृष्ट उपन्यास 'गोदान' में भी एक स्थल पर इस प्रकार का आयोजन वर्णित है, जिसमें कथानायक होरी राजा जनक के बाग का माली बना है।[3]

राम-चर्चा

'राम-चर्चा' प्रेमचंद की एक बालोपयोगी रचना है। इसका उर्दू संस्करण 1929 ई. में लाजपत राय एंड सन्स, लाहौर से निकला तथा देवनागरी संस्करण प्रथम संस्करण सरस्वती प्रेस, बनारस से सन् 1938 में प्रकाशित हुआ था। पुस्तक के शीर्षक के

पुस्तक के तृतीय संस्करण (1948) का मुखपृष्ठ

2. उपरिवत्

3. प्रेमचंद, गोदान, पृष्ठ — 64

नीचे कोष्ठक में लिखित 'रामचंद्रजी की रोचक कहानी' से स्पष्ट है कि इसमें राम की कहानी रोचक रूप में कही गई है। यह पुस्तक अन्य अनेक प्रसिद्ध रामायणों की तरह ही सात कांडों में विभक्त है—

बाल-कांड, अयोध्या-कांड, वन-कांड, किष्किंधा-कांड, सुंदर-कांड, लंका-कांड और उत्तर-कांड।

प्रत्येक कांड में पात्रों अथवा घटनाओं के नाम पर दिये गए शीर्षक के अन्तर्गत तत्संबंधी बातों का वर्णन है, हालाँकि इस संबंध में एक असंगति भी स्पष्ट है। बालकांड में जन्म के बाद 'ताड़का और मारीच का वध' शीर्षक है, जबकि मारीच-वध वन-कांड में घटित घटना है। किंतु, यह असंगति अपवादस्वरूप ही है, अन्यथा अन्यत्र शीर्षक के अनुसार ही वर्णन-विवरण हैं। इस प्रकार सातों कांडों के कुल चौंतीस शीर्षकों में संपूर्ण रामकथा संक्षेप में समाहित है।[4]

'राम-चर्चा' पुस्तक का प्रारंभ रामलीला के उल्लेख के साथ होता है। लेखक का संबोधनात्मक कथन है—

"प्यारे बच्चो! तुमने विजय-दशमी का मेला तो देखा ही होगा। कहीं-कहीं इसे रामलीला का मेला भी कहते हैं। इस मेले में तुमने मिट्टी या पीतल के बंदरों और भालुओं के-से चेहरे लगाये आदमी देखे होंगे। राम, लक्ष्मण और सीता को सिंहासन पर बैठे देखा होगा और इनके सिंहासन के सामने कुछ फासले पर कागज और बाँसों का एक बड़ा पुतला देखा होगा। इस पुतले के दस सिर और बीस हाथ देखे होंगे। यह रावण का पुतला है। हजारों बरस हुए, राजा रामचंद्र ने लंका में जाकर रावण को मारा था। उसी कौमी फतह की यादगार में विजय-दशमी का मेला होता है और हर साल रावण का पुतला जलाया जाता है। आज हम तुम्हें उन्हीं राजा रामचंद्र की जिंदगी के दिलचस्प हालात सुनाते हैं।"[5]

इसके बाद रामजी के जन्म से लेकर उनके जीवनांत तक की मुख्य-मुख्य बातें वर्णित हैं। घटनाओं के वर्णन-चित्रण एवं पात्रों के चरित्रांकन में लेखक द्वारा प्रायः सर्वत्र ही अप्राकृत अथवा अतिप्राकृत तत्त्वों-तथ्यों से बचते हुए उन्हें सहज व्यावहारिक मानवीय स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया गया है, जो प्रेमचंद जैसे आधुनिक यथार्थवादी साहित्यकार के लिए स्वाभाविक ही कहा जाएगा। ऐसा लगता है कि जैसे कविसम्राट 'हरिऔध' ने 'प्रियप्रवास' महाकाव्य में कृष्णकथा को आधुनिक रूप देने की कोशिश की, वैसे ही प्रेमचंद ने 'राम-चर्चा' गद्य में रामकथा को।

'राम-चर्चा' का कथासार इस प्रकार है—आरंभिक 'बालकांड' में प्रथमतः अयोध्या नगरी के सौंदर्य एवं वैभव के वर्णन-चित्रण के साथ मातृ-पितृभक्त श्रवण कुमार के पौराणिक आख्यान के वर्णनोपरांत यज्ञ के फलस्वरूप राजा दशरथ के पुत्र रूप में राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के जन्म के साथ कहानी आगे बढ़ती है। फिर यज्ञ-रक्षा हेतु विश्वामित्र के साथ जाते हुए राम-लक्ष्मण द्वारा मार्ग में ताड़का और फिर आगे सुबाहु के मारे जाने की बात है। यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् सीता-स्वयंवर का प्रसंग आता है, जहाँ विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण भी पहुँचते हैं। स्वयंवर में राम द्वारा धनुर्भंग के फलस्वरूप सीता के साथ उनका और साथ ही मांडवी, उर्मिला एवं श्रुतकीर्ति के साथ क्रमशः भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का विवाह होता है। इस सन्दर्भ में राम-लक्ष्मण के साथ परशुराम के संवाद पर तुलसीदास के मानस-वर्णित संवाद का पूरा प्रभाव है, लगता है कि जैसे यह उसका सरल गद्यानुवाद ही है।

4. प्रेमचंद, राम-चर्चा, अनुक्रमणिका
5. उपरिवत्, पृष्ठ — 3
6. तुलसीदास, रामचरितमानस, अयोध्याकांड, दोहा-12

'अयोध्याकांड' में राम-वनगमन की कहानी है। इसके कारणस्वरूप लेखक ने मंथरा द्वारा कैकेयी की स्त्रियोचित ईर्ष्या को उकसाने-उभारने का ही स्वाभाविक वर्णन किया है, न कि तुलसी के मानसोक्त "गई गिरा मति फेरि"[6] जैसी ईश्वरीय शक्ति के हस्तक्षेप का। कैकेयी के हठ के आगे दशरथ लाचार होते हैं और राम वनवास को सहर्ष स्वीकार करते हैं। उनके साथ सीता और लक्ष्मण भी वन जाते हैं। तदनंतर भरत जब अयोध्या आते हैं तो समस्त घटनाक्रम पर अत्यंत दुखी हो अपने सभी परिजन-पुरजन के साथ राम को मना लाने के लिए चित्रकूट पहुँचते हैं। किंतु, राम अपने निर्णय पर दृढ़ रहते हैं और भरत को समझा-बुझाकर वापस करते हैं। इस अवसर पर राम द्वारा भरत को दिया गया सदुपदेश वास्तव में आदर्श राजधर्म का मानदंड है। भरत अयोध्या की गद्दी पर राम की खड़ाऊँ को प्रतीकस्वरूप रख शत्रुघ्न को जरूरी हिदायतें दे स्वयं नंदीग्राम में तपस्वी का-सा जीवन जीने लगते हैं।

'अयोध्याकांड' के अनंतर 'वन-कांड' में विराध-वध के बाद पंचवटी-प्रसंग है। रावण की बहन कामातुरा शूर्पणखा द्वारा नीचता की हद पार करने पर लक्ष्मण उसके नाक-कान काट लेते हैं। वह भागी-भागी पहले खर-दूषण के पास जाती है और उन दोनों राक्षसों के मारे जाने पर फिर रावण के पास जाकर नमक-मिर्च मिलाकर उसे उकसाती और भड़काती है। अहंकारी रावण बदला लेने के ख्याल से मारीच के साथ मिलकर जाल रचता है। मारीच स्वर्णमृग के वेश में राम और लक्ष्मण को जब पर्णकुटी से दूर करने में सफल होता है, तो साधु वेशधारी रावण एकाकी सीता को उठा ले जाता है। मार्ग में यद्यपि साधु जटायु उसका कड़ा विरोध करते हैं, पर वह उन्हें आसानी से परास्त कर सीता को अपनी अशोक वाटिका के सुरक्षित घेरे में रख देता है। इधर राम-लक्ष्मण जब वापस आए तो कुटिया में सीता को न पाकर पागल-से हो गए। वे रोते-बिलखते भटक रहे थे कि जटायु से वस्तुस्थिति से अवगत होते हुए उसकी अन्तम क्रिया कर आगे बढ़े और फिर शबरी के हाथों जूठे फलों को खाकर उसे धन्य करते हुए आगे बढ़ते हैं।

'किष्किंधा कांड' में हनुमान की मध्यस्थता में राम और सुग्रीव के बीच मैत्री-संबंध स्थापित होता है। राम बालि का वध कर सुग्रीव को किष्किंधा का राजा बनाते हैं। सुग्रीव कुछ दिनों के लिए राज-भोग में भूले रहते हैं, लेकिन याद कराये जाने पर भयवश सीता की खोज में शीघ्र ही सन्नद्ध होते हैं। इस अभियान में उन्होंने अपने बहुतेरे सैनिकों को विभिन्न दिशाओं में भेजकर चुनिंदा विश्वासी वीरों हनुमान, जामवंत, अंगद, नल और नील को दक्षिण दिशा की ओर भेजा। बहुत खोज -बीन के बावजूद जब सीता का अता-पता नहीं चल पा रहा था, तो वे लोग काफी निराश होने लगे। किंतु, तभी उनकी भेंट जटायु के बड़े भाई बूढ़े साधु संपाति से होती है, जो रावण द्वारा सीता को लंका ले जाने की बात बताते हैं। तब समुद्र पार कर लंका में सीता का पता लगाने का कठिन काम था, जिसमें सबके असमर्थता जताने पर वीरवर हनुमान आगे बढ़ते हैं। इसके बाद 'सुंदरकांड' के अन्तर्गत हनुमान के लंका-प्रवेश की कथा है। हनुमान जी वहाँ रात्रि में एक छतनार वृक्ष के सहारे रावण के महल में प्रवेश करते हैं, जहाँ सीता को नहीं देखकर चिंतित होते हैं। किंतु, अगले ही दिन वे रावण के संग जा रहे राक्षसों का चुपके-चुपके पीछा करते हुए अशोक वाटिका पहुँचते हैं। रावण के लौट आने पर वे एकांत में सीता से मिलकर उन्हें ढाढस बँधाते हैं। इसके बाद बाग को तहस-नहस करने के जुर्म में वे मेघनाद द्वारा पकड़कर राजदरबार में लाये जाते हैं। वहाँ कुपित होकर रावण उन्हें बंदर बनाकर पूँछ में आग लगाने का आदेश देता है। तदनुसार हनुमान को बंदर बनाकर पूँछ में आग लगाई जाती है। इससे हनुमानजी को अच्छा मौका मिलता है और वे

पूरी लंका में आग लगा देते हैं और फिर भागकर इस पार अपने लोगों के पास चले आते हैं। तत्पश्चात् विभीषण भी रावण से दुत्कारा जाकर राम की शरण में आते हैं। अब राम सीता-उद्धार को उद्यत होते हैं और मुख्य रूप से नल-नील जैसे इंजीनियरों के सहयोग से समुद्र पर पुल बाँध सुग्रीव की पूरी सेना के साथ लंका पहुँचते हैं।

'लंकाकांड' के अन्तर्गत राम की ओर से अंगद को रावण के पास भेजकर अन्तम बार संधि-प्रस्ताव दिया जाता है। किंतु, मदांध और कामांध रावण जब एक नहीं सुनता, तो निदान दोनों के बीच भीषण युद्ध होता है। कुंभकर्ण, मेघनाद आदि एक-एक कर सभी बहादुर राक्षसों के मारे जाने के बाद आखिरकार रावण भी राम के हाथों मारा जाता है और विभीषण लंका का राजा बनते हैं। सीता हनुमानजी के साथ राम के पास आती हैं, किंतु उन्हें स्थिर जड़वत देख चिता सजाने की बात कहती हैं। जलती चिता में वे कूदना ही चाहती हैं कि वहाँ सभी लोग हाहाकार कर उठते हैं। इससे प्रजा की ओर से सीता की पवित्रता को लेकर राम निश्चिंत हो उन्हें अपनाते हैं और शीघ्र ही वहाँ से अयोध्या के लिए चल देते हैं। उनके सकुशल वापस आने पर अयोध्यावासियों की खुशी का ठिकाना नहीं रहता। शुभ दिन के शुभ मुहूर्त में राम का राज्याभिषेक होता है और सभी आनंदमग्न होते हैं।

'राम-चर्चा' के अन्तम 'उत्तरकांड' के आरम्भ में रामराज्य का वर्णन-विवेचन है। यह 'रामचरितमानस' में वर्णित रामराज्य से मिलता-जुलता है। इसके बाद राजा राम को गुप्त रूप से सीता के प्रति लोकापवाद की भनक लगने के उपरांत सीता-निर्वासन की बात है। गर्भवती सीता महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में आश्रय पाती हैं, जहाँ उनसे दो पुत्र-रत्न लव और कुश का जन्म होता है। वे दोनों अप्रतिम ओजस्वी, तेजस्वी एवं सभी कलाओं में निपुण निकलते हैं। इधर राम प्राणप्रिया सीता के परित्याग से यद्यपि अत्यधिक आहत और उदास रहते हैं, तथापि राजा के रूप में समस्त दायित्वों का सम्यक् निर्वाह करते हुए मंत्रियों की सलाह पर अश्वमेध यज्ञ करते हैं। उसमें वाल्मीकि मुनि भी आमंत्रित होते हैं। तरह-तरह के उत्सव-आयोजन होते हैं, जिसमें लव-कुश की गायन-कला पर सभी विस्मय-विमुग्ध होते हैं। भेद खुलता है। सीता बुलाई जाती हैं, किंतु पवित्रता का प्रमाण देने की मर्मांतक बात से उनका प्राणांत हो जाता है। इसी प्रकार आगे जब आदेश के उल्लंघन के कारण राम द्वारा राजधर्म का पालन करते हुए लक्ष्मण को भी देशनिकाला होता है और वे भी सरयू नदी में प्राणोत्सर्ग कर देते हैं, तब राम के लिए जीना दुर्वह हो जाता है। वे लव-कुश को अपना उत्तराधिकारी बना भरत और शत्रुघ्न के साथ जंगल की राह पकड़ जीवन से त्राण पाते हैं। अन्त में लेखक ने रामचंद्र के चरित्र में कर्तव्य के सर्वोपरि महत्त्व और स्थान को रेखांकित करते हुए बच्चों को हर हाल में कर्तव्य-पालन करते रहने की उत्तम शिक्षा दी है।

इस प्रकार 'राम-चर्चा' में लेखक प्रेमचंद ने राजा राम के जीवन से जुड़ी सभी प्रमुख बातों का वर्णन-चित्रण किया है। इस क्रम में अहल्या-उद्धार, लक्ष्मण-रेखा, समुद्र से मार्ग हेतु राम का अनुनय-विनय, लंका में हनुमान-विभीषण मिलन, संजीवनी बूटी लाने के क्रम में कालनेमि का अन्त जैसे महत्त्वपूर्ण प्रसंगों का सर्वथा अभाव यद्यपि रामकथा से परिचित मानस के लिए थोड़ा खटकनेवाला है, पर इससे कथारस में कोई बहुत बड़ा विघ्न उपस्थित नहीं होता। वर्णित सभी घटनाएँ नितांत यथार्थपरक और व्यावहारिक हैं। उनमें आश्चर्यजनक अथवा अविश्वसनीय अलौकिक ईश्वरीय आभा का आभास कहीं नहीं। इस दृष्टि से राम -जन्म, सीताहरण, लंकादहन, संजीवनी-ग्रहण, रावण-मरण, अग्निपरीक्षा आदि सारे के सारे प्रसंग द्रष्टव्य हैं।

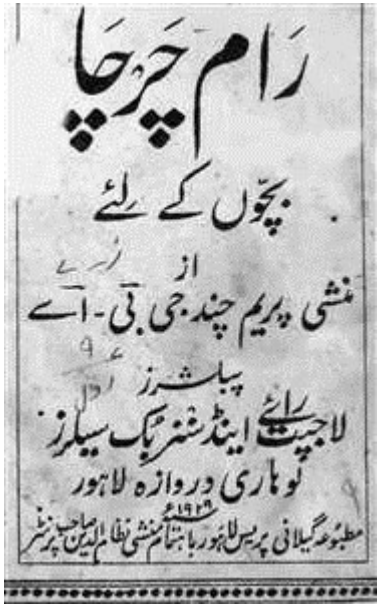

रामचर्चा के उर्दू संस्करण का मुखपृष्ठ

घटना-संघटना की तरह पात्रों का चरित्र-चित्रण भी इसमें सहज मानवीय धरातल पर ही हुआ है। यहाँ राम,लक्ष्मण,सीता आदि सभी पात्र मनुष्य के रूप में ही दिग्दर्शित हैं। उल्लेखनीय है कि मारीच, मेघनाद, रावणादि तो अनेक बार राक्षस कहे गए हैं, पर हनुमान, जांबवान, अंगद, सुग्रीव आदि के लिए एक बार भी बंदर-भालू का शब्द-प्रयोग नहीं है। हनुमानजी को तो एक स्थल पर स्पष्ट रूप से 'बलवान पुरुष'[7] कहा गया है। इसी प्रकार जटायु और संपाति भी 'साधु'[8] कहे गए हैं, न कि मानवेतर प्राणी गिद्ध पक्षी।

घटना-प्रसंगों के वर्णन-विवरण पर यद्यपि रामकथा से संबंधित 'रामचरितमानस' जैसे ग्रंथों का पर्याप्त प्रभाव है, तथापि आधुनिक स्वरूप देने के अतिरेकी उत्साह से उनमें कहीं-कहीं औचित्य का अतिक्रमण भी हो गया है। धनुर्भंग के फलस्वरूप विवाह के बाद बंदूकें छूटने,[9] बारात-विदाई के समय उपहारस्वरूप अरबी घोड़े दिये जाने,[10] भरत-कथन में जूतों का बंधन खोलने[11] आदि बातों में निश्चय ही ऐतिहासिक असंगतियाँ हैं।

इसी प्रकार वातावरण-निर्माण में भी लेखकीय स्वतन्त्रता की अधिकता दिखाई देती है और प्रेमचंद की भाषा में हिन्दी-उर्दू की खिचड़ी तो आम बात ही है।

समग्रतः प्रेमचंद की 'राम-चर्चा' रामकथा को सरल भाषा में रोचक ढंग से प्रस्तुत करनेवाली एक बालोपयोगी रचना है, न कि उसमें नवीन उदात्त आयाम जोड़ने या उद्घाटित करनेवाला कोई गुरु-गंभीर ग्रंथ। प्रेमचंद से वैसी अपेक्षा उचित भी नहीं। वे कोई तत्त्वज्ञ, शास्त्रज्ञ या रामकथा-विशेषज्ञ नहीं थे। एक सृजनशील साहित्यकार के रूप में उनका उद्देश्य रामचरित् की महानता से बच्चों को परिचित कराना और उन्हें नैतिक शिक्षा देना रहा है। एतदर्थ इसमें उन्होंने यथास्थान बड़ी अच्छी-अच्छी बातें कही हैं, यथा—

—*"सुशील बेटे पिता की आज्ञा को ईश्वर की आज्ञा समझते हैं,"*[12]

—*"कर्तव्य के मुकाबले में शारीरिक सुख का कोई मूल्य नहीं,"*[13]

—*"दुख में धैर्य के सिवा और कोई चारा नहीं,"*[14]

—*"कुसमय में स्त्री और मित्र की परख होती है,"*[15]

—*"औचित्य की सदैव जीत होती है"*[16] आदि-आदि।

इस तरह 'राम-चर्चा' वस्तुतः रामकथा के माध्यम से पाठकों को उच्च नैतिक गुणों की ओर प्रेरित करनेवाली एक पठनीय पुस्तक है। अतः इसका महत्त्वामहत्त्व अथवा औचित्यानौचित्य इसी दृष्टि से विचारणीय और परीक्षणीय है।

***

7-16. प्रेमचंद, राम-चर्चा, पृष्ठ संख्या क्रमशः — 102, 73/93, 13, 17, 45, 32, 36, 39, 40, 110.

स्मृतियों के झरोखे से

गाँव की स्मृतिशेष रामलीला

श्रीमती रंजू मिश्रा

द्वारा, श्री बी.के. झा, प्लॉट सं. 270, महामना पुरी कालोनी, बी.एच. यू., वाराणसी

यह बार बार कहने की आवश्यकता नहीं कि रामलीला ने जनसामान्य को अध्यात्म से जोड़े रखा। खासकर गाँव में होनेवाली रामलीला में तो यह अधिक स्पष्ट प्रतीत होता है। अब लगभग 40 वर्षों से रामलीला लगभग बंद हो चुकी है। इससे पहले फटी धोती और साड़ी का परदा टाँगकर रामलीला करनेवाले कलाकार चैत या अगहन मास में कैसे आबालवृद्धवनिता समुदाय को एकत्र कर लेने में सक्षम होते थे, यह आज की पीढ़ी के लिए एक अचम्भा है। चेहरे पर मैनसिल (मुर्दाशंख) पोतकर कलाकार कभी कभार स्वयं मंच के आगे टँगे पैट्रोमैक्स में हवा भरने पहुँच जाते थे। मिट्टी से भरकर बनाया गया छोटा मंच, बगल में चंदन-तिलक लगाकर हारमोनियम पर रामचरितमानस की चौपाई गाते व्यासजी, सब उस गाँव के लिए पूज्य बन जाते थे। स्मृतियों के झरोखे से आज रामलीला के उन पहलुओं पर नजर डालने की आवश्यकता है। लेखिका ने बिहार प्रान्त के मधुबनी जिला के झंझारपुर प्रखण्ड में अवस्थित पैटघाट की 24-26 दिनों की रामलीला को अपनी स्मृति के आइने में देखने का प्रयास किया है।

दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्यसमाज।
जीतहु मनिय सुनिय अस राम चंद्र के राज॥

रामचरितमानस में रामराज्य के प्रसंग की कुछ चौपाईयों में नागरिकों की नैतिक चेतना का बहुत ही व्यापक वर्णन किया गया है। वहाँ के निवासियों में नैतिक ऊँचाई अपने चरम पर था। जिस समाज के निवासियों में जितना अधिक नैतिकता का बोध होगा, वह समाज निश्चित रूप से लौकिक कष्टों से मुक्त होगा।

सब जन करहिं परस्पर प्रीति
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना
नहि कोउ अबुध न लच्छन हीना॥

व्यक्ति से ही परिवार बनता है और परिवार से एक समाज का निर्माण होता है। जिस समाज मे जितने अधिक चरित्रवान लोगों कि संख्या होगी, वह समाज उतना ही उन्नत होगा और सुचारु रूप से चलेगा। हमारे सनातन धर्म के मूल मे अन्तर्निहित स्थूल तथ्य भी यही है। व्यक्ति के रूप मे ऐसे चरित्रों का निर्माण करना, जिससे उसे अपनी मर्यादाओं का भान हो सके, यही सनातन धर्म का मर्म भी है। यदि सभी लोग एक दूसरे प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझें, अपनी सीमाओं में मर्यादाओं का पालन करें और सबों के प्रति संवेदी हों तो हर युग में रामराज्य की परिकल्पना साकार होगी।

किसी समाज का सुदृढ होना व्यक्ति के आत्मबल को बढाता है ,उसे उस समाज का अंग होने का गौरव-बोध भी करता है। व्यक्ति को एक आदर्श नागरिक बनाने का यह दायित्व परिवार और समाज का ही है। एक चरित्रवान और ऊँचे आदर्शों और मूल्यों के अनुरूप व्यक्तित्व का चरित्र निर्माण कर उसकी चेतनाओं को उर्धोन्मुखी बना इस लोक से परलोक तक की यात्रा का एक सुगम, स्वस्थ और संतुष्ट पथिक का पथ प्रशस्त करना बनाना ही परिवार और समाज का अप्रत्यक्ष मूल उद्देश्य होता है।

व्यक्ति के चरित्र निर्माण मे हमेशा से ही हमारे पौराणिक आख्यानों की महती भूमिका रही है। लेकिन वेदों, उपनिषदों का अध्ययन जनसामान्य के लिए संभव नही हो सकता था। वर्णव्यवस्था के तहत आदर्श समाज की व्यवस्थाओं में महिला सहित सभी वर्गों के लिए शिक्षा की ऐसी कोई व्यवस्था भी नहीं थी, लेकिन मनुष्य मात्र के लिए शिक्षा का नैसर्गिक अधिकार तो है ही। इसलिए समाज मे प्रचलित परंपराओं यथा, व्रत-त्योहार, लोकगीत, नानी दादी के किस्से इत्यादि अनेक ऐसे लोकज्ञान के स्रोत रहे हैं, जो चरित्र निर्माण में अप्रत्यक्ष गुरु की भाँति भूमिका का निर्वाह करता है। ये लोक-परंपराएँ सभी जाति और वर्गों के लिए एक समान होती है।

परम्परा में गार्हस्थ्य धर्म के पालन के साथ उनके लिए ढेरों ऐसी व्यवस्थाएँ समाहित हैं। वेद और पुराणो के इन आख्यानों में पात्रों की भूमिका का संयोजन, कथा के विषयवस्तु में उपस्थित कारण और निवारण के बीच विभिन्न तरह के परिस्थितियों मे पात्रों का संघर्ष उसका विवेक, मनोबल, अच्छे-बुरे कर्मो का प्रतिफल, नैतिक उत्थान या पतन से उपजे परिणामों का मनुष्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। उसे एक दिशा-निर्देश-सा सुगम पथ प्राप्त होता है, परन्तु वेद और पुराणों का अध्ययन हर किसी के लिए संभव नही रहा है। इसलिए समाज मे प्रचलित अनेक परंपराओं से ऐसे लोकज्ञान प्राप्त होने के स्रोत प्रचलित हैं।

इन सभी आख्यानों मे सबसे महत्त्वपूर्ण और प्रभावी रामायण की कथा ही रही है, जिसके साथ लोग सहजता अपने को जोड़ सके हैं। राजा दशरथ के एक परिवार की स्थिति परिस्थिति से उपजे परिणामों के आधार पर ही जीवन के प्रत्येक पहलुओं यथा, त्याग, कर्तव्य और प्रेम के बीच धर्मार्थ और सत्य की विजय का यह संघर्ष कथा सबके लिए प्रेरक रहा है। राम का आदर्श चरित्र जो निष्काम होकर, व्यक्तिगत ऐषणाओं से ऊपर उठकर एक-एक संबंधों की मर्यादाओं को मान देता हुआ, रागात्मकता के साथ, वेदविहित धर्म से लेकर लोक-धर्म के पालन का अद्भुत उदाहरण कायम किया।

आदिकवि वाल्मीकि से लेकर आज तक के रचनाकारों के शब्दों में आदर्श पुरुष राम ही छाए रहे हैं। लेकिन, राम के चरित को एक आदर्श पुरुष में निष्ठित देवत्व को जन-जन के हृदय मे स्थापित करने में तुलसीदास ने सबको पीछे छोड़ दिया। सामान्य से सामान्य लोगों के हृदय में रामभक्ति को स्थापित करने में जितना सफल तुलसी का 'मानस' रहा, वैसा तो आदिकवि वाल्मीकि का ग्रन्थ भी नहीं कर सका। मानस की चौपाइयों के गायन में एक अलौकिक आकर्षण लोगों को बरबस ही अपने तरफ आकर्षित कर लेता है।

ऐसा सुना जाता है की कृष्ण की बाँसुरी में वह शक्ति थी कि मनुष्य क्या पशु पंछी भी सुध-बुध खो देते थे, कुछ वैसी ही अनुभूति मानस के सस्वर गायन के समय आभासित होता है। यह महिमा मानस के पाठ का ही है कि यदि हजारों बार भी किया जाता है, तब भी ऐसा अनुभव होता है जैसे की पहली बार पढ रहे हैं। मानस का पाठ जितनी बार किया जाता है, वह उतनी ही व्यापक अर्थों को प्रकट करती है। यह निश्चय ही

रामलीला पार्टी स्वयं ही गाँव-गाँव घूमकर इसका आयोजन करती थी। न तो कोई ग्रामीण संस्था उन्हें बुलाती और न ही कोई व्यवस्था ही करती थी। इनकी टोली अपने सीमित साधनों के साथ राम नाम का रसास्वादन कराने खुद ही आ जाती थी। बाँस बल्ली, पर्दे दो चार पट्रोमैक्स, कुछ पुराने पड़े पोशाकों के बक्से, एक हारमोनियम, एक ढोलक, मजीरा, बाँस की पट्टियों और सरकंडों से बना कुछ तीर-धनुष, हनुमानजी का पीतल का मुखौटा बस यही कुछ था उनका साधन, जिसके सहारे वे हमे अयोध्या से लेकर जनकपुर, प्रयाग से पंचवटी, किष्किंधा के अरण्य और सोने की लंका का दर्शन करा देते थे।

तुलसी की भक्ति और कवित्व की पराकाष्ठा का चरम प्रभाव है।

रामकथा के अन्य किसी भी माध्यमों की अपेक्षा रामलीला की प्रभावोत्पादकता सर्वोपरि रही है। लोकज्ञान के विभिन्न विधाओं में खासकर रामायण की कथा का जन-जन तक के हृदयस्थल में स्थापित करने मे रामलीला ने बहत बड़ा काम किया है। समाज की अन्तम कड़ी तक में रामकथा के प्रसार मैं रामलीला की ही भूमिका रही है। जिसे अक्षर का ज्ञान नही था, उसे रामायण की कथा का मर्म भी ज्ञात था। वैसे भी दृश्य विधा का प्रभाव दर्शकों के दिलोदिमाग पर स्थायी रूप से अंकित हो जाता है।

संयोग से हममें से कुछ ऐसे लोग अभी शेष हैं, जिन्होनें अपनी पुरानी प्रथा और ग्राम्य जीवन को नजदीक से जीया है। बीस से पचीस साल तक में परिवर्तन का चक्र इतनी तेजी से घूम गया, जिसमें बहुत सारी प्रथाएँ, रीति रिवाज यहाँ तक कि हमारे जीवन-दर्शन में भी आमूल-चूल परिवर्तन आ गये। कुछ चीजें तो ऐसे छुटी कि लगता ही नही हैं कि कभी वह अपने अस्तित्व में रहा हो।

ऐसी एक दृश्यविधा थी रामलीला की। वसंत की ऋतुसंधि में जब प्रकृति का सम्यक् व्यवहार सभी प्राणियों को शीत और ताप के प्रभाव से मुक्त रखती है, उस समय विशेष में दस-पाँच गाँव के बीच पड़नेवाले सार्वजनिक स्थलों पर रामलीला का मंचन होता था। रामलीला की टोली को 'रामलीला पाटी' कहा जाता था, जो उसके संचालक के नाम से ही जानी जाती थी। उन दिनों हमारे क्षेत्र मे दो पाटीयाँ थी। एक था 'हरषा-पाटी' जो हर्षनाथ झा के नाम पर था और दूसरा 'वैद्यनाथ पाटी'। हर्षनाथ खुद अभिनय करते थे। छः फीट के कद्दावर इंसान जब रावण की भूमिका में गरजते थे तो बच्चे तो डर से नानी-दादी की गोद में दुबक जाते थे।

दूसरी पाटी थी 'वैद्यनाथपाटी'। वैद्यनाथजी स्वयं व्यासजी थे। उनकी आवाज में गजब का आकर्षण था। उनकी सुरीली आवाज आज तक मेरे कानो मे गूँजती है। हारमोनियम पर जब वे रामायण की चौपाईयों का गायन करते तो उस स्वर की सम्मोहनी प्रभाव से स्वतःलोग खींचे चले आते थे। रामलीला पार्टी स्वयं ही गाँव-गाँव घूमकर इसका आयोजन करती थी। न तो कोई ग्रामीण संस्था उन्हें बुलाती और न ही कोई व्यवस्था ही करती थी। इनकी टोली अपने सीमित साधनों के साथ राम नाम का रसास्वादन कराने खुद ही आ जाती थी। बाँस बल्ली, पर्दे दो चार पट्रोमैक्स, कुछ पुराने पड़े पोशाकों के बक्से, एक हारमोनियम, एक ढोलक, मजीरा, बाँस की पट्टियों और सरकंडों से बना कुछ तीर-धनुष, हनुमानजी का पीतल का मुखौटा बस यही कुछ था उनका साधन, जिसके

सहारे वे हमे अयोध्या से लेकर जनकपुर, प्रयाग से पंचवटी, किष्किंधा के अरण्य और सोने की लंका का दर्शन करा देते थे। कला ऐसी कि एक पल के लिए भी यह आभास नहीं होता कि हम साक्षात् अयोध्या नगरी या लंका का ऐश्वर्य, जनकपुर की श्रीसंपन्नता के साथ उच्चकोटि के जीवन-दर्शन से उपजे लोक-व्यवहार के अंग नहीं हैं। छोटे-छोटे फूल पौधों की डालियों से मंच के नीचे बनी जनकजी की फुलवारी का वही लोकानंदकारी प्रसंग, उसी फूलपौधों से बनी अशोक वाटिका, दर्शकों की आँखों से आँसू गिरा देती थी। लंका-दहन हो या ऋष्यमूक पर्वत, पुष्पक विमान हो या हरिश्चंद्र नाटक की बनारस नगरी सब कुछ उन दो चार पर्दे और सशक्त भावपूर्ण अभिनय के सहारे जीवंत हो उठता था।

शुरुआत में जब बाँस-बल्ली और पर्दे टँगाते रहते तो बच्चों के उमंग उत्साह और दो चार मासूम सवाल के सिवा उनपर किसी का बहुत ध्यान नही जाता था। बच्चों मे बड़ी जिज्ञासा रहती कि किस दिन से यह शुरु हो रहा है। दो ही वक्त का खाना बनता था, बर्तन के नाम पर खाली पड़े तेल के टिन वाला कनस्टर रहता था, जो दुकानदारों से माँगकर लाते थे। ऐसा भी नहीं था कि मात्र यह उनकी रोजी रोटी था, केंद्रीय भाव में भगवान के प्रति पूरी निष्ठा थी। पचीस से तीस लोंगों की टोली का बहुत ही साधारण-सा खाना पकता था और पहला भोग उस टोली के व्यासजी भगवान के फोटो को ही अर्पित करते थे। दो से तीन दिन में मंच की व्यवस्था कर शाम को शुरू हो जाती थी राम की लीला।

आरम्भ में मंच के आगे मात्र कुछ बच्चे और गाँव के दस-बीस लोग ही रहते थे, लेकिन ज्यों ही हारमोनियम पर प्रार्थना के स्वर उठान लेते, धीरे-धीरे लोग आकर बैठते जाते। सर्वप्रथम पर्दा उठता था किशोरवय के सीताराम का स्वरूप, सिंहासन पर बैठे भगवान के झाँकी दर्शन के लिए। फिर दो चार उनका

दो ही वक्त का खाना बनता था, बर्तन के नाम पर खाली पड़े तेल के टिन वाला कनस्टर रहता था, जो दुकानदारों से माँगकर लाते थे। ऐसा भी नहीं था कि मात्र यह उनकी रोजी रोटी था, केंद्रीय भाव में भगवान के प्रति पूरी निष्ठा थी। पचीस से तीस लोंगों की टोली का बहुत ही साधारण-सा खाना पकता था और पहला भोग उस टोली के व्यासजी भगवान के फोटो को ही अर्पित करते थे। दो से तीन दिन में मंच की व्यवस्था कर शाम को शुरू हो जाती थी राम की लीला।

सधुक्करी कीर्तन होता और आरती की जाती थी। गानों के साथ यह आरती और भजन बहुत ही मनोहारी होता था। यह नित्य होता था। आरती को दर्शकों के पास घुमाया जाता था।

पहले दिन का प्रसंग नारदमोह से ही आरम्भ होता था। जब नारदजी को विष्णु से बंदर का रूप मिला और वे समझ नहीं पाए, उस समय जय-विजय द्वारपालों का विदुषकीय अभिनय देखते बनता था। नारद और उन दोनो का अभिनय देख लोग हँसते-हंसते लोटपोट हो जाते थे। रामलीला के मंचन में प्रसंग दर प्रसंग दर्शकों के मनोरंजनार्थ विदूषक की भूमिका गढ़ी जाती थी, जो लोगों को बहुत भाता था। विदूषक को आमभाषा मे 'विपटा' कहा जाता था। बड़े मंजे कलाकार होते थे। दर्शकों का खूब मनोरंजन होता था।

रामलीला में पात्रों के बीच आपसी संवाद राधेश्यामी रामायण की कवित्तों से होती थी।बड़ा ही प्रभावी होता था यह संवाद शैली, जिसका बोल वाद्य-संगत के साथ खिल उठता था। सभी पात्रों को इसका इतना अभ्यास रहता कि प्रवाह कभी टूटता नहीं था। युद्धप्रसंग का कवित्त गायन तो लोगों में भी वीररस प्रवाहित कर देता था-

हे नाथ मुझे आज्ञा दो मैं पंपापुर को जाता हूँ।
रावण का बेटा मेघनाद को अभी पकड़ कर लाता हूँ।

बीच-बीच मे व्यासजी मानस की चौपाईयों के गायन के द्वारा प्रसंग को अग्रसारित करते रहते थे। प्रसंग के मर्मानुसार कुछ क्षेत्रीय गीतों का समावेश भी रहता था।

हो रघुनंदन दुष्ट निकंदन लीहो न हमरी खबरिया हो राम।

जब सीता यह गाकर विलाप करतीं तो दर्शक भावुक हो रोने लगते थे। प्रसंग दर प्रसंग यह गायन चलता रहता था।

मंचन के बीच मे ही माला उठाने का आग्रह बड़े ही भाव पुर्ण बोली से, नाना तरह के वाक्पटुता के साथ किया जाता था। माला उठाने का अर्थ था उनके समूह के लिए भोजन का भार उठाना।यह एक शाम के लिए भी हो सकता था, बांकी तो जिसकी जैसी श्रद्धा।आरम्भ के दो-चार दिन तो माला नही उठ पाता था, लेकिन उनकी अपनी शालीनता और धार्मिक पात्रों के अभिनय की सहजता के बल पर कुछ ही दिनों में लोग खुद ही इतने रम जाते थे कि घंटो जिस माला को उठाने की विनती की जाती थी, वह माला तो दस-दस दिन एडवांस में उठने लगता था।

दूसरे दिन के मंचन के समय माला उठानेवाले परिवार का सरस व्यंजित भाषा में भाव-भंगिमा के साथ गुणगान किया करते थे। मात्र खड़ा अनाज और तेल मशाले सब्जियों के लिए कुछ नगद पैसे लोग देते थे, लेकिन उसका गुणगान ऐसा होता, मानो छप्पन भोग दिए गये हों, ये थी उनकी सरल, सहज कृतज्ञता।

दर्शकों की संख्या दिन प्रति दिन बढती ही जाती थी। गाँव -गाँव से लोग आकर रामलीला को देखते थे। राम-मय हो जाता था उस समय का गाँव। हर चौक-चौराहे पर सुबह-सुबह चाय की दुकानों पर उन्ही प्रसंगों की चर्चा होती रहती थी। आज कौन सा प्रसंग का मंचन होगा इसकी जिज्ञासा बनी रहती थी। अंगद-प्रसंग को देखने दूर-दूर से लोग आते थे। लोग उन सभी पात्रों में उसके उसी रूपों का मानों साक्षात् दर्शन करते थे। वे राम के चरित्र को अभिनीत करनेवाले में राम को ही देखते थे। उनके प्रति वैसी ही श्रद्धा रखते थे। अपने को ऐसे जोड़ लेते थे जैसे वह साक्षात् राम हों। वैसी ही श्रद्धावनत व्यवहार।

एक बार की बात याद आ रही है, जो लड़का राम की भूमिका निभाता था, उसे गाँव के एक प्रतिष्ठित बुजुर्ग ने नित्यक्रिया के समय उसको बीड़ी पीते हुए देख लिए। वह भूल गये कि यह लड़का किसी निम्न आर्थिक वर्ग के परिवार से अपनी रोजी-रोटी के लिए अभिनय करता है, उन्हें तो उसमें साक्षात् राम दिखते थे, नित्य उसका पैर छूते थे। उन्होंने अपना आपा खो दिया, पीटने लगे उसे। किसी तरह लोगों ने उसे बचाया। यह था रामलीला का महत्त्व, जो इस तरह से लोगों को आत्मा से राम में जोड़ जाते थे, पूरे समर्पित भक्ति भाव के साथ।

रामलीला के प्रसंगो को एक-आध दिन विराम देकर बीच-बीच में नाटकों को भी मंचित किया जाता था। सत्य हरिश्चंद्र, भतृहरि, चंद्रहास और सुल्ताना डाकू। ये कुछ ऐसे नाटक थे, जो दर्शक के दिलोदिमाग पर महीनों छाए रहते थे। सत्य हरिश्चंद्र नाटक का वह गीत जब वह अपने को काशी नगरी में घूम-घूम कर बिकने के लिए जनता से कहते

ऐ काशी के वासीयों, सुन लो मेरी पुकार
मैं बिकता कोई खरीद लो, होगा बड़ा उपकार॥

इसे सुनकर दर्शकदीर्घा का धैर्य टूट जाता था। हरिश्चंद्र नाटक के समय ऐसा कोई भी दर्शक चाहे महिला, पुरुष या बच्चे, नहीं रहा होगा, जिसके गमछे या आँचल नोर से भीगा नहीं होगा।

चंद्रहास नाटक भी बहुत मार्मिक था, जो त्याग की मिशाल आमलोगों के सामने प्रस्तुत करता था। भर्तृहरि में सांसारिक विषय परिस्थिति से उपजे संकट से एक

सीख मिलती थी। कुल मिलाकर रामलीला पार्टी की भूमिका समाज में लोगों का मनोरंजन करने के साथ ही एक चेतना जगाने का काम भी करती थी।

राजगद्दी के दिन सभी घर के कम से कम भगवान का राज्याभिषेक देखने और चढावा चढाने के लिए उपस्थित रहते। यह उनका धार्मिक दायित्वबोध था। श्रीसीताराम के जीवन में उनके घोर संघर्षों और संकटों के बाद घर वापसी और राजतिलक देखने मात्र से लोगों को आत्मिक संतुष्टि मिलती थी। लगभग महीने भर राम की लीला दिखाकर, राममय वातावरण को भासित कर अब इन लोगों के जाने की बेला आ जाती थी, लेकिन राम के पवित्र चरणों को घर घर पहुँचाने का दायित्व भी इनके ऊपर था।

नवोढा दुल्हन, कुलीन परिवार की जो माता-बहनें रामलीला को नहीं देख पाती थीं, उनके दर्शनार्थ, राम के स्वरूप को घर घर ले जाते थे, जिसे 'विलोकी' कहा जाता है। लोग बहुत ही आदर-सत्कार करते थे। सभी अपने दरवाजे पर भगवान की आरती उतारते, उन्हे भोग लगाते थे। साथ ही उन सभी लोगों के लिए चाय नाश्ते का इंतजाम भी करते थे। यथाविभव सम्मान सहित अन्न-वस्त्र-नगद देते थे। इसी क्रम में किसी बड़े घर के दरवाजे पर बैठकर घंटों भजन-कीर्तन भी करते थे और लोग सुनते थे।

जिस दिन इनकी टोली अपने लाव-लश्कर के साथ दूसरे गाँव चली जाती थी तो सबका मन उचटा उचटा सा लगता था। बहुत सूना सा लगता था। ऐसे लगता था जैसे कुछ खो सा गया है।

अब तो यह सब बातें इतिहास बन कर रह गयी है, लेकिन हमारे मन-मस्तिष्क पर उनकी सादगी, उनकी समर्पित कला अपनी अमिट छाप छोड़ चुकी है। शायद ही अब कोई शेष बँचे होंगें लेकिन जहाँ भी हों, उन सबको शत-शत नमन।

***

बाली : रामायण संस्कृति की कला भूमि :

—डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' द्वारा प्रेषित

"बाली के बारे मे सभी भारतीय एकमत से सहमत होते है कि वहॉ रामायण व रामलीला बहुत होती है, परन्तु मै वहॉ की विविधता व व्यापकता दोनों से चमत्कृत हूँ। हम सोच भी नही सकते कि बाली मे रामायण संस्कृति कितने गहरे तक पैठ बना चुकी है। मुझे मेरे मित्र बाली से रोज़ कुछ न कुछ फोटो विडियो भेजते है। वहाँ के हिंदू विश्वविद्यालय से हमारा एम ओ यू भी है।

अभी ताज़ा फोटो वहॉ के प्राचीन खुले मच की दीवारों पर रामायण अंकन से सम्बंधित है। रामायण के सभी महत्वपूर्ण प्रसंगों को सुंदर कारीगरी से प्रस्तुत किया गया है। भारत मे शायद ही ऐसा कोई प्रेक्षागृह हो।"

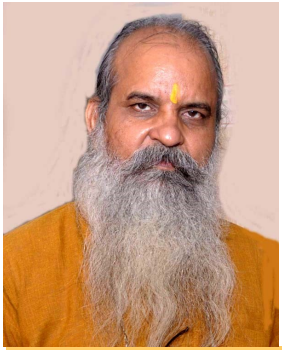

रामभक्ति को जीवंत करती रामलीलाएँ

डॉ. विनोद बब्बर

अविभाजित पंजाब में 1950ई. जन्मे संन्यासी साहित्यकार, पत्रकार, हिन्दीसेवी एवं राष्ट्रवादी चिन्तक। 'युगे युगे राम', 'महाभारत और आज', 'संस्कृति सेतु', 'प्रताप महान', 'मॉरिशस का इतिहास', 'भगीरथ के देश में', 'जालियाँवाला बाग की गूँज' आदि 36 पुस्तकें प्रकाशित, 6 प्रकाशनाधीन, 7 पुस्तकों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद। आपके साहित्य पर 6 शोधकार्य हुए हैं। सम्प्रति : ए-2/9ए, हस्तसाल रोड, उत्तम नगर, नई दिल्ली-59.

रामकथा की व्यापकता की तरह रामलीला भी किसी ने किसी रूप में भारत सहित पूरे दक्षिण एसियाई देशों में व्याप्त रही है। भारत में यद्यपि संस्कृत भाषा की परम्परा में भी रामलीला प्राचीन काल से होती रही है, जिनके अनेक संकेत मिलते हैं। इस तथ्य की विवेचना इसी अंक के अन्य आलेखों में हो चुकी है। यहाँ पर लेखक ने तुलसीदास के पश्चात् की रामलीला की परम्परा के इतिहास पर प्रकाश डाला है। यहाँ चित्रकूट तथा बनारस की रामलीला पर्याप्त प्राचीन है। इलाहाबाद उच्च न्यायालय तथा मद्रास उच्च न्यायालय के फैसले में भी इस बात का उल्लेख है कि तुलसीदासजी के शिष्य मेघा भगत के द्वारा बनारस में रामलीला आरम्भ की गयी थी। साथ ही, लेखक ने यहाँ पर विदेशों में रामलीला के इतिहास पर प्रकाश डालने का भी प्रयास किया है।

हमारे अनुभवी पूर्वजों सन्तों-विद्वानों का मत रहा है कि जिस कार्य को करने, देखने अथवा स्मरण करने से हमारा मन, बुद्धि सन्मार्ग की ओर आकर्षित होते हैं, उसे बार-बार करना चाहिए। इसीलिए संस्कृति, सद्भावना, सच्चरित्र को जन-जन का व्यवहार बनाने के लिए श्रीकृष्णलीला और रामलीला-जैसे आयोजन सदियों से हर गाँव, कस्बे, नगर में होते रहे हैं जो भक्ति, अनुभूति, श्रद्धा, आस्था, प्रेम, दर्शन और श्रवण का एक ऐसा यज्ञ है जिसमें मनोरंजन का समावेश भी है। इसी भावना से काशी की रामनगर की प्रसिद्ध रामलीला के मंच पर अंकित किया—

'यत् कृत्वा चाथ दृष्ट्वा हि मुच्यते पातकैर्नरः।।'

अर्थात् ऐसा करने और देखने से मनुष्य पापों से मुक्त होता है। वास्तव में रामलीला लोककल्याण का एक चाक्षुणी यज्ञ है। आनन्द रस में डूबने का उपक्रम है। 'सत्यमेव जयते' का उद्घोष करनेवाला सांस्कृतिक पर्व है। रामलीला हमारे समाज की वह शक्ति है जो सांस्कृतिक धरोहर के रूप में प्राप्त है। यह एक ऐसा

सामूहिक उपक्रम है जिसमें केवल दर्शक ही नहीं, कलाकार, कारीगर, गायक, वादक, विद्वान्, लेखक और वर्तमान में तो सूचना प्रौद्योगिकी और संचार के माध्यमों से जोड़नेवाले सहभागी होते हैं। रामलीला धार्मिक परंपरा होती हुए भी सामुदायिक और सामाजिक परंपरा है और जिसमें सम्पूर्ण समाज अपने-अपने ढंग से 'रामकाज' से जुड़ता है।

यह वह परंपरा है जो कृष्णभक्ति और रामभक्ति का महत्त्वपूर्ण सोपान है चैतन्य महाप्रभु, महाप्रभु वल्लभाचार्य, रूपगोस्वामी, जीव गोस्वामी से तुलसीदास और मेघा भगत तक पहुँची।

रामलीला ने प्रभु लीला के रूप में जन-जन के हृदय में भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा को स्थापित किया है। देश के लगभग हर गाँव, हर कस्बे में शारदीय नवरात्र के अवसर पर रामलीला का आयोजन होता है। इसके माध्यम से बच्चों से बड़ों तक सभी मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की लीलाओं से जोड़ते हैं। विभिन्न भाषाओं, विभिन्न शैलियों और अपने ढंग के अनूठे संवादों के माध्यम से रामरस छवि पान का यह यज्ञ कब से चला रहा है कहना मुश्किल है।

यह माना जाता है कि गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामलीला की परंपरा को शुरू कराया, लेकिन उन्नीस सौ आठ में छन्नूदत्त व्यास बनाम बाबू नंदन महंत मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अपने फैसले में लिखा था कि 'रामलीला एक धार्मिक जुलूस है, जिसके माध्यम से ऐतिहासिक चरित्रों की पूजा की जाती है। यह लीला मेघा भगत के समय से हो रही है, जो संवत् सोलह सौ के आसपास विद्यमान थे। भारत में शोभायात्रा की परंपरा सदियों से चली आ रही है अतः यह आवश्यक नहीं कि वह किसी मन्दिर या देवस्थान से संपन्न हो हिंदुओं के नगरों में जिनका तनिक भी महत्त्व है वर्ष-प्रतिवर्ष रामलीला का आयोजन होता है।'

इसमें कोई दो राय नहीं कि तुलसी ने रामचरितमानस के माध्यम से अपने गहन अध्ययन चिन्तन अनुभव ज्ञान को परिष्कृत ढंग से भारतीय मानस के सम्मुख रखा। वास्तव में श्रीराम को जन-जन तक पहुँचाने में रामचरितमानस की बहुत बड़ी भूमिका है। लेकिन जहाँ तक रामलीला का प्रश्न है यदि हम इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णय पर विचार करे तो कहा जा सकता है कि मानस की रचना से पूर्व भी रामलीला होती थी। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि रामचरितमानस की रचना संवत् 1631 में हुई थी।

चित्रकूट की रामलीला जिसे 'झाँकी-लीला' कहा जाता है लगभग 500 वर्ष का इतिहास लिए हुए है। तो दूसरे लीला बनारस के अस्सी घाट की है जो लगभग 430 वर्षों से हो रही है।

गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा स्थापित इस लीला में शरद पूर्णिमा के दिन तुलसी घाट पर रामजी का राजतिलक आयोजित किया जाता था।

Mr.A.Santhos Yadav vs The Bar Council Of Tamil Nadu on 4 October, 2014 : Writ Petition No.10560 of 2015 and M.P.No.1 of 2015

ORDER

"12. Megha Bhagat, who was a disciple of Tulsidas – the author of Ram Charitha Manas, seems to have organized Ram Leela Shows way back in the early 17th Century. Ever since then, Ram Leelas are performed in various parts of the country. On the last day of the Show, the effigy of Ravana is burnt and the triumph of good over evil is celebrated by this last act of burning of the effigy of Ravana.

13. At about the same time, in the early 17th Century, a similar practice appears to have emerged in England. It is stated that the Catholic dissident Guy Fawkes and 12 of his friends hatched a conspiracy to blow up King James I of England during the opening of Parliament on November 5, 1605. But, the assassination attempt was foiled the previous night, when Fawkes was discovered in a cellar below the House of Lords. Londoners immediately began lighting of bonfires in celebration that the plot had failed. Few months later, the Parliament declared November 5 as a public day of thanksgiving. Ever since then, Guy Fawkes Day also known as Bonfire Night, is celebrated in one form or the other. During the celebrations, the effigies of Guy Fawkes along with that of politicians and celebrities of the current day are also burnt as a mark of protest. This is why the burning of effigy was not made an offence in England."

तीसरी शैली की रामलीला जिसे घटित रामलीला कहा जाता है काशी के कुछ सन्तों द्वारा आयोजित की जाती थी। यह लीला एक स्थान पर न होकर अलग-अलग प्रसंगों को अलग-अलग स्थानों पर दिखाया जाता था। इसका कोई मंच नहीं होता था। काशी की रामलीला के बारे में अनेक वर्णन मिलते हैं। कहा जाता है कि मेघा भगत द्वारा वाल्मीकि रामायण के आधार पर होनेवाली यह लीला बाद में रामचरितमानस के अनुसार होने लगी।

अनेक अनुभवी कलाकारों द्वारा प्रस्तुत की जानेवाली इस रामलीला के विषय में अनेक कथाएँ भी प्रचलित हैं। उस समय एक अंग्रेज पादरी माइकल फरसन ने हनुमानजी का अभिनय करनेवाले पात्र को ललकारा तो वह 50 फीट (उस समय प्रचलित नाप 40 हाथ) चौड़ी वरुणा नदी को लाँघ गए थे। स्वयं काशी नरेश भी भारी भीड़ में रामलीला देखनेवालों में शामिल रहते थे।

यह ऐतिहासिक तथ्य है कि मुगलों द्वारा हमारे मन्दिर नष्ट करने से जनसामान्य में जो निराशा उत्पन्न हो गई थी, उसे दूर करने के लिए वल्लभाचार्यजी द्वारा रासलीला की परंपरा आरम्भ की गई। इसके अतिरिक्त देश के विभिन्न भागों में शोभायात्रा, चित्रपट्टी, कक्ष गायन, नाटक, नृत्यनाटिका, और छाया नाटकों की प्रथा थी। तुलसीदासजी ने काशी में रामलीला की जो परंपरा आरम्भ की उसमें उन्होंने देश के विभिन्न भागों के मुखोटे लिए, वेशभूषा ली, कहीं से संवाद शैली ली, कहीं से मन्दिर से शृंगार योजना ली तो इस तरह उस भव्य रामलीला में एकता के दर्शन होते थे।

काशी में होनेवाली रामलीला अपने अखिल भारतीय विधाओं और शैली के माध्यम से चर्चित हुई। तो देश के अनेक ऐतिहासिक नगरों की रामलीला भी बहुलोकप्रिय रही है। भारत के अतिरिक्त बाली, जावा, लंका आदि में प्राचीन काल से यह किसी न किसी रूप में प्रचलित रही है। वर्तमान में तो मोरिशस, फिजी, सुरिनाम, अफ्रीका सहित दुनिया के हर उस देश में रामलीला होती हे जहाँ भारतवंशी हैं। बाली, जावा, मलयेशिया में भी रामनाट्य होते हैं, इंडोनेशिया के जोघ्या (अयोध्या) में तो प्रत्येक पूर्णिमा पर चार दिनों तक रामनाट्य कार्यक्रम होते हैं। अनेक ऐसे प्रमाण मिलते हैं जिससे ज्ञात होता है कि दक्षिण-पूर्व एशिया में प्राचीन काल से रामलीला की परम्परा थी।

जावा के सम्राट् वलितुंग के एक शिलालेख में एक समारोह का विवरण है जिसके अनुसार सिजालुक ने उपर्युक्त अवसर पर नृत्य और गीत के साथ रामायण का मनोरंजक प्रदर्शन किया था। बर्मा ने 1767 में स्याम (थाईलैड) पर आक्रमण किया था। स्याम पराजित कर वे बहुमूल्य सामग्रियों के साथ रामलीला कलाकारों को भी अपने साथ ले गये। तत्पश्चात् बर्मा के राजभवन में थाई कलाकारों द्वारा रामलीला का प्रदर्शन होने लगा। इंडोनेशिया और मलेशिया के लाखोन, कंपूचिया के ल्खोनखोल तथा बर्मा के यामप्वे मुखोटा रामलीला के लिए प्रसिद्ध हैं।

कंपूचिया के राजभवन में रामायण के प्रमुख प्रसंगों का अभिनय होता था जिसे 'ल्खोनखोल' कहा गया। ज्ञातव्य हो 'ल्खोन' इंडोनेशाई मूल का शब्द है जिसका अर्थ नाटक है। कंपूचिया की भाषा खमेर में खोल का अर्थ बंदर होता है। इस नृत्य नाटक में कलाकार विभिन्न प्रकार के मुखौटे लगाकर अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त जापान में सफेद पर्दे के समक्ष चमड़े की पुतलियों को इस प्रकार नचाया जाता था कि उसकी छाया पर्दे पर पड़े। अंग्रेजी में शैडो प्ले, थाई भाषा में इसे नंग और हिन्दी में छाया नाटक कहा गया। छाया नाटक के माध्यम से रामलीला तिब्बत और मंगोलिया में होती थी।

रामकथा की व्याप्ति की तरह उसके प्रदर्शन की परंपरा के अलग अलग रूपों में लगभग पूरे विश्व में

रही है। मौखिक, साहित्यिक, प्रदर्शन और रूपांकन इन चारों परंपराओं में रामकथा का प्रचार-प्रसार होता रहा है।

वास्तव में रामलीला की प्रस्तुति श्रीराम के द्वारा वनवास काल में वन्य जातियों, ऋषि-मुनियों को जोड़ने को जन-जन से का उपक्रम है। इसके लिए महर्षि वेदव्यास ने कहा है -

त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मीं
धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम्॥

काशी की रामलीला में रामघाट पर जुलूस, राम बरात निकलना जिसमें अनेक प्रकार के विशाल मुखौटे लगाए अथवा शस्त्र चालन का प्रदर्शन करते लोगों का गलियों से निकलना, अनेक प्रकार के विमान, झांकियां प्रस्तुत करती उस शोभायात्रा ने, जो रामलीला का ही एक भाग थी, जनसामान्य को बहुत प्रभावित किया। क्षीरसागर की झांकी, समुंद्र मंथन, नौका द्वारा गंगा पार करना, समुंद्र लंघन और सेतुबंध की लीलाएँ प्रस्तुत करते हुए कुंड का बहुत सुंदर उपयोग होता था जिससे सम्पूर्ण वातावरण नाटक न होकर स्वाभाविक प्रतीत होता था। समय-प्रवाह संग जारी इस कर्मकांड और संकल्प ने रामलीला की परंपरा को जीवंत रखा।

काशी में चेतगंज की नक्कटैया रामलीला बहुत प्रसिद्ध है। जिसमें शूर्पणखा के नाक काटने का दृश्य बहुत ही मार्मिक ढंग से दिखाया जाता है तो खर-दूषण की सेना का जुलूस निकलता था जिसमें विमान और तरह-तरह की झांकियां भी होती हैं। काली के वेश में पुरुष कालाकारों द्वारा तलवार संचालन, पैंतरेबाजी, शस्त्रकौशल, आदि देखने लायक होता है।

कथा और दृश्य में जीवंतता का अहसास होता है। इसी प्रकार काशी के अनेक क्षेत्रों में रामलीला का मंचन होता है। शिवपुर, चिरईगाँव, हरहुआ, मंगारी, बाबतपुर, राजातालाब, रामेश्वर, सकलडीहा, फूलपुर, लोहता, और खेवली गाँव में रामलीला का बड़ा भव्य आयोजन होता है। इन क्षेत्रों में रामलीला तुलसीकृत रामचरितमानस और राधेश्याम रामायण के आधार पर मंचित होती है। खेवली गाँव की रामलीला जिसकी शुरुआत पं. हृदय नारायण तिवारी ने 1935 में की थी, मुंशी राजाराम श्रीवास्तव कृत प्रसिद्ध ग्रंथ 'रामलीला का समग्र' के आधार पर होती है।

आज सूचना प्रौद्योगिकी भी इस अनुष्ठान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। राम भक्ति को प्रस्तुत करती रामलीला हो या दूरदर्शन के माध्यम से प्रस्तुत किए गए धारावाहिक रामायण अथवा समय-समय पर नाट्य मंडलियों द्वारा प्रस्तुत की जानेवाली नृत्य-नाटिका तो कुछ स्थानों पर एक ही दिन में संपूर्ण रामलीला को प्रस्तुत किया जाना उसी राम कृपा का प्रसार है। रामकथा बारम्बार देखने वालों को याद दिलाती है कि मर्यादा और नैतिकता के निर्वाह के लिए राम ने अवतार लिया है जिनका लक्ष्य व्यापक जनकल्याण को स्थापित रामराज्य है जिसकी मुख्य वृति जनहित है, सामजिक एकता है, समरसता है। उनका अपना जीवन ऐसी प्रेरणा है जो जनता में आशा का संचार करती है जिससे जनता इन लीलाओं में रमती रहती है। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है —

'तिहिं जानहिं जिन देहि जनाय'।

***

चार दशक से विभिन्न विधाओं में लेखन। 'आज' दैनिक, पटना के उपसंपादक के पद से सेवानिवृत्त। वर्तमान में मासिक 'अंकुर बुलेटिन' का संपादन। देश के ढाई सौ पत्र-पत्रिकाओं में तीन हजार रचनायें प्रकाशित। नेपाल, अमेरिका में चार दर्जन रचनायें छपी। आकाशवाणी, पटना से कहानी-आलेख व दूरदर्शन से परिचर्चा प्रसारित। कई सम्मान-पुरस्कार मिले। लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड 2021 प्राप्त।

धर्मशाला घाट, शहीद भगत सिंह चौक, पटना— 800008, बिहार,

श्री प्रभात कुमार धवन

सर्वव्यापी राम

इधर भी, उधर भी
सब जगह आप,
जल में थल में
सिर्फ आप-आप।

व्याप्त नभ मण्डल में
मेरे रोम-रोम में आप,
रमेश, सुरेश, महेश
चिता कराल आप।

करुणानिधान राम
ज्वाला में व्याप्त आप,
सृष्टि का उदय
प्रकृति का अन्त आप।

खड्ग, खम्भ में भी
दीनदयाल आप,
शिशुओं की मुस्कान
जग के पालक आप।

दाता, द्विज, दया, धर्म
अनाथ आशा आप,
मद, मोह, इच्छा, समाधि
सागर गहराई आप।

निरंजन, निर्विकार, निर्मल
प्रकाश, वायु, पृथ्वी आप,
देश, काल, क्रिया
सत्त्व, रज, तम आप।

ज्ञेय, प्रमाता, प्रमाण
प्रमेय, ध्याता, ध्यान आप,
स्थूल, सूक्ष्म, कारण
विश्व, तेजस, प्राज्ञ आप।

जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति
दर्शक, वस्तु , प्रेरक आप,
वेद, शास्त्र, पुराण
सच्चिदानन्द ब्रह्म आप।

कोटि-कोटि सूर्य समान
आपका प्रभाव राम,
धन्य-धन्य श्रीराम
आपको प्रणाम राम।

***

पाठकीय प्रतिक्रिया, पृष्ठ 2 का शेषांश

मॉरिशस में रामायण एवं रामकथा की लोकप्रियता व महत्ता पर गहन विमर्श प्रस्तुत किया गया है। ऐसा प्रयास भारत जैसे ज्ञान-भक्ति प्रधान, भगवान राम से अनुप्राणित देश के लिए अनिवार्यतः अपेक्षित है।

अन्य सभी आलेख राम और रामचरितमानस की महनीयता व उपादेयता से सराबोर है। कुछ आलेखों की पुनःप्रस्तुति नवीन अध्येताओं एवं जिज्ञासुओं केलिए ज्ञानप्रद, पठनीय है। प्रदत्त विषय से इतर रचनाएँ भी रोचक हैं। गोस्वामी तुलसीदास के हस्तलेख की दुर्लभ प्रतियाँ सम्पादक जी की गवेषणात्मक वृत्ति की देन है।

दामोदर पाठक, (अ. प्रा. प्राचार्य)
लखारी (बजरंग नगर, हनुमान मन्दिर के निकट) पो. पचम्बा, गिरिडीह (झारखण्ड)

'मानस अंक' -मानस पटल पर अमिट छाप छोड़ने वाला अंक

धर्मायण का हालिया मानस अंक पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज जब तामसी प्रवृत्ति के लोग मानस की छीछालेदर करने पर जुटे हुए हैं, ऐसे में समाज को सत्य का आइना दिखाने का काम करते हुए धर्मायण का यह अंक उस तामसी विचारधारा पर बहुत ही गहराई से सहलाकर लगाया गया बौद्धिक तमाचा और चटकन है। यदि वे लोग समझ लेंगे तो इस लोक को सँवार लेंगे और यदि नहीं समझे तो भी चाँद पर थूकने से चाँद पर क्या फर्क पड़ेगा।

इस अंक के शुरु में आदरणीय श्री भवनाथ झाजी ने अपने संपादकीय में बहुत ही सुरुचिपूर्ण, सुव्यस्थित और विद्वत्तापूर्ण तरीके से पितृसम्मित, मित्रसम्मित और कान्तासम्मित ग्रंथों की रचना का उदाहरण दिया है। वेद और स्मृतियों को पितृसम्मित, पुराण एवम् आगम को मित्रसम्मित बताते हुए मानस को कान्तासम्मित, जिसमें काव्यादि ग्रंथ आते हैं, श्रेणी का ग्रंथ बताया है। उनकी यह व्याख्या दुर्लभ है।

काव्यादि श्रेणी के ग्रंथों में रामचरितमानस को सर्वोच्च ग्रंथ बताते हुए विद्वान् संपादक ने स्पष्ट किया है कि काव्य आदि की पंक्तियों का अर्थ लगाने के लिए अभिधा, लक्षणा और व्यंजना तीनों शब्द शक्तियों का प्रयोग करने की आवश्यकता होती है। इसमें अर्थ की सिद्धि और अनर्थ के परिहार, जो प्रायश्चित के रूप में होता है, इसका बहुत ही गहराई से ख्याल रखना होता है। मानस में कथानक, वार्तालाप और प्रसंग तीनों समान रूप से है। इसलिए मानस की व्याख्या करते हुए बहुत ही सतर्क रहने की आवश्यकता है। संपादकीय स्वयं में इतनी तथ्यात्मक गहराई लिए हुए है कि यदि केवल इसे ही समझ लिया जाए तो सारी समस्या का हल दूध का दूध और पानी का पानी की तरह हो जायेगा। इसके लिए संपादक महोदय अति अति साधुवाद के पात्र हैं इसलिए मैं उन्हें बहुत ही साधुवाद देता हूँ। अतिशयोक्ति न होगी कि अकेले उनका सारगर्भित संपादकीय ही कई बार पढ़ने और स्मरण रखने योग्य है।

अन्य लेखों में मानस में समन्वयवाद पर अति विस्तार से शैव वैष्णव समन्वय, निर्गुण सगुण समन्वय, विविध ग्रंथ और मानस में समन्वय, साहित्यिक समन्वय, सामाजिक समन्वय, छन्द समन्वय उप शीर्षकों के माध्यम से विद्वान् लेखक ने बहुत ही सुंदर ढङ्ग से विवेचन किया है।

"पूजिय बिप्र सील गुन हीना", "सकल ताड़ना के अधिकारी", "सबके राम एक हैं", "मारीशस में रामायण", "बनारस की रामलीला का वृत्तांत", "हनुमद् दीक्षा", "रामचरितमानस में शिक्षा", "रामचरितमानस की सामाजिक और राष्ट्रीय सर्वव्यापकता" तथा "बौद्ध साहित्य में रामकथा" लेख अति सारगर्भित ढङ्ग से प्रस्तुत किए गए हैं। पूरा का पूरा अंक पठनीय तो है ही, इसके साथ साथ संग्रहणीय और शोधार्थ भी अति उपयोगी है। धर्मायण के सभी विद्वान् लेखकों को बहुत बहुत बधाई।

—डॉ कवीन्द्र नारायण श्रीवास्तव, पूर्व न्यूज़ एडिटर, पी टी आई, नई दिल्ली।

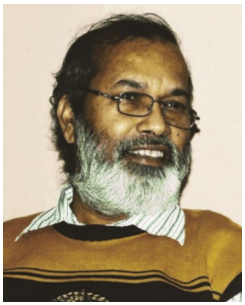

'मानस' में मानव जीवन की सार्थकता

डॉ कवीन्द्र नारायण श्रीवास्तव,
वरिष्ठ पत्रकार, पूर्व न्यूज़ एडिटर, पी. टी. आई, नई दिल्ली.

तुलसीदासजी ने ठीक ही कहा है कि उन्होंने नाना पुराण, निगम, आगम से सम्मत तथ्यों को बटोर कर इसकी रचना की है। निगम से उन्होंने अनुशासन लिया तो पुराण और आगम से मित्र की तरह कोमलकान्तपदावली में मित्रवत् उपदेश। मानस में उन्होंने सबका समन्वय कर एक औषधि की तरह ऐसा मिश्रण बनाया जो मधुर भी है और पथ्यकारक भी। उन्होंने गीता के उपदेशों को भी आत्मसात् कर अपनी भाषा में मानस में प्रस्तुत किया, तो दूसरी ओर लोक-जीवन के अनुभव-सिद्ध संदेशों का संकलन कर उन्हें आदर्श बनने के लिए ससत प्रेरित किया। इस आलेख में लेखक ने मानस के इन्हीं उपदेशों पर अपना विवेचन प्रस्तुत किया है, समाज में आज इसकी प्रासंगिकता को सिद्ध करता है।

रामचरितमानस में प्रभु श्रीराम ने कई अवसरों पर अपने उपदेशों से मनुष्यों को न केवल अभिभूत किया है बल्कि सामाजिक जीवन शैली को पूर्णतया सात्त्विक बनाने का रास्ता दिखाते हुए अन्त में अपने परमधाम पहुँचने का मार्ग भी दिखाया है। उन्होंने सामाजिक मर्यादाओं का उपदेश देते हुए इस क्षणभंगुर जीवन को सार्थक करने का हमें ऐसा रास्ता दिखाया है जिस पर चलकर न केवल इस लोक में जीवन को सार्थक कर सकते हैं बल्कि परलोक में भी इस जीवन को सफल कर सकते हैं। यह हमारे ऊपर निर्भर है कि हम किस मार्ग को अपनायें। हम जीवन को सार्थक बनाने के लिए पारसमणि को ग्रहण करें, ताकि हमारा जीवन सोना बन जाए या हम काँच की घुंघची ले लें ताकि हमेशा के लिए संकट को मोल खरीद लें। भगवान ने 'मानस' में स्पष्ट रूप से कहा कि वही मनुष्य उनका सेवक और प्रियतम कहा जायेगा जो उनकी आज्ञा का पालन करे।

सोइ सेवक प्रियतम मम सोई,
मम अनुसासन मानै जोई।[1]

इस उपदेश रूपी ज्ञान को जो अच्छी तरह समझ लेता है, उसका मानव जीवन सार्थक तो होता ही है साथ में वह श्रीराम को अत्यन्त ही प्रिय हो जाता है। भगवान का जो अनन्य प्रेमी होगा वही भगवान की बात को आँख मूँदकर मानेगा अन्यथा अपने हित और अहित का विश्लेषण शुरु कर देगा।

1. मानस उत्तर. 42.3

जिस प्रकार इस नश्वर जगत् में लोग अपने प्रियजनों की बात तुरंत मान लेते हैं, बेशक उस सांसारिक बात को मानने से उन्हें बाद में पछताना पड़े लेकिन 'मानस' में जीवन की सार्थकता को बताते हुए प्रभु श्रीराम कहते हैं कि उनकी बात को जो मान लेगा वह उनका सर्वप्रिय होगा और उस पर गारंटी यह है कि उसे कभी भी पछताना नहीं पड़ेगा। भगवान् ने इसी बात को भगवद्गीता में कहा,

प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः।[2]

अर्थ है— ज्ञानी भक्त को मैं अत्यंत प्रिय हूँ और वह मुझे अत्यंत प्रिय है। यहाँ पूरी तरह से स्पष्ट है कि जो असली ज्ञानी होगा, वही भगवान के आदेश का पालक होगा और वही उनको अत्यधिक प्रिय होगा।

भगवान ने कहा कि मनुष्य जीवन बड़े ही भाग्य से मिलता है। चूँकि श्रीराम स्वयं मनुष्य रूप में ही 'मानस' में लोगों को उपदेश दे रहे हैं, इसलिए स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि यही रूप ऐसा है जिसमें मनुष्य अपने को आवागमन के चक्कर से मुक्त कर सकता है और परम धाम लौट सकता है।

भगवान ने स्वयं कहा

बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सब ग्रंथनि गावा।।
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा,
पाइ न जेहिं परलोक सँवारा।।[3]

उन्होंने बताया कि मनुष्य योनि साधन का मार्ग है। इस योनि की देवता लोग भी इच्छा करते हैं क्योंकि इसी के माध्यम से भगवान के परम धाम तक पहुँचने के लिए साधना की जा सकती है। देवता लोग तो केवल अपने सुकृत कर्मों का भोग करते रहते हैं। वे साधना में अपने को तत्पर नहीं पाते हैं लेकिन मनुष्य योनि में आकर मनुष्य साधना में लीन हो सकता है। कहा गया है

येऽभ्यर्थितामपि च नो नृगतिं प्रपन्ना
ज्ञानं च तत्त्वविषयं सहधर्म यत्र।
नाराधनं भगवतो वितरन्त्यमुष्य
सम्मोहिता विततया बत मायया ते।[4]

सरलार्थ है— अहा! इस मनुष्य योनि की बड़ी महिमा है। हम देवता लोग भी इसकी चाह करते हैं। इसी में तत्त्वज्ञान और धर्म की भी प्राप्ति हो सकती है। इसे पाकर जो लोग भगवान की आराधना नहीं करते वे वास्तव में उनकी सर्वत्र फैली हुई माया से ही मोहित हैं।

इसलिए 'मानस' में भगवान श्रीराम ने साफ साफ कहा कि मनुष्य शरीर को पाकर भी जो अपना परलोक नहीं सुधार लेता है वह परलोक में तो दुख पाता ही है और सिर पीट पीटकर पछतावा करता है। वह अपना दोष नहीं देकर काल पर, कर्म पर और ईश्वर पर झूठा दोष लगाता है।'

'मानस' में भगवान श्रीराम ने साफ साफ कहा कि मनुष्य शरीर को पाकर भी जो अपना परलोक नहीं सुधार लेता है वह परलोक में तो दुख पाता ही है और सिर पीट पीटकर पछतावा करता है। वह अपना दोष नहीं देकर काल पर, कर्म पर और ईश्वर पर झूठा दोष लगाता है।'

2 गीता 7.17)
3 मानस उत्तर. 42.4
4 भागवत 3.15.24

सो परत्र दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताइ,
कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोष लगाइ।[5]

भगवान की वाणी कितनी स्पष्ट और साफ है कि उसे सहज ही ग्रहण किये जाने का मन करता है। इससे स्पष्ट और क्या कहा जा सकता है-

यन्न व्रजंत्यघभिदो रचनानुवादा-
च्छृंण्वन्ति येअन्यविषया कुकथा मतिघ्नीः।
यास्तु श्रुता हतभगैर्नृभिरात्तसारा-
स्तांस्तान् क्षिपंत्यशरणेषु तमःसु हन्त।।[6]

जो लोग भगवान की पापहारिणी लीला कथाओं को छोड़ कर बुद्धि को नष्ट करने वाली अर्थ काम सम्बन्धिनी अन्य निंदित कथाएँ सुनते हैं, वे भगवान के परम धाम में नहीं जा सकते। हाय! वे अभागे लोग इन सारहीन बातों को सुनते हैं, तब ये उनके पुण्यों को नष्ट कर उन्हें आश्रयहीन घोर नरकों में डाल देती है।

जब व्यक्ति अर्थ और काम की बातों में अपना समय गँवाकर नरक में पहुँच जाता है तब वह सिर पीट पीट कर पछताने लगता है। भगवान श्रीराम के इस उपदेश पर किसी प्रकार की शंका नहीं की जानी चाहिए क्योंकि मनुष्य द्वारा यदि सही मायनों में भगवदर्पण कर्म किया जाए तो उसमें किसी प्रकार की बाधा या संकट आ ही नहीं सकता। आवश्यकता है कि एक बार भगवान के निमित्त काम शुरु कर दिया जाए। वास्तविकता तो यह है कि हम बातें तो खूब करते हैं लेकिन जब उसे क्रिया रूप में परिवर्तित करने का समय आता है तो तरह तरह के बहाने खोजना शुरु कर देते हैं। भगवान ने तो इतना तक आश्वासन दिया है कि सभी कुछ मुझे अर्पित कर दो, मैं तुम्हारी हर तरह से रक्षा करूँगा। समस्या तो यह है कि भगवान की बातों पर विश्वास कैसे किया जाए। जिन लोगों ने विश्वास कर लिया वे लोग परमात्मा तक पहुँच गए और जिन लोगों ने विश्वास नहीं किया और तरह तरह के तर्क वितर्क करते रहे, शंका आशंका करते रहे, बहाने बनाते रहे, वे लोग जन्म मृत्यु रूपी संसार में पड़े रहते हैं। भगवान की वाणी पर गौर कीजिये -

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।[7]

जो अनन्य भक्त मेरा चिन्तन करते हुए मेरी भली भाँति उपासना करते हैं, मुझमें निरंतर लगे हुए उन भक्तों का योग क्षेम (अप्राप्त की प्राप्ति और प्राप्त की रक्षा) मैं वहन करता हूँ। अब इससे ज्यादा भगवान की बातो पर विश्वास करने के लिए कौन सा आश्वासन हो सकता है। फिर भी यदि मनुष्य उनके वचनों पर विश्वास नहीं करते तो क्या कहा जा सकता है। फिर तो 'मानस' में भगवान की यह उक्ति पूरी तरह से सच है कि उस मनुष्य के पास पछताने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचता है।

'मानस' में मानव जीवन की सार्थकता समझाते हुए श्री राम के मुख से यह कहा गया है कि इस शरीर के प्राप्त होने का फल विषय भोग नहीं है। मनुष्य को विषय भोग में लिप्त होना नहीं चाहिए हालाँकि यह भी भगवान की माया द्वारा बनाई गई है लेकिन भगवान की भक्ति के सामने इसकी कोई बिसात नहीं है। इस परम भक्ति के सामने इस दुनियाँ के तरह तरह के भोग तो क्या, स्वर्ग का भोग भी बहुत थोड़ा है। जो लोग भक्ति को छोड़ कर भोग में मन लगा देते हैं वे तो इतने मूर्ख होते हैं कि अमृत को बदल कर विष ग्रहण कर लेते हैं। यदि कोई भी व्यक्ति सोना बनाने वाले पत्थर पारस को त्याग दे और बदले में घुंघची ले ले तो क्या उसे कोई

5 मानस उत्तर 43
6 भागवत 3.15.23
7 गीता 9.22

"'मानस' में मानव जीवन की सार्थकता के लिए भगवान ने भक्ति को पारस बताया है और इस जगत् तथा स्वर्ग के भोग को उस परम भक्ति के सामने घुँघची बताया गया है।"

समझदार कहेगा। यही स्थिति भक्ति को छोड़ कर भोग स्वीकार करनेवाले व्यक्ति की होती है। स्वर्ग तक का भोग भी अस्थायी होता है, इसे भगवान ने पूरी तरह से स्पष्ट कर दिया है-

ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोक-
मश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान्।

एवं

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं
क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना
गतागतं कामकामा लभन्ते।।[8]

वे (पुण्यों के फलस्वरूप) पवित्र इन्द्र लोक को प्राप्त करके वहाँ स्वर्ग के देवताओं के दिव्य भोगों को भोगते है। वे उस विशाल स्वर्ग के भोगों को भोगकर पुण्य क्षीण होने पर मृत्यु लोक में आ जाते हैं। इस प्रकार तीनों वेदों में कहे हुए सकाम धर्म का आश्रय लिए हुए भोगों की कामना करने वाले मनुष्य आवागमन को प्राप्त होते हैं। इसलिए भगवान के सच्चे भक्त स्वर्ग के भोगों की भी कामना नहीं करते हैं बल्कि वे तो भगवान के परमधाम में ही वापस जाना चाहते हैं।

'मानस' में मानव जीवन की सार्थकता के लिए भगवान ने भक्ति को पारस बताया है और इस जगत् तथा स्वर्ग के भोग को उस परम भक्ति के सामने घुँघची बताया गया है।

एहि तन कर फल विषय न भाई।
स्वर्गउ स्वल्प अन्त दुखदाई।।
नर तनु पाइ बिषय मन देहीं।
पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं।।
ताहि कबहुँ भल कहइ न कोई।
गुंजा ग्रहइ परस मनि खोई।।[9]

भगवान मानव जीवन की सार्थकता समझाते हुए उपदेश भी देते हैं और सचेत भी करते हैं कि उनकी भक्ति को कभी भी नहीं छोड़ें, चाहे जिस तरह की परिस्थिति उत्पन्न हो जाए। क्योंकि विषयों में मन लगाने वाला मनुष्य चौरासी लाख योनियों में (अंडज, स्वेदज, जरायुज और उद्भिज) में चक्कर लगाता रहता है।

यहाँ यह बताना समीचीन लगता है कि हमारे ऋषियों और मुनियों ने इस 84 लाख योनियों की गणना भी कर रखी है।

स्थावरं विंशतिर्लक्षं जलजं नवलक्षकम्।
कृमिश्च रुद्रलक्षं च दशलक्षं च पक्षिणाम्।।
त्रिंशल्लक्षं पशूनां च चतुर्लक्षं च वानराः।
ततो मनुष्यता प्राप्तिस्ततः कर्माणि साधयेत्।।[10]

इस जगत में 20 लाख वृक्षादि, नौ लाख जलज, 11 लाख कृमि कीड़े, 10 लाख पक्षीगण, 30 लाख पशु (चौपाये) चार लाख बंदर यानी कुल 84 लाख योनियाँ हैं। 'मानस' में कहा भी गया है,

आकर चारि लच्छ चौरासी।
जोनि भ्रमत यह जिव अबिनासी।।

यह जीव 84 लाख योनियों में चक्कर लगाता रहता है।

मनुष्य योनि इनके बाद है। इनमें कर्म करने का अधिकार होता है। इसलिए मनुष्य योनि को कर्म योनि अथवा 'साधन धाम' कहा जाता है।

8 गीता 9.20-21.
9 मानस उत्तर. 43— 1.2
10 मानस रहस्य— जयरामदास पृष्ठ 156

साधन धाम मोच्छ कर द्वारा।
पाइ न जेहिं पर लोक सँवारा।।[11]

मनुष्य शरीर तो स्वर्ग और नर्क को प्राप्त कराने वाला है तथा ज्ञान और वैराग्य को प्रदान करने वाला है।

नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी।
ग्यान बिराग सकल गुन देनी।।

इस मनुष्य शरीर के माध्यम से ही व्यक्ति अपने जन्म मरण के चक्कर से मुक्ति पा सकता है क्योंकि इसी योनि में ही वह भगवान के लिए सात्त्विक भाव से कर्म कर सकता है। अन्य योनियों में तो वह मजबूर रहता है। अन्य योनियों में चाह कर भी अच्छे कर्म नहीं कर सकता है। कुत्ता कैसे सात्त्विक भाव अपनायेगा? यदि वह सात्त्विक और शाकाहारी हो जायेगा, तो भूखों मर जायेगा और वह ऐसा करेगा नहीं क्योंकि साफ साफ कहा गया है—

देह प्रान ते प्रिय कछु नाहीं।[12]

इसलिए निष्कर्ष यह है कि मनुष्य योनि में ही व्यक्ति अपने जीवन को सार्थक करने के लिए भगवान के परम धाम में पहुँचने की कोशिश में जुट सकता है, अन्य योनियों में वह इस कार्य को कत्तई नहीं कर सकता है।

'मानस' में मानव जीवन की सार्थकता को समझाते हुए भगवान के मुख से दो प्रकार की उपमा दी गई है। एक

पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं।[13]

और दूसरी

गुंजा ग्रहइ परस मनि खोई।[14]

इन दोनों को एक ही सन्दर्भ में बताया गया है।

एक तरफ कहा गया है कि अमृत बदलकर विष ले लेते हैं और दूसरी तरफ बताया गया है कि पारस मणि खोकर घुंघची ग्रहण कर लेते हैं।

यह दो उदाहरण समाज के दो वर्गों के लिए दिया गया है। एक तो जो गृहस्थी के मार्ग में प्रवृत हैं दूसरे जो विरक्ति के निवृत्त मार्ग में हैं। 'मानस' में श्रीराम जिस सभा में लोगों को उपदेश दे रहे थे वहाँ गृहस्थ के मार्ग से प्रवृत्त और विरक्ति के मार्ग से निवृत्त दोनों प्रकार के लोग उपस्थित थे। इसलिए भगवान ने अलग अलग उदाहरण देकर बताया कि प्रवृत्त मार्ग के लिए उनकी भक्ति छोड़ना तो अमृत छोड़ कर विष ग्रहण करने जैसा है और निवृत्त लोगों के लिए भक्ति छोड़ना पारस मणि को छोड़ कर घुंघची लेने जैसा है।

गृहस्थ मार्ग में भक्ति रहित लोगों को 'मानस' में भगवान के मुख से शठ कहलाया गया है यानी कि सभी सुविधाओं का भोग करते हुए भी जो भक्ति मार्ग का त्याग किये रहता है वह शठ ही तो है। भगवान साफ साफ कहते हैं कि प्रवृत्त मार्ग में सभी सुविधाओं का मन से त्याग करना चाहिए और अपने को इस सांसारिक वस्तुओं का केवल देख रेख करने वाला कार्यकर्ता समझना चाहिए और उन वस्तुओं में आसक्त नहीं होना चाहिए। यदि एक बार गृहस्थ मनुष्य सांसारिक वस्तुओं में आसक्ति त्याग देता है तो फिर कोई समस्या नहीं रहती है। उसके लिए अच्छी बुरी, ऊँच नीच सभी चीजें बराबर लगने लगती हैं। इसलिए 'मानस' में गृहस्थ वालों के लिए जीवन की सार्थकता के बारे में बताया कि भक्ति मार्ग छोड़ने का अर्थ है कि अमृत को छोड़ कर विष ग्रहण कर लेना। वहीं दूसरी ओर निवृत्त मार्ग के लोगों के लिए बताया गया कि वे लोग भक्ति रूपी पारस मणि को पा चुके हैं। यदि वे लोग फिर से सांसारिक वस्तुओं में आसक्त होते हैं तो वे अपने

11 मानस उत्तर. 42.4
12 मानस बाल. 208.2
13 मानस उत्तर. 42.1
14 मानस उत्तर 42.2

पारस मणि को खो देते हैं और बदले में घुंघची ले लेते हैं जो बहुत ही तुच्छ वस्तु है और उसकी कोई कीमत भी नहीं होती है।

वैसे तो यह जीव 84 लाख योनियों में अपने कर्म के अनुसार बार बार जन्मता है और मरता है लेकिन भगवान द्वारा उस जीव का कल्याण करने के लिए उसे मनुष्य जीवन प्रदान किया जाता है और जो समझदार पुरुष या स्त्री हैं वे इस शरीर को पाते ही चट से भगवान के परम धाम में जाने के लिए प्रयास करना शुरु कर देते हैं।

कबहुँक करि करुना नर देही।
देत ईस बिनु हेतु सनेही।।[15]

यह शरीर तो भव सागर से पार होने के लिए जहाज के समान है। भगवान की कृपा उस जहाज के लिए अनुकूल हवा का काम करती है। मनुष्य के सद्गुरु इस जहाज को खेनेवाले यानी चलानेवाले कर्णधार हैं, चालक हैं। फिर भगवान के ही मुख से कहलाया गया है

नर तनु भव बारिधि कहुँ बेरो।
सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो।।
करनधार सद्गुर दृढ़ नावा।
दुर्लभ साज सुलभ करि पावा।।[16]

जब व्यक्ति को सारे साधन भगवद् कृपा से मिल जाते हैं तो वह बड़ी आसानी से इस भव सागर से पार हो जाता है। स्पष्ट रूप से आदेश दिया गया है कि भगवान को प्राप्त करने और जानने के लिए ब्रह्मनिष्ठ यानी सद्गुरु के पास जाना चाहिए। '

तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्।[17]

उस परम ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिए हाथ में समिधा (यज्ञ में जलाई जाने वाली लकड़ी) लेकर वेद को भली भाँति जानने वाले परब्रह्म परमात्मा में स्थित गुरु के पास ही विनयपूर्वक जाए। भगवान का भी यही उपदेश है कि भव सागर से पार होने के लिए सद्गुरु की शरण में जाकर इस संसार चक्र से मुक्त होने के लिए कार्य करें।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यंति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥[18]

साष्टांग दंडवत सेवन से।
जानों कर प्रश्न सरल मन से॥
तुमको वे मर्मज्ञ ज्ञानी जन।
उपदेश करेंगे तत्त्व प्रबोधन॥[19]

यदि मनुष्य इस प्रकार का प्रयास शुरु कर दे तो भगवान का वचन है कि उनकी कृपा अवश्य होगी अर्थात वह उस प्रयास करनेवाले व्यक्ति पर अपनी कृपा की बरसात शुरु कर देंगे। 'मानस' में प्रभु श्री राम ने कहा है कि यदि कोई मनुष्य ऐसा साधन मिलने पर भी इस संसार से पार होने के लिए प्रयासरत नहीं होए तो वह मन्द बुद्धि ही है और तो और वह भगवान की दया के प्रति कृतघ्न भी है। यहाँ तक कि वह आत्म हत्या करने वाले की गति को प्राप्त होता है।

'मानस' में मानव जीवन की सार्थकता बताते हुए भगवान स्वयं कहते हैं कि यदि इस लोक में और परलोक में सुख (सुविधा नहीं) चाहते हो तो मेरे वचन सुनकर उन्हें हृदय में दृढ़ता से पकड़ रखो। हे भाई! यह मेरी भक्ति का मार्ग सुलभ और सुखदायक है। ऐसा पुराणों और वेदों में भी गाया गया है।

जौं परलोक इहाँ सुख चहहू।
सुनि मम बचन हृदय दृढ़ गहहू।।

15 मानस उत्तर. 43.3
16 मानस उत्तर. 43.4
17 मुंडकोपनिषद् 1.2.12
18 गीता 4.34
19 लेखक द्वारा स्वरचित शाश्वती गीता से

सुलभ सुखद मारग यह भाई।
भगति मोरि पुरान श्रुति गाई।।[20]

इसे भगवान ने गीता में सिद्ध भी किया है। वह बताते हैं

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः।।[21]

हे पार्थ! जो संतत अनन्य चित्त नर।
करे स्मरण मुझे निरंतर॥
हो जो योगी नित्य निरत।
हूँ उसको मैं सुलभ सतत॥[22]

भगवान ने साफ साफ कहा है जो भी एक बार भक्ति के रास्ते पर अग्रसर हो जाता है, उसे वह बहुत ही सुलभता से प्राप्त हो जाते हैं।

असि हरि भगति सुगम सुखदायी।[23]

यहाँ यह बताना समीचीन है कि एक भक्त के लिए केवल एकमात्र भगवान ही सहारा होते हैं। भगवान के अलावा वह किसी अन्य को नहीं मानता है। वह तो केवल भगवान को ही अपना मानता है और इसलिए वह दिन रात सदा सर्वदा भगवान में ही लगा रहता है। उसकी दृष्टि में भगवान के सिवाय और कोई होता ही नहीं। उसके लिए तो यह हो जाता है कि वह भगवान को छोड़कर कहाँ जाए? किसके पास जाए? क्या माँगने जाए? किस काम के लिए जाए? अन्त में यही स्थिति हो जाती है कि वह भगवान के सिवाय और भी कुछ सोचने की स्थिति में नहीं रह जाता है और जब वह केवल और केवल भगवान के बारे में सोचता है तो वह अनन्य चित्त वाला हो जाता है। ऐसे में तब उसे अलग से भगवान के बारे में सोचने की आवश्यकता ही नहीं होती है बल्कि वह तो अपने आप सदैव भगवान के चिन्तन में ही मग्न रहता है। ऐसे भक्त के लिए भगवान नित्य निरंतर सुलभ हैं। और यही मानव जीवन की सार्थकता है।

***

20 मानस उत्तर. 44.1
21 गीता 8.14
22 लेखक द्वारा रचित शाश्वती गीता से
23 मानस उत्तर. 118.5

Photo: Parvatiya Ramlila Committee

कुमाऊँ की रामलीला की एक झलक

साभार : https://www.kumauni.in/2019/11/Brief-introduction-of-Ramilia-in-Kumaun-02.html

रामकथा की घटनाओं की तिथियाँ

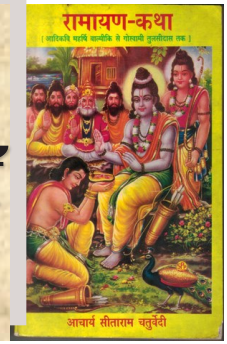

आचार्य सीताराम चतुर्वेदी

यह हमारा सौभाग्य रहा है कि देश के अप्रतिम विद्वान् आचार्य सीताराम चतुर्वेदी हमारे यहाँ अतिथिदेव के रूप में करीब ढाई वर्ष रहे और हमारे आग्रह पर उन्होंने समग्र वाल्मीकि रामायण का हिन्दी अनुवाद अपने जीवन के अन्तिम दशक (80 से 85 वर्ष की उम्र) में किया वे 88 वर्ष की आयु में दिवंगत हुए। उन्होंने अपने बहुत-सारे ग्रन्थ महावीर मन्दिर प्रकाशन को प्रकाशनार्थ सौंप गये। उनकी कालजयी कृति रामायण-कथा हमने उनके जीवन-काल में ही छापी थी। उसी ग्रन्थ से रामायण की कथा हम क्रमशः प्रकाशित कर रहे हैं।

– प्रधान सम्पादक

समयादर्श-रामायण

1. धनुष तोड़ने के समय राम 15 वर्षके तथा मैथिली 6 वर्ष की थीं।
2. रामके विवाह के 12 वर्ष पश्चात् दशरथ ने उनका राज्याभिषेक करने का विचार किया।
3. उस समय रामचन्द्रजी 27 वर्षके तथा सीता 18 वर्ष की थीं जब कैकेयी ने राम के लिये 14 वर्ष का वनवास माँगा।
4. अयोध्यापुरी से जाते समय राम, लक्ष्मण, सीता ने 3 रात केवल जलपान किया, चौथे दिन फलाहार तथा पाँचवें दिन चित्रकूट पर्वत पर निवास किया।
5. वन में निवास करते हुए 123 वर्ष बीतने पर शूर्पणखा के नाक-कान काटे गए।
6. रावण ने माघ महीने की त्रयोदशी के दिन वृन्द मुहूर्त्त में सीता को चुरा लिया।
7. तीन वानरों ने राम को शान्ति वचनों से समाश्वासन दिया।
8. वानरों के साथ श्रीराम माल्यवान् के शिखर पर बरसात के 3 मास पर्यन्त टिके रहे।
9. रामचन्द्रजी ने 4 मास बिताए।
10. श्रीरामके पास करोड़ों वानर आए।
11. श्रीराम के सहायक सब वानर संख्या में अठारह पद्म थे।
12. वानरों के लिये सुग्रीवने सीताकी खोज के लिये 1 मास की अवधि दी।
13. किन्तु एक मास की अवधि बीत गई।
14. सम्पाति ने दसवे महीने में मार्गशीर्ष मास की दशमी को सीता का समाचार दिया।

15. द्वादशी के दिन पवनपुत्र हनुमान् समुद्र के 100 योजन चौड़े जल को लाँघकर लंका में पहुँच गए।
16. त्रयोदशी के दिन उन्होंने लंका के सैकडों राक्षसों को यमपुरी भेज दिया।
17. चतुर्दशी के दिन मेघनाद ने हनुमानजी को बाँध लिया।
18. पूर्णिमा को आकर हनुमान् ने सब वृत्तान्त वानरों से कहा।
19. 5 दिन मार्ग में बिताकर छठे दिन फलादि तोड़कर उन्होंने मधुवन को उजाड़ा। सप्तमीके दिन हनुमानजी ने सीताजी का चूडारत्न राम को लाकर दिया।
20. राम ने अष्टमी के दिन जय हेतु यात्रा कर दी।
21. सातवें दिन समुद्र के तट पर वानरों की सेना ने भारी पड़ाव डाला।
22. पौष मासके 3 दिन समुद्रके तटपर सेना स्थित रही।
23. चतुर्थी के दिन विभीषण उनकी शरणमें आया।
24. पञ्चमी के दिन समुद्र पार करने के लिये उद्योग हुआ।
25. पुल बाँधने हेतु सभी 4 दिन निराहार रहे।
26. तब राम ने क्रोध में आकर कहा कि मैं एक ही बाण से समुद्र को सुखाए डालता हूँ।
27. दशमी के दिन से आरम्भ किया हुआ वह सेतु त्रयोदशी के दिन तैयार हो गया।
28. पुल दस योजन चौड़ा और सौ योजन लम्बा था।
29. श्रीराम ने चतुर्थी के दिन वीर वानरों को पार उतारा।
30. सारे वानर 3 दिन बराबर चलकर द्वितीया के दिन समुद्र पार कर गए।
31. तीसरे द्वितीयाके दिन से 8 दिनों तक लंका के चारों ओर सेना का पड़ाव रहा।
32. द्वादशी के दिन राम की सेना को देखने रावण के दो दूत आए जिन्हें वानरों ने बाँध लिया।
33. द्वादशी के दिन राम उत्तर के द्वारपर स्थित हुए।
34. मन्दोदरी ने रावण से कहा कि तुम बीस नेत्रों से देखते हुए भी क्यों अन्धे हो रहे हो?
35. रावण ने अपमानित होकर समस्त राक्षस सेनापतियों को बुलाकर त्रयोदशी के दिन से अमावास्या-पर्यन्त तीन दिनों तक युद्ध के लिये गिनती करके जहाँ-तहाँ राक्षस नियुक्त कर दिए।
36. माघ मासके प्रथम दिन श्रीराम की आज्ञा से अंगद दूत बनकर रावण के पास गया।
37. माघ मास के शुक्ल पक्षकी द्वितीयाके दिन से अष्टमी-पर्यन्त सात दिन बराबर राक्षसों और वानरोंमें घोर युद्ध होता रहा।
38. नवमी के दिन रात्रि में मेघनाद ने नागपाशों से राम और लक्ष्मण को बाँध लिया।
39. नवमी के दिन राम के पास ब्रह्मा की आज्ञा से गरुड आ गए।
40. दशमी को तथा एकादशी को युद्ध बन्द रहा।
41. द्वादशी के दिन हनुमान् ने राक्षस-सेनापति धूम्राक्ष का वध किया।
42. हनुमान् ने त्रयोदशी के दिन राक्षस-समूह का विनाश किया।
43. नील ने चर्तुदशी के दिन से लेकर 3 दिन के युद्ध में प्रहस्त का वध किया। तदनन्तर तीन दिन में चतुर्थी के दिन श्रीराम ने रावण को रण भूमि से भगा दिया।

44. रावण ने पंचमी से लेकर 4 दिन में कुंभकर्ण को जगाया।
45. श्रीरामने 6 दिनमें शीघ्रगामी बाणोंसे कुंभकर्ण को मार डाला।
46. कुंभकर्ण के वध से विलाप करता हुआ रावण पूर्णिमा के दिन युद्ध बन्द करके बैठा रहा। तदनन्तर फाल्गुन महीने के प्रथम दिन से चतुर्थी तक संसार में प्रसिद्ध रावण के नरान्तकादि 5 वीर मारे गए।
47. इसके अनन्तर पंचमी के दिन से लेकर तीन दिन में अतिकाय नामक राक्षस मारा गया और फिर अष्टमी से लेकर 5 दिन में कुम्भ और निकुंभ दो राक्षस मारे गए। तदनन्तर 4 दिन में मकराक्ष मारा गया।
48. शुक्ल पक्षकी द्वितीया को मेघनाद ने रात्रि में इष्टदेव को तृप्त करके जब आकाशचारी रथ पा लिया तब श्रीरामने तृतीयाके दिनसे सप्तमी पर्यन्त 5 दिन बराबर औषधि लाने आदिके कारण युद्ध बन्द रक्खा।
49. तदनन्तर अष्टमी के दिनसे लेकर 6 दिनमें लक्ष्मणने मेघनादको मारा। चर्तुदशी के दिन युद्ध रोककर रावण अत्यन्त रोया।
50. पूर्णिमा होलिकादहन के दिन क्रोध में भरा रावण युद्ध करने उठ आया। चैत्र कृष्ण प्रतिपदासे लेकर 5 दिन में बहुतसे राक्षस सेनापति काम आए तथा षष्ठी के दिन से अष्टमी तक युद्ध में अनेक राक्षस मारे गए।
51. नवमी के दिन श्रीराम ने दशमुख को भगा दिया।
52. दशमी के दिन युद्ध बन्द रहा। तदन्तर एकादशी के दिन श्रीराम के लिये रथ लेकर मातलि आ गया। द्वादशी के दिन श्रीराम रथ में बैठकर रावणका वध करनेके लिये चल दिए।
53. द्वादशी से चर्तुदशी-पर्यन्त अर्थात् चैत्र 18 दिन बराबर युद्ध करके चर्तुदशी को रावण का वध हुआ।
54. इस प्रकार माघ शुक्ल द्वितीया के दिन से चैत्र शुक्ल चर्तुदशी तक 15 कम 87 अर्थात् 72 दिन तक युद्ध हुआ। पूर्णमासी के दिन रावण की दाहक्रिया हुई।
55. वैशाख के प्रथम दिन श्रीराम वानरों सहित सुबेल पर्वत पर लौट आए और द्वितीयाके दिन बाजे-गाजे, उत्सव, गीत और मंगल के साथ विभीषणका राज्यतिलक हुआ।
56. सीता 10 दिन और 14 मास रावणके यहाँ रही। वैशाख को तृतीया के दिन अग्निमें शुद्ध होकर वे रामको प्राप्त हुईं।
57. चतुर्थी के दिन सीता, लक्ष्मण और वानरो-सहित श्रीराम अपनी पुरी की ओर चल पड़े। वन में 14 वर्ष बिताकर पंचमी तिथि को वे भरद्वाज ऋषि के आश्रम में जा पहुँचे।
58. षष्ठी के दिन नन्दिग्राम में भरत से उनका मिलन हुआ। सप्तमी को बड़े उत्सव-सहित वे अयोध्या में आ पहुँचे।
59. राज्य पाने के समय श्रीराम की अवस्था 42 वर्ष तथा जानकी की 33 वर्ष की थी। इसी दिन से भाद्रपद की नवमी के दिन से सीता ने सूर्यवंश की वृद्धि हेतु गर्भ धारण किया।
60. जब गर्भ का सप्तम मास बीत गया तब चैत्र की द्वादशी के दिन सीता को वन में छोड़ा गया।
61. आषाढ की नवमी के दिन सीता ने दो पुत्रों को जन्म दिया और नौ से 66 वर्षतक वहाँ रहीं (षट्षष्ट्या च समं शतानि नव वै वर्षाणि तत्रावसत्।)
62. इस प्रकार वाल्मीकिके आश्रम में पहुँचाई हुई सीता से रहित अकेले राम ने दस हजार वर्षतक एकच्छत्र राज्य भोगा।

राम का जन्म

आज (चैत्र शुक्ल नवमी सं. 2043) से 18150088 वर्ष पहले वैवस्वत मन्वन्तर के चौबीसवें त्रेता के चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी को दोपहर अभिजित् नक्षत्र में अयोध्या में राम का जन्म हुआ।

(हरिवंशपुराण 1.41; वायुपुराण 70.48, ब्रह्मांडपुराण 3.7.44; ब्रह्मपुराण 212.123; मत्स्यपुराण 47.247; भागवत 9.10.52; पद्मपुराण पाताल खंड 36)

महाभारत के अनुसार अट्ठाईसवें त्रेता युग में रामका जन्म हुआ था।

(महाभारत सभापर्व परि0 1, क्र. 21, पंक्ति 494-495) अब (संवत् 2043, सन् 1986) से लगभग 18148144 वर्ष पहले राम का राज्याभिषेक हो चुकनेपर महर्षि वाल्मीकिने रामायण या पौलस्त्य-वध की रचना की और लव कुश को सिखाया।

विश्वामित्र के साथ उनके यज्ञकी रक्षा के लिये जाते समय राम 15 वर्ष के थे। 12 वर्ष पश्चात् वनवास के समय राम सत्ताइस वर्ष के और सीता अट्ठारह वर्ष की थीं।

वैशाख शुक्ल 1 : वनवासका पहला दिन।
वैशाख शुक्ल 2 : चित्रकूटकी ओर गए।
वैशाख शुक्ल 6 : चित्रकूटपर भरतसे भेंट।
बारह वर्ष छह महीने वे गोदावरी तटपर पञ्चवटी में रहे।
कार्तिक कृष्ण 10 : शूर्पणखा के नाक-कान काटे गए।
फाल्गुन कृष्ण 8 : रावणने सीता का हरण किया।
दस महीने पश्चात्
मार्गशीर्ष शुक्ल 9 : सीता की खोजके लिये गए हुए वानरों की सम्पाति से भेंट।
मार्गशीर्ष शुक्ल 11 : महेन्द्र पर्वत से हनुमान् लंकाके लिए उड़े।
मार्गशीर्ष शुक्ल 12 : अशोक वाटिका में सीतासे हनुमान् की भेंट।
मार्गशीर्ष शुक्ल 13 : हनुमान् ने रावणके पुत्र अक्ष को मारा और अशोक-वाटिका उजाड़ डाली।
मार्गशीर्ष शुक्ल 14 : इन्द्रजित् ने हनुमान् को बाँधकर रावणके पास ले जा पहुँचाया। हनुमान् ने लंका जलाई।
मार्गशीर्ष शुक्ल 15 : हनुमान् आदि महेन्द्र पर्वतपर लौट आए।
पौष कृष्ण 1 से 5 : हनुमान आदि महेन्द्र पर्वतसे किष्किन्धा आए।
पौष कृष्ण 6 : हनुमान् आदिने मधुवन उजाड़ा।
पौष कृष्ण 7 : हनुमान् ने राम से भेंट की।
पौष कृष्ण 8 : रामने रावण वध की प्रतिज्ञा की और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में विजय-योगपर दक्षिण की ओर राम चल दिए।
पौष कृष्ण 9 से 30 : किष्किन्धा से समुद्रतक की यात्रा।
पौष शुक्ल 1 से 3 : राम समुद्र-तटपर पहुँचे।
पौष शुक्ल 4 : रामके पास विभीषण आए।

पौष शुक्ल 5 : समुद्र पार करनेपर विचार-विमर्श हुआ।
पौष शुक्ल 6 से 9 : समुद्रको प्रसन्न करनेके लिये राम अनशन करते हुए समुद्र-तटपर बैठे।
पौष शुक्ल 10 से 13 : समुद्रपर पुल बाँधा गया।
पौष शुक्ल 14 : राम समुद्र पार करके लंका में सुबेल पर्वतपर पहुँचे।
पौष शुक्ल 15 से माघ कृष्ण 2 : रामकी सारी सेना सुबेल पर्वतपर आ गई।
माघ कृष्ण 2 से 10 : रामको सेनाने लंकाको जा घेरा।
माघ कृष्ण 12 : रामके पास रावणके द्रुत शुक और सारण आए।
माघ कृष्ण 12 : रामकी सेनाकी गिनती हुई।
माघ कृष्ण 13 से 30 : रावणकी सेनाकी गिनती हुई।
माघ शुक्ल 1 : रामने अंगदको रावणके पास दूत बनाकर भेजा।
माघ शुक्ल 2 से 8 : वानर और राक्षसोंमें युद्ध छिड़ गया।
माघ शुक्ल 9 : इन्द्रजित् ने राम-लक्ष्मणको नाग पाश में बाँधा।
माघ शुक्ल 10 : हनुमान्ने राम-लक्ष्मणको नाग-पाशसे गरुड-मन्त्र से छुड़ाया।
माघ शुक्ल 11 से 12 : हनुमान् ने धूम्राक्ष को मारा
माघ शुक्ल 13 : हनुमान् ने अकंपन को मारा।
माघ शुक्ल 14 से फाल्गुन कृष्ण 1 : नीलने प्रहस्त को मारा।
फाल्गुन कृष्ण 2 से 4 : राम-रावण का युद्ध प्रारम्भ हुआ और रावण भाग गया।
फाल्गुन कृष्ण 5 से 8 : कुंभकर्ण को जगाया गया।
फाल्गुन कृष्ण 9 से 14 : राम ने कुम्भकर्ण से युद्ध करके उसे मार डाला।
फाल्गुन कृष्ण 30 : युद्ध-विराम
फाल्गुन शुक्ल 1 से 4 : इन्द्रजित् से राम-लक्ष्मण का युद्ध।
फाल्गुन शुक्ल 5-7 : लक्ष्मण ने अतिकाय को मार डाला।
फाल्गुन शुक्ल 8 : इन्द्रजित् से दूसरी बार युद्ध हुआ।
फाल्गुन शुक्ल 9 से 12: कुंभ और निकुंभ मारे गए।
फाल्गुन शुक्ल 13 से चैत्र कृष्ण 1 : मकराक्ष मारा गया।
चैत्र कृष्ण 2 : तीसरी बार इन्द्रजित् से युद्ध करने में लक्ष्मण को शक्ति लगने से मूर्च्छा हुई।
चैत्र कृष्ण 3 से 7 : युद्ध-विराम। हनुमान् ने लक्ष्मणके लिये औषधि लाकर दी।
चैत्र कृष्ण 8 से 13 : इन्द्रजित् से चौथी बार युद्ध हुआ जिसमें इन्द्रजित् मारा गया।
चैत्र कृष्ण 14 : रावण ने आसुरी यज्ञ किया।
चैत्र कृष्ण 30 : रावण लड़ने निकला।
चैत्र शुक्ल 1 से 5 : राम और रावण का युद्ध हुआ जिसमें रावण भाग खड़ा हुआ।
चैत्र शुक्ल 6 से 8 : महापार्श्व आदि राक्षसों का वध हुआ।
चैत्र शुक्ल 9 : राम और रावण का युद्ध हुआ जिसमें रावण फिर भाग खड़ा हुआ।
चैत्र शुक्ल 10 : युद्ध-विराम

चैत्र शुक्ल 11 : इन्द्रने रामके लिये रथ भेजा।
चैत्र शुक्ल 12 से वैशाख कृष्ण 4 : राम-रावण का युद्ध हुआ जिसमें रावण मारा गया।
वैशाख कृष्ण 15 : रावण का अन्त्येष्टि-संस्कार हुआ।
वैशाख शुक्ल 2 : विभीषण का राज्याभिषेक हुआ।
वैशाख शुक्ल 3 : राम-सीता का मिलन हुआ।
वैशाख शुक्ल 4 : पुष्पक विमान पर बैठकर राम अयोध्या के लिये चले।
वैशाख शुक्ल 5 : वनवास के चौदह वर्ष समाप्त हुए और भरद्वाज के आश्रमपर राम पहुँच गए।
वैशाख शुक्ल 6 : नन्दिग्राम में राम और भरतका मिलन हुआ।
वैशाख शुक्ल 7 : राम का राज्याभिषेक हुआ।

वाल्मीकि रामायणकी तिलक टीका और कालिका-पुराण के अनुसार

चैत्र शुक्ल 10 : वनवास का पहला दिन।
भाद्रपद शुक्ल 1 : लंका में युद्ध आरम्भ हुआ।
आश्विन शुक्ल 1 : राम-रावण का युद्ध हुआ।
आश्विन शुक्ल 9 : रावण का वध हुआ।
कार्तिक कृष्ण 6 : राम अयोध्या में आए।

तिथियोंके स्रोत

निम्नांकित ग्रन्थों में राम कथा की प्रमुख घटनाओं की तिथियाँ प्राप्त होती हैं-

- अग्निवेश रामायण श्लोक 105
- अब्द रामायण : कल्याण का रामायणांक पृष्ठ 304
- लोमश रामायण पद्मपुराण के पाताल खंड में
- व्यास की रामायणतात्पर्य-दीपिका
- श्रीनिवास का रामायण-संग्रह
- रामावतार-काल-निर्णय-सूचिका

रामचरितमानसके आधार पर

मानस-राजहंस पंडित विजयानन्द त्रिपाठीने रामचरितमानस के आधारपर राम-कथाकी अग्रांकित तिथि-तालिका दी है जो अखिल भारतीय विक्रम-परिषद्-द्वारा प्रकाशित 'तुलसी ग्रन्थावली' के तृतीय खंडके पृष्ठ 266 से 268 तक प्रकाशित है-

मानसके आधारपर तिथि-तालिका

बालकाण्ड

1. मानसकी रचना (शिवजी द्वारा)–	इस कल्पसे 27 कल्प पहले
2. रावण-जन्म –	वैवस्वत मन्वन्तर की उन्नीसवीं चतुर्युगी के त्रेता में
3. रामजन्म -	चौबीसवीं चतुर्युगी के त्रेता में, चैत्र शुक्ला नवमी को।

4. विश्वामित्रजी का अयोध्या-आगमन-	राम-जन्म के चौदह वर्ष बाद।
5. यज्ञ-रक्षा के लिये राम का प्रस्थान -	आश्विन कृष्ण द्वादशी
6. गंगा-संगम निवास	आश्विन कृष्ण त्रयोदशी
7. ताड़का वध–	आश्विन कृष्ण चतुर्दशी
8. सिद्धाश्रम पधारे–	आश्विन कृष्ण आमावस्या
9. यागारम्भ–	आश्विन शुक्ल प्रतिपदा
10. सुबाहु-मारीच पराजय–	आश्विन कृष्ण षष्ठी
11. जनकपुर के लिये प्रस्थान–	आश्विन कृष्ण
12. जनकपुर पधारे–	आश्विन कृष्ण त्रयोदशी
13. फुलवारी में राम और सीता का परस्पर दर्शन–	आश्विन कृष्ण चतुर्दशी
14. धनुर्भङ्ग–	आश्विन शुक्ल पूर्णिमा
15. जनकके दूत अयोध्या पहुँचे–	कार्तिक कृष्ण पंचमी
16. जनकपुर बारात पहुँची–	कार्तिक कृष्ण धनतेरस (धन्वन्तरि त्रयोदशी)
17. श्रीराम-जानकी विवाह–	मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी
18. बारात की बिदाई–	पौष शुक्ल नवमी

अयोध्याकाण्ड

1. श्रीराम-सीता का अवध-निवास–	बारह वर्ष
2. राम का सत्ताइसवाँ जन्मोत्सव–	चैत्र शुक्ल नवमी
3. वनवास–	चैत्र शुक्ल नवमी
4. शृङ्गवेरपुर-निवास–	चैत्र शुक्ल दशमी
5. गङ्गा पार करके मार्ग में पेड़-तले वास–	चैत्र शुक्ल द्वादशी
6. भरद्वाज के आश्रम में निवास–	चैत्र शुक्ल त्रयोदशी
7. यमुना पार करके मार्ग में निवास–	चैत्र शुक्ल चतुर्दशी
8. वाल्मीकि-मिलन, चित्रकूट-निवास–	चैत्र शुक्ल पूर्णिमा
9. दशरथ का देहावसान-	चैत्र शुक्ल पूर्णिमा
10. दशरथ का शव तेल-भरी– नावमें–	वैशाख कृष्ण प्रतिपद्
11. केकय देश दूत भेजे गए-	वैशाख कृष्ण द्वितीया
12. भरत अयोध्या पहुँचे–	वैशाख शुक्ल प्रतिपदा
13. दशरथ की और्ध्वदेहिक क्रिया–	वैशाख शुक्ल द्वितीया
14. भरत के अभिषेक के लिये सभा–	वैशाख शुक्ल पूर्णिमा
15. भरत का चित्रकूट के लिये प्रस्थान –	ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपद्
16. गोमती-तीर निवास–	ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया
17. स्यन्दिका-तीर निवास–	ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया

18. शृङ्गवेरपुर पहुँचे–	ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी
19. भरद्वाजाश्रम निवास–	ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी
20. मार्ग में निवास–	ज्येष्ठ कृष्ण सप्तमी
21. यमुनातीर-निवास–	ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी
22. मार्ग में निवास–	ज्येष्ठ कृष्ण नवमी
23. चित्रकूट– दर्शन –	ज्येष्ठ कृष्ण दशमी
24. राम से भेंट–	ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी
25. राम की शुद्धि–	ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी
26. भरत-सभा (पहली)–	ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया
27. जनक चित्रकूट आए–	ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया
28. भरत-सभा (दूसरी)–	ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी
29. भरत की बिदाई–	ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी
30. भरत अयोध्या पहुचे–	आषाढ़ कृष्ण प्रतिपद्
31. जनक का तिरहुत प्रस्थान–	आषाढ़ कृष्ण पंचमी
32. राम का चित्रकूट निवास–	एक वर्ष

अरण्यकाण्ड

1. जयन्त-नेत्र-भङ्ग–	चैत्र कृष्ण प्रतिपद्
2. मंत्रि मुनि से बिदाई तथा विराधवध–	चैत्र शुक्ल एकादशी
3. शरभङ्ग मुनि से भेंट–	चैत्र कृष्ण द्वादशी
4. आश्रम-मण्डली में निवास–	दस वर्ष तक
5. सुतीक्ष्ण तथा अगस्त्य मुनि से मिलकर पंचवटी निवास–	हेमन्त ऋतु तक
6. शूर्पणखा-विरूपीकरण–	माघ शुक्ल त्रयोदशी
7. खर-दूषण-वध (तीन दिन युद्ध करके)–	फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी
8. सीताहरण (वनवास के तेरहवें वर्ष में)–	फाल्गुन कृष्ण अष्टमी

किष्किन्धाकाण्ड

1. बाली-वध, सुग्रीव को तिलक –	ज्येष्ठ के अन्त में
2. प्रवर्षण गिरि-निवास–	पूरा चतुर्मास
3. हनुमान् द्वारा सुग्रीव-प्रबोध–	आश्विन शुक्ल एकादशी
4. सुग्रीव का राम के पास जाना तथा सीतान्वेषण के लिये दूत भेजना–	कार्तिक कृष्ण एकादशी

सुन्दरकाण्ड

1. हनुमान्-द्वारा समुद्रोल्लंघन–	मार्गशीर्ष कृष्ण एकादशी

2. सीता-दर्शन–	मार्गशीर्ष कृष्ण द्वादशी
3. लङ्कादाह–	मार्गशीर्ष कृष्ण त्रयोदशी
4. राम को समाचार देना–	मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी
5. विजय यात्रा–	मार्गशीर्ष शुक्ल अष्टमी
6. समुद्र-तटपर सेना-निवास–	मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा
7. विभीषण-शरणागति–	पौष कृष्ण चतुर्दशी
8. राम द्वारा समुद्र से विनय–	पौष कृष्ण षष्ठी
9. समुद्रका शरण में आना–	पौष कृष्ण नवमी

लंकाकाण्ड

1. सेतु-बन्ध (चार दिनोंतक होता रहा)–	पौष कृष्ण त्रयोदशी
2. रामका लंका-प्रयाण–	पौष शुक्ल द्वादशी
3. सुबेल पर्वत पर उतरना–	पौष शुक्ल पूर्णिमा
4. अङ्गद दूत बनाकर लंका भेजे गए–	माघ कृष्ण प्रतिपद्
5. युद्धारम्भ–	माघ कृष्ण द्वितीया
6. चारों फाटकों की लड़ाई –	श्रावण कृष्ण अमावस्या
7. लक्ष्मण को शक्ति लगी–	श्रावण शुक्ल प्रतिपद्
8. कुम्भकर्ण-वध (सात दिन युद्ध करके)–	श्रावण शुक्ल पूर्णिमा
9. मेघनाद-वध–	भाद्रपद कृष्ण द्वादशी
10. रावण युद्ध के लिये निकला-	भाद्रपद कृष्ण अमावस्या
11. दूसरी बार युद्ध के लिये निकला–	आश्विन शुक्ल प्रतिपद्
12. रावण वध–	आश्विन शुक्ल नवमी
13. विजयोत्सव–	आश्विन शुक्ल दशमी
14. विभीषण का राज्याभिषेक–	आश्विन शुक्ल त्रयोदशी
15. सीता-मिलन–	आश्विन शुक्ल चतुर्दशी
16. अयोध्या को प्रस्थान–	कार्तिक कृष्ण द्वितीया

उत्तरकाण्ड

1. भरद्वाज के आश्रम में राम पहुँचे -	कार्तिक कृष्ण पंचमी
2. हनुमान्-द्वारा भरत को समाचार–	कार्तिक कृष्ण षष्ठी
3. भरत मिलाप–	कार्तिक कृष्ण सप्तमी
4. राम का राज्याभिषेक–	कार्तिक कृष्ण अष्टमी

।।समाप्त।।

19वीं शती में जब स्त्रियों की शिक्षा पर विशेष जोर दिया जा रहा था तब हिन्दी भाषा के माध्यम से अनेक रोचक ग्रन्थों की रचना हुई, जिनमें कहानियों के माध्यम से महत्त्वपूर्ण बातें बतलायी गयी। ऐसे ग्रन्थों में से एक 'रीतिरत्नाकर' का प्रकाशन 1872ई. में हुआ। उपन्यास की शैली में लिखी इस पुस्तक के रचयिता रामप्रसाद तिवारी हैं।

इस पुस्तक में एक प्रसंग आया है कि किसी अंगरेज अधिकारी की पत्नी अपने बंगला पर आसपास की पढ़ी लिखी स्त्रियों को बुलाकर उनसे बातचीत कर अपना मन बहला रही है। साथ ही भारतीय संस्कृति के विषय में उनसे जानकारी ले रही है। इसी वार्ता मंडली में वर्ष भर के त्योंहारों का प्रसंग आता है। पण्डित शुक्लाजी की पत्नी शुक्लानीजी व्रतों और त्योहरों का परिचय देने के लिए अपनी दो चेलिन रंगीला और छबीला को आदेश देतीं हैं।

यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि यह ग्रन्थ अवध प्रान्त के सांस्कृतिक परिवेश में लिखा गया है। इसमें अनेक जगहों पर बंगाल प्रेसिडेंसी को अलग माना गया है।

सन् 1872 ई. के प्रकाशित इस ग्रन्थ की हिन्दी भाषा में बहुत अन्तर तो नहीं है किन्तु विराम, अल्प विराम आदि चिह्नों का प्रयोग नहीं हुआ है जिसके कारण अनेक स्थलों पर आधुनिक हिन्दी के पाठकों को पढ़ने में असुविधा होगी। इसलिए यहाँ भाषा एवं वर्तनी को हू-ब-हू रखते हुए विराम-चिह्नों का प्रयोग कर यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। पाठकों की सुविधा के लिए कुछ स्थलों पर अनुच्छेद परिवर्तन भी किए गये हैं। जिन शोधार्थियों को भाषा-शैली पर विमर्श करना हो, उन्हें मूल प्रकाशित पुस्तक देखना चाहिए, जो Rītiratnākara के नाम से ऑनलाइन उपलब्ध है।

अवध क्षेत्र में

19वीं शती की विवाह-विधि

जयंती का विवाह

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि 19वीं शती में विवाह होने के दिन किस प्रकार बारात आने की धूम होती थी। कन्यादान तथा सात फेरों का कैसा प्रचलन उन दिनों था, तथा विवाह के दिन वधू की पैर-पुजाई होती थी। यह कहीं न कहीं से नारी की आध्यात्मिक श्रेष्ठता को दिखाता है। कन्यादान से पैर-पुजाई तक की विधि इस अंक में पढ़ें।

और पंडितों ने संकल्प पढ़ा उसका संक्षेप अर्थ यह है कि इस वर्त मान वर्ष की आज फागुन बदि सप्तमी बृहस्पति की रात को ज्योतिष्ठोमादि यज्ञ का सौ गुना फल पाने और अन्त में स्वर्गवास के निमित्त मैं अलंकार सहित यह कन्या तुम को इसलिये देता हूँ कि यह तुम्हारी पत्नी हो।

इतना पढ़ चुके तो कन्या का हाथ कुश जल समेत वर के हाथ पर छोड़ दिया और अपना हाथ खींच लिया और कहा कि **कृष्णार्पणम्।** फिर कन्यादान के सांगता में सोना, चांदी, गाय, भैंस, घोड़ा, वरन आदि का संकल्प किया और हमने कन्या-वर का पाँव धोके माँथे चढ़ाया। वर के माँथे में और

दृढ़ नहीं रहतीं। उस समय नियम करती हैं कि हम सिवाय पति के दूसरा व्रत न जानेंगे। सो देखने में आता है कि माता-पिता के घर जाने की कौन कहे, वह तो मन माने की धंधा है। जब कहीं जाने की इच्छा होती है, चादर ओढ़कर चल देती हैं। पति नहीं पति का सात पुरुषा मना करे तो कौन मानता है और जिसका पति प्रबल हुआ, उसने किसी उपाय से रोक रक्खा, तो वह अन्न जल छोड़कर धन्ना करने और प्राण देने पर सन्नद्ध हो जाती हैं और व्रत रहने और तीर्थ नहाने, मेला ठेला करने में तो पति को तृण के समान भी नहीं गिनतीं। घर की टहल करने में तो आलस करती और मुँह छिपाती हैं और गली-गली बाबाजी-बाबाजी करके पाखंडियों की सुश्रूषा करती फिरती हैं। इन सब अनरीतों के होने का कारण मूर्खता है। जो थोड़ा भी पढ़ी लिखी हों तो अपने वचन प्रमान की सुध रखकर पति का अपमान न करें।

इसके उपरांत सेंदूर दान की रीति-भांति होने लगी जिसको सुमंगली कहते हैं। कन्या वर की बाई और बैठ गई और गठबंधन हुआ तब दूलह के जेठ भाई ने थोड़ा-सा सेंदूर देवतों के लिये निकाल लिया। जब हमारे पुरोहित को 1) सेंदूर का दक्षिणा मिली, तब उसने सिन्धोरा दूलह के हाथ में रख दिया। नाइन ने कपड़े से लड़की की आँख मूँद के सात चुटकी सेंदूर दूलह के हाथ से कन्या के सिर पर चढ़वा दिया। उस समय ने यह गीत गाई।।

लेखकों से निवेदन

'धर्मायण' का अग्रिम अंक वृक्ष-उपासना विशेषांक के रूप में प्रस्तावित है। वर्तमान में शुद्ध वायु के सन्दर्भ में वृक्ष की उपयोगिता विज्ञान की दृष्टि से सर्वविदित है, किन्तु प्रश्न यह उठता है कि हमारे पूर्वज ने इसे अध्यात्म से क्यों जोड़ा? क्या यह अध्यात्म उसके प्रति दृढ़ता उत्पन्न करने के लिए एक उपाय मात्र था? पीपल, वट, गूलर, बिल्व, आम, तुलसी, पलाश, देवदारु आदि वृक्षों में देवतत्त्व का अवलोकन किया गया है। विभिन्न वृक्षों पर विभिन्न देवों का वास कहा गया है। नागपंचमी की पूजा के सन्दर्भ में हमें मनसा देवी स्नुही के वृक्ष पर मिलती है — स्नुहीविटपसंस्थिताम्। पीपल के वृक्ष पर यक्ष के वास की अनेक कथाएँ हैं? क्या वे इसलिए कि हम उन्हें काटने का साहस न कर सकें। वृक्ष उपासना के विभिन्न रूपों पर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कार्य आवश्यक प्रतीत होता है। हमें शुद्ध वायु चाहिए तो वृक्ष को बचाना होगा। भारतीय परम्परा में कल्पवृक्ष की भी अवधारणा है। कहा जाता है कि कल्पवृक्ष सबकुछ प्रदान करने में समर्थ है। इसकी पहचान पर भी कार्य होना चाहिए।

हमारा भारत विशाल है। इसके विभिन्न भौगोलिक भू-भाग में विभिन्न वृक्षों में देवत्व की अवधारणा है। समुद्र के तटवर्ती क्षेत्र में श्रीताल के वृक्ष में सरस्वती का निवास माना गया है, क्योंकि श्रीताल के पत्र पर पुस्तकें लिखी जाती थी! मैदानी भाग में देवदारु नहीं होता है, किन्तु हिमालय क्षेत्र में इसे देव-वृक्ष माना गया है।

लेखकों से निवेदन है कि सन्दर्भ के साथ वृक्ष-उपासना का वैदिक स्वरूप, पौराणिक रूप, लोकगाथाओं में वृक्ष -उपासना, वृक्ष-उपासना और लोकपर्व आदि विषयों पर आलेख प्रेषित करने की कृपा करेंगे।

***

कन्या के हथेली में हलदी लगाई। इसके पीछे फिर बहुत लोगों ने पाँव पूजा। किसी ने माला, किसी ने अंगूठी, किसी ने गाय, किसी ने रुपया, पैपुजी में दिया। सब मिला के सवा दो सौ रुपये पापुजी में पड़े। जो कोई पाँव पूजने लगता था तो उसके नाम से स्त्रियां यह गीत ग़ावती रहीं।

गीत

गंगा कर पानी कलश भर आनी गीत दियो कौन राम दान जगत में जानी

इसके ऊपर होम करने के लिये कुछ बस्त्र द्रव्य के साथ आचार्य और ब्रह्मा का वरण हुआ। तब उन दोनों ने सब होम की सामग्री एकत्र करके जहाँ जैसा चाहिये कुश रक्खा और मन्त्र पढ़ पढ़ के होम करने लगे। जब बहुत-सी आहुति हो चुकीं तो कन्या का भाई लावा परछने के लिये आया। उसे समधी ने अंगरखा टोपी पहिनाया और कंधे पर बनारसी डुपट्टे की कंधाबर रक्खी। तब दूलह के हाथ पर दुलहिन का हाथ रखवा कर तिस पर बांस की डाल-डलई घर के उस पर कन्या के भाई ने लावा भर दिया। फिर उन दोनों ने उस लावे को उस होम की आग में कि, जिसकी प्रदक्षिणा कर रहे थे, छोड़ दिया और पंडितों ने मन्त्र पढ़ा।

इसी प्रकार हर भौरी घूमने पर लावा परछा गया। जब चार भौरी तक लावा परछि चुके तो नाइन ने कन्या का एक पाँव लोढ़े पर रख दिया और दूलह ने दाहिने हाथ से दुलहिन के पाँव का अंगूठा छू लिया। फिर तीन भौंरी और घूम आये और लावा छोड़ते गये। जब सातों भरी हो चुकीं, तो आग में सब लावा छोड़ दिया गया और भारी होने के समय यह गीत गाई गई।

गीत

बेटी का वचन

पहिली भरिआ जा फिरों तब हूँ बाबा तुम्हारि।
दूसरी भरिआ जो फिरों तब हूँ बाबा तुम्हारि।
तीसरी भरिआ जो फिरों तब हूँ बाबा तुम्हारि।
चौथी भरिआ जो फिरों तब हूँ बाबा तुम्हारि।
पांचवीं भौरिआ जो फिरों तब हूँ बाबा तुम्हारि।
छठी भरिआ जो फिरों तब हूँ बाबा तुम्हारि।
सातवीं भरिआ अब फिरों बाबा भइउं परारि।
लावा परछो श्यामकिशोर बहनी तुम्हारि।
अंगूठा छूआ श्रीमंतराम धनिया तुम्हारि।

जब सातों भरी पूरी हो गईं तो पंडित ने लावे की सात कूरी बनाई। इसी को गाँवबसना कहते हैं। साढ़े तीन कूरी वर पक्ष में साढ़े तीन कन्या पक्ष में और सब कूरियों में एक-एक टका पैसा रखवा दिया।

फिर कन्या की ओर से पंडित बोला कि इस यज्ञ में कन्या एक परमेश्वर को साक्षी देकर कहती है कि मैं माता पिता का पक्ष छोड़ वर पक्ष में जाती हूँ। वर मुझसे छल न करे। फिर दो साक्षी सूर्य चंद्रमा और तीन ब्रह्मा विष्णु महेश और चारों बेद, पाँचों पशु, छहों ऋतु और सातों सखी का इस यज्ञ में साखी देती हूँ कि मैं वर पक्ष में जाती हूँ। वर मुझ से छल न करे।

इसके पीछे वर के पंडित ने कहा कि वर को यह बातें अंगीकार हैं। वर कन्या से छल न करेगा, परन्तु वर कहता है कि कन्या हमारा यह वचन माने कि हमारे सिवाय दूसरा व्रत न जाने और हमारे चित्त के पीछे अपना चित्त रक्खे। किसी फुलवारी वा मद्यपान अर्थात् होली वा राजद्वार वा पिता के घर में हमारी आज्ञा बिना न जाय। जब यह वचन हो चुके तो लड़की का पाँव लोढ़े पर रक्खा गया। दूलह ने दाहिने हाथ से खींचकर सातों कूरियों को मिटाता हुआ सिल में लगा दिया।

शिक्षा

यह बात शोचने के योग्य है कि इस प्रकार वचन प्रमान के साथ शपथ होता है, पर उसपर कोई ध्यान नहीं करता। पुरुष बहुत थोड़े ऐसे होंगे जो अपनी स्त्री से छल करते हों परन्तु स्त्रियाँ बहुधा ऐसी हैं जो अपने वचन पर

महावीर मन्दिर समाचार

मन्दिर समाचार

(मार्च, 2023ई.)

कलश स्थापन के साथ महावीर मन्दिर में रामचरितमानस का नवाह पाठ प्रारम्भ— दि. 22 मार्च, 2023ई.

महावीर मन्दिर में रामनवमी महोत्सव की शुरुआत बुधवार को कलश स्थापन से हुई। सुबह मन्दिर के वयोवृद्ध पुरोहित पंडित जटेश झा ने जनकपुर की परम्परा की 11 सदस्यीय वाचन-मंडली को विधिपूर्वक रामचरितमानस के नवाह पाठ का संकल्प कराया। इस अवसर पर महावीर मन्दिर के नैवेद्यम प्रभारी रामचंद्र शेषाद्री यजमान की भूमिका में थे। महावीर मन्दिर की पत्रिका धर्मायण के संपादक पंडित भवनाथ झा और महावीर मन्दिर के अधीक्षक सुन्दर राजन की देखरेख में अनुष्ठान संपन्न हुआ। महावीर मन्दिर न्यास के सचिव आचार्य किशोर कुणाल ने हिन्दू नववर्ष विक्रम संवत 2080 के प्रारंभ पर भक्तों को शुभकामनाएँ दी। उन्होंने बताया कि कलश स्थापन के साथ ही महावीर मन्दिर में रामनवमी महोत्सव की शुरुआत हो गयी। 30 मार्च को रामनवमी के दिन हवन के साथ अनुष्ठान पूरा होगा। इस दौरान महावीर मन्दिर में प्रतिदिन रामचरितमानस का नवाह पाठ प्रातः 8:00 बजे से 2:00 बजे तक होगा। स्थानीय श्रद्धालु भी इसमें सम्मिलित हो सकते हैं। रामनवमी के एक दिन पूर्व से भक्तों की उमड़नेवाली अनुशासित भीड़ को मन्दिर में सुविधापूर्वक दर्शन कराने के लिए तमाम इंतजाम किए जा रहे हैं। पुलिस-प्रशासन और विभिन्न विभागों के साथ समन्वय कर तैयारियां की जा रही हैं।

रामनवमी का पर्व हर्षोल्लास के साथ, दिनांक 30 मार्च, 2023ई.

चैत्र शुक्ल नवमी गुरुवार तड़के 2 बजे महावीर मन्दिर का पट खुला तो जैसे आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा। बच्चे-वृद्ध-युवा से दिव्यांग तक सभी रामलला के प्राकट्य उत्सव में स्वयं को शरीक करना चाह रहा था। देखते-देखते भक्तों की कतार आर ब्लॉक चौराहे से मुड़कर आयकर चौराहे के करीब जा पहुँची। तड़के जागरण आरती के बाद सवा दो बजे से हाथों में फूल-माला और प्रसाद लिए भक्त हनुमानजी की युग्म प्रतिमाओं और राम दरबार वाले गर्भगृह के सामने तेज रफ्तार से पहुँचने लगे। अलग-अलग पंक्तियों में महिलाओं और पुरुषों की टोलियाँ महावीर मन्दिर पहुँच जय श्रीराम का जयघोष कर रही थीं। जबकि मन्दिर की ऊपरी मंजिल पर रामचरितमानस का सस्वर संगीतमय नवाह पाठ वातावरण को सियाराममय कर रहा था। सुबह 10 बजे महावीर मन्दिर के मुख्य ध्वज स्थल पर महावीर मन्दिर न्यास के सचिव आचार्य किशोर कुणाल ने ध्वज पूजा की। महावीर मन्दिर की पत्रिका धर्मायण के संपादक पंडित भवनाथ झा ने विधिपूर्वक वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पूजन संपन्न कराया। उसके बाद महावीर मन्दिर में तीनों ध्वज स्थलों पर पुराने ध्वज उतारे गये और नये ध्वज से ध्वजारोहण किया गया। फिर ध्वज पूजा की आरती हुई। मध्याह्न 12 बजे महावीर मन्दिर परिसर में रामलला के चित्रपट का आचार्य किशोर कुणाल के हाथों अनावरण हुआ। इसके जरिए श्रीराम प्राकट्य की झाँकी प्रस्तुत की गई। तीन ड्रोन से गेन्दे और गुलाब के

फूलों की पुष्पवर्षा के बीच भक्तों ने भए प्रकट कृपाला दीनदयाला ...की स्तुति की। गर्भगृह के सम्मुख आरती के साथ ही पूजन कार्यक्रम संपन्न हुआ।

161 भक्तों के लिए ध्वजारोहण संकल्प

मध्याह्न आरती के बाद पंडित भवनाथ झा के निर्देशन में 6 पुरोहितों ने 161 भक्तों के लिए ध्वजारोहण संकल्प लिया। इन भक्तों ने रामनवमी के दिन महावीर मन्दिर में ध्वजारोहण के लिए निर्धारित शुल्क की रसीद कटाई थी। सभी भक्तों के लिए अलग-अलग संकल्प लिया गया।

20 हजार किलो से अधिक नैवेद्यम की बिक्री

रामनवमी के अवसर पर महावीर मन्दिर के सुप्रसिद्ध नैवेद्यम की बिक्री देर रात तक 20 हजार किलो से ज्यादा अनुमानित की गई है। जबकि मन्दिर पहुँचने वाले भक्तों की संख्या 4 लाख से अधिक आंकी गई है। इस बार बगैर प्रसाद के महावीर मन्दिर आनेवाले भक्तों के लिए पूर्वी प्रवेश द्वार सुबह सवा 8 बजे से दिनभर खुला रखा गया। शाम को हवन के साथ ही नौ दिवसीय नवाह पाठ का समापन हो गया। शाम में रामनवमी शोभा यात्रा समितियों के प्रतिनिधियों के महावीर मन्दिर आने का क्रम देर रात तक चलता रहा।

महावीर मन्दिर का बजट— 2023-24 के लिए पारित

वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए महावीर मन्दिर न्यास का 331 करोड़ का बजट पारित हुआ है। न्यास के सचिव आचार्य किशोर कुणाल ने बताया कि चालू वित्तीय वर्ष में महावीर मन्दिर की आय 31 करोड़ रुपये आंकी गई है। अनुमानित खर्च मात्र 3 करोड़ है। इस प्रकार 28 करोड़ रुपये की बचत होगी। महावीर कैंसर संस्थान की आय 149.76 करोड़ और व्यय 151.16 करोड़ रुपये, महावीर आरोग्य संस्थान और महावीर नेत्रालय को मिलाकर आय 24 करोड़ और व्यय 22.98 करोड़ रुपये एवं महावीर वात्सल्य अस्पताल की आय 33.15 करोड़ और व्यय 33.33 करोड़ रुपये अनुमानित है। महावीर अस्पतालों के घाटे की भरपाई महावीर मन्दिर न्यास करेगा।

विराट रामायण मन्दिर के लिए सर्वाधिक धनराशि

इस वित्तीय वर्ष के बजट में सबसे ज्यादा 80 करोड़ का प्रावधान पूर्वी चंपारण के केसरिया के निकट कैथवलिया में निर्माणाधीन विराट रामायण मन्दिर के लिए किया गया है। सीतामढ़ी के पुनौराधाम में जानकी जन्मस्थान मन्दिर निर्माण के लिए इस वित्तीय वर्ष में 10 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान किया गया है। कोईलवर के निकट सकरडी में पटना-आरा राष्ट्रीय राजमार्ग पर मन्दिर निर्माण पर 1 करोड़ रुपये खर्च किये जाएँगे।

3 नये अस्पतालों के लिए बजट में प्रावधान

महावीर मन्दिर के तीन नये अस्पतालों के लिए बजट प्रावधान कर दिए गये हैं। पटना के राजीव नगर में वरिष्ठ नागरिकों के विशिष्ट अस्पताल के लिए एक करोड़ रूपये को राशि निर्धारित की गयी है। इस अस्पताल में 60 वर्ष से अधिक आयु के सभी वरिष्ठ नागरिकों का इलाज सीजीएचएस दर पर होगा। अयोध्या में शुरू हो रहे राघव आरोग्य मन्दिर(राम) अस्पताल के लिए भी एक करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इस अस्पताल में वैरागी साधु-सन्यासियों का निःशुल्क इलाज होगा। जबकि गरीब मरीजों को भी रियायती दरों पर इलाज की सुविधा मिलेगी। पटना के फुलवारीशरीफ में बच्चों के निर्माणाधीन कैंसर अस्पताल के लिए 8.80 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान

रखा गया है। यह बच्चों के लिए देश का पहला विशिष्ट कैंसर अस्पताल होगा। महावीर मन्दिर द्वारा संचालित महावीर कैंसर संस्थान, महावीर आरोग्य संस्थान, महावीर वात्सल्य अस्पताल, महावीर नेत्रालय, विशालनाथ अस्पताल आदि में गरीब मरीजों के इलाज के बिल में छूट पर 3 करोड़ रुपये खर्च होंगे। महावीर कैंसर संस्थान में 18 साल तक के कैंसर पीड़ितों के निःशुल्क इलाज पर 1 करोड़ रुपये और अन्य कैंसर मरीजों को एक यूनिट ब्लड निःशुल्क मुहैया कराने पर 50 लाख रुपये खर्च किये जाएँगे। महावीर मन्दिर न्यास अपने अस्पतालों के विकास के लिए 2.80 करोड़ रुपये अनुदान देगा।

रामायण शोध संस्थान, संस्कृत विद्यालय और कन्या विद्यालय खुलेंगे

वर्तमान वित्तीय वर्ष में वैशाली जिला के इस्माइलपुर में पूर्व से प्रस्तावित रामायण विश्वविद्यालय की स्थापना पर 1 करोड़ रुपये खर्च किये जाएँगे। इसके अतिरिक्त महावीर मन्दिर तीन महत्वपूर्ण शोध एवं शिक्षण संस्थान खोलेगा। वाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस और आध्यात्म रामायण पर गहन शोध के लिए रामायण शोध संस्थान की स्थापना की जा रही है। इसके लिए 60 लाख रुपये का बजट प्रावधान रखा गया है। इस वित्तीय वर्ष के अन्तर्गत पटना में एक संस्कृत विद्यालय और वैशाली के इस्माइलपुर में कन्या विद्यालय खोले जाएँगे। इन विद्यालयों के साथ महावीर मन्दिर में संचालित रामावत संगत के लिए बजट में पर्याप्त राशि का प्रावधान किया गया है।

पटना,अयोध्या और सीतामढ़ी में अन्नक्षेत्र के लिए 3.5 करोड़ रुपये

पटना, अयोध्या और सीतामढ़ी में अन्नक्षेत्रों के लिए कुल 3.5 करोड़ रुपए का बजट प्रावधान चालू वित्तीय वर्ष में किया गया है। इनमें महावीर मन्दिर में संचालित दरिद्र नारायण भोज, अयोध्या में रामलला के दर्शनार्थियों के लिए संचालित राम रसोई और माता जानकी जन्मस्थान पुनौराधाम में श्रद्धालुओं के लिए चल रही सीता रसोई शामिल हैं। महावीर मन्दिर के सभी अस्पतालों में भर्ती मरीजों को निःशुल्क भोजन के लिए चालू वित्तीय वर्ष में 1.20 करोड़ रुपये खर्च होंगे। गरीबों को अन्य प्रकार की सहायता मद में 50 लाख, दलित उत्थान एवं सहायता के लिए 20 लाख रुपये का बजट प्रावधान किया गया है।

धार्मिक न्यास बोर्ड को सर्वाधिक शुल्क राशि

महावीर मन्दिर बिहार राज्य धार्मिक न्यास बोर्ड को 1.20 करोड़ रुपये शुल्क जमा करेगा। यह रकम बिहार के सभी मठ-मन्दिरों को मिलाकर धार्मिक न्यास बोर्ड को दिये जानेवाले शुल्क राशि से ज्यादा है।

महावीर मन्दिर के मीडिया प्रभारी श्री विवेक विकास की कलम से

व्रत-पर्व

वैशाख, 2079-2080 वि. सं. (7 अप्रैल-5 मई 2023ई.)

पं. मुक्ति कुमार झा
ज्यौतिष परामर्शदाता, महावीर ज्योतिष मण्डप, महावीर मन्दिर, पटना

1. वरूथिनी एकादशी व्रत, वैशाख कृष्ण एकादशी, 16 अप्रैल, 2023ई. (गृहस्थों के लिए)

पिछली सन्ध्या 7.16 बजे से एकादशी का आरम्भ हो रहा है, अतः इसी दिन वैष्णवों और गृहस्थों के लिए व्रत होगा तथा अगले दिन कुश के जल से पारणा होगी।

2. वल्लभाचार्य जयन्ती, वैशाख कृष्ण एकादशी, 16 अप्रैल, 2023ई.

वैशाख कृष्ण एकादशी। भक्तिकालीन सगुणधारा की कृष्णभक्ति शाखा के स्तंभ एवं पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक वल्लभाचार्य का जन्म विक्रम संवत् 1535 अर्थात् 1479 ई. में हुआ था। मध्यकालीन हिन्दी के कवियों में सूरदास, कृष्णदास, परमानन्ददास आदि इन्ही की परम्परा में हुए।

3. अक्षय तृतीया, परशुराम जयन्ती, वैशाख शुक्ल तृतीया, 23 अप्रैल, 2023 ई.

मान्यता के अनुसार इसी दिन त्रेता युग का आरम्भ हुआ था। इस दिन किये गये दान को अक्षय फल वाला माना जाता है।

4. गणेश चतुर्थी, 23 अप्रैल, 2022 ई.

5. आदिशंकराचार्य जयन्ती, वैशाख शुक्ल पंचमी, 25 अप्रैल, 2023ई.

मठाम्नाय की तिथिगणना के अनुसार, आदि शंकराचार्य की 2530वीं जयन्ती है।

6. रामानुजाचार्य जयन्ती, वैशाख शुक्ल पंचमी, 25 अप्रैल, 2023ई.

वैशाख शुक्ल पंचमी। इस वर्ष रामानुजाचार्य की 1005वीं जयन्ती होगी।

7. जह्नुसप्तमी, जाह्नवी सप्तमी, वैशाख शुक्ल सप्तमी, 27 अप्रैल, 2023ई.

8. रविव्रत विसर्जन, 30 अप्रैल, 2023ई.

छह मास के लिए जो रविव्रत करते हैं, उसकी समाप्ति इस दिन होगी। साथ ही सप्ताडोरा का भी विसर्जन होगा।

9. जानकी नवमी, वैशाख शुक्ल नवमी, दिनांक 29 अप्रैल, 2023ई.

10. मोहिनी एकादशी, वैशाख शुक्ल एकादशी, दिनांक 1 मई, 2023ई. (सबके लिए)

11. नरसिंह चतुर्दशी, वैशाख शुक्ल चतुर्दशी, 4 मई, 2023ई.

इस दिन भगवान् विष्णु के दशावतारों में नरसिंहावतार हुआ था।

12. बुद्ध-जयन्ती एवं कूर्म-जयन्ती, वैशाख पूर्णिमा, 5 मई, 2023ई.

इसी दिन बुद्ध की 2645 जयन्ती तथा कूर्म-जयन्ती मनायी जाती है।

***

रामावत संगत से जुड़ें

1) रामानन्दाचार्यजी द्वारा स्थापित सम्प्रदाय का नाम रामावत सम्प्रदाय था। रामानन्द-सम्प्रदाय में साधु और गृहस्थ दोनों होते हैं। किन्तु यह रामावत संगत गृहस्थों के लिए है। रामानन्दाचार्यजी का उद्घोष वाक्य– 'जात-पाँत पूछ नहीं कोय। हरि को भजै सो हरि को होय' इसका मूल सिद्धान्त है।

2) इस रामावत संगत में यद्यपि सभी प्रमुख देवताओं की पूजा होगी, किन्तु ध्येय देव के रूप में सीताजी, रामजी एवं हनुमानजी होंगे। हनुमानजी को रुद्रावतार मानने के कारण शिव, पार्वती और गणेश की भी पूजा श्रद्धापूर्वक की जायेगी। राम विष्णु भगवान् के अवतार हैं, अतः विष्णु भगवान् और उनके सभी अवतारों के प्रति अतिशय श्रद्धाभाव रखते हुए उनकी भी पूजा होगी। श्रीराम सूर्यवंशी हैं, अतः सूर्य की भी पूजा पूरी श्रद्धा के साथ होगी।

3) इस रामावत-संगत में वेद, उपनिषद् से लेकर भागवत एवं अन्य पुराणों का नियमित अनुशीलन होगा, किन्तु गेय ग्रन्थ के रूप में रामायण (वाल्मीकि, अध्यात्म एवं रामचरितमानस) एवं गीता को सर्वोपरि स्थान मिलेगा। 'जय सियाराम जय हनुमान, संकटमोचन कृपानिधान' प्रमुख गेय पद होगा।

4) इस संगत के सदस्यों के लिए मांसाहार, मद्यपान, परस्त्री-गमन एवं परद्रव्य-हरण का निषेध रहेगा। रामावत संगत का हर सदस्य परोपकार को प्रवृत्त होगा एवं परपीड़न से बचेगा। हर दिन कम-से-कम एक नेक कार्य करने का प्रयास हर सदस्य करेगा।

5) भगवान् को तुलसी या वैजयन्ती की माला बहुत प्रिय है अतः भक्तों को इसे धारण करना चाहिए। विकल्प में रुद्राक्ष की माला का भी धारण किया जा सकता है। ऊर्ध्वपुण्ड्र या ललाट पर सिन्दूरी लाल टीका (गोलाकार में) करना चाहिए। पूर्व से धारित तिलक, माला आदि पूर्ववत् रहेंगे। स्त्रियाँ मंगलसूत्र-जैसे मांगलिक हार पहनेंगी, किन्तु स्त्री या पुरुष अनावश्यक आडम्बर या धन का प्रदर्शन नहीं करेंगे।

6) स्त्री या पुरुष एक दूसरे से मिलते समय राम-राम, जय सियाराम, जय सीताराम, हरि -जैसे शब्दों से सम्बोधन करेंगे और हाथ मिलाने की जगह करबद्ध रूप से प्रणाम करेंगें।।

7) रामावत संगत में मन्त्र-दीक्षा की अनूठी परम्परा होगी। जिस भक्त को जिस देवता के मन्त्र से दीक्षित होना है, उस देवता के कुछ मन्त्र लिखकर पात्र में रखे जायेंगे। आरती के पूर्व गीता के निम्नलिखित श्लोक द्वारा भक्त का संकल्प कराने के बाद उस पात्र को हनुमानजीके गर्भगृह में रखा जायेगा।

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।। (गीता, 2.7)

8) आरती के बाद उस भक्त से मन्त्र लिखे पुर्जा में से कोई एक पुर्जा निकालने को कहा जायेगा। भक्त जो पुर्जा निकालेगा, वही उस भक्त का जाप्य-मन्त्र होगा। मन्दिर के पण्डित उस मन्त्र का अर्थ और प्रसंग बतला देंगे, बाद में उसके जप की विधि भी। वही उसकी मन्त्र-दीक्षा होगी। इस विधि में हनुमानजी परम-गुरु होंगे और वह मन्त्र उन्हीं के द्वारा प्रदत्त माना जायेगा। भक्त और भगवान् के बीच कोई अन्य नहीं होगा।

9) रामावत संगत से जुड़ने के लिए कोई शुल्क नहीं है। भक्ति के पथ पर चलते हुए सात्त्विक जीवन-यापन, समदृष्टि और परोपकार करते रहने का संकल्प-पत्र भरना ही दीक्षा-शुल्क है। आपको सिर्फ https://mahavirmandirpatna.org/Ramavat-sangat.html पर जाकर एक फार्म भरना होगा। मन्दिर से सम्पुष्टि मिलते ही आप इसके सदस्य बन जायेंगे।

***

रामनवमी के उपलक्ष्य में नवरात्र प्रतिपदा के दिन से प्रारम्भ नवाह रामचरितमानस पाठ

रामनवमी के उपलक्ष्य में जन्मकाल में प्रकटे प्रभु श्रीराम

पत्रिका-पंजीयन सं. 52257/90

रामनवमी, 2023. महावीर मन्दिर के परिसर तथा आसपास दर्शनार्थी श्रद्धालुओं की भीड़

श्री महावीर स्थान न्यास समिति के लिए वीर बहादुर सिंह, महावीर मन्दिर, पटना- 800001 से ई-पत्रिका के रूप में https://mahavirmandirpatna.org/dharmayan/ पर निःशुल्क वितरित। सम्पादक : भवनाथ झा।